पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023

BLM Academy

Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

Wish You all a Very Happy New Year

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

Vision -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

Mission-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

Pillars -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

Goal-
ब्रह्म तद् लक्ष्यम्

Admission Open
For The Academic Session 2025-26
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Streams: Science, Commerce & Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com

Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (Nainital), Uttarakhand

blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्युच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)

जनवरी 2025

उत्तरांचल दीप पत्रिका

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित

₹:40

निकाय चुनाव कांग्रेस-भाजपा में सीधी टक्कर

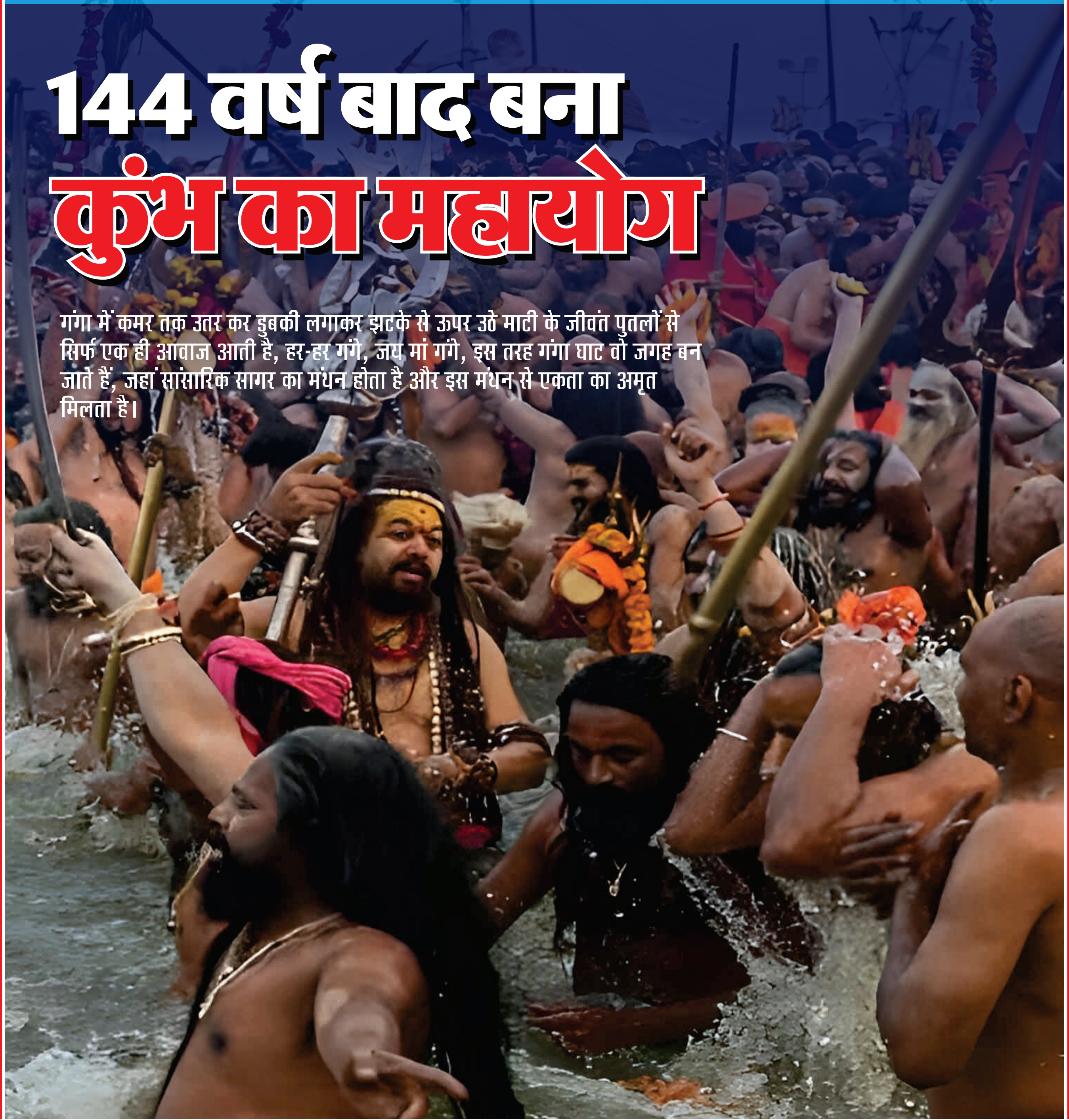

144 वर्ष बाद बना कुंभ का महायोग

गंगा में कमर तक उतर कर डुबकी लगाकर झटके से ऊपर उठे माटी के जीवंत पुतलों से सिर्फ एक ही आवाज आती है, हर-हर गंगे, जय मां गंगे, इस तरह गंगा घाट वो जगह बन जाते हैं, जहां सांसारिक सागर का मंथन होता है और इस मंथन से एकता का अमृत मिलता है।

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com

Web: uttaranchaldeep.com

मासिक
उत्तरांचल दीप
पत्रिका

वर्ष:7, अंक 9, जनवरी 2025

संस्थापक संपादक
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
प्रधान संपादक
साकेत अग्रवाल
संपादक
श्रीमती आदेश अग्रवाल
मुख्य कार्यकारी संपादक
केके चौहान
मुख्य उप संपादक
उदयभान सिंह
मार्केटिंग हेड
तारु तिवारी
प्रबंधक
दीपक तिवारी
वरिष्ठ संवाददाता
रवि दुर्गापाल

उत्तरांचल दीप ब्यूरो
दिल्ली : शालिनी चौहान
लखनऊ : पारस अमरोही
रुद्रप्रयाग : हिमांशु पुरोहित
नैनीताल : अफजल फौजी
अल्मोड़ा : कमल कपूर
पिथौरागढ़ : ललित जोशी
बागेश्वर : नरेंद्र बिष्ट
चंपावत : मनोज राय
बरेली : अनुज सक्सेना
मुरादाबाद : आशेंद्र कुमार अग्रवाल
डोईवाला : चंद्रमोहन कोठियाल
किच्छा : राजकुमार राज
रामनगर : एचसी भट्ट
थत्यूड़ : मुकेश रावत
रुद्रपुर : मुकेश गुप्ता
बाजपुर : इंद्रजीत सिंह
ग्राफिक्स डिजाइन: देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीतील-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep

अंदर

वाजपेयी जी ने अपनी भावनाओं का इजहार पत्र के माध्यम से किया था, इस लेटर को उन्होंने राजकुमारी के लिए लाइब्रेरी की एक किताब में रखा था, राजकुमारी ने जवाब की चिट्ठी भी उसी किताब में रखी थी जिस किताब में अटल जी ने उनके लिए पत्र रखा था, हालांकि मिसेज कौल का जवाब अटल जी तक पहुंच नहीं पाया।

घुसपैठ

20 रुपये में बने भारतीय वोटर

साहिल सहगल वेबसाइट के जरिए महज 20 रुपये में फर्जी आय प्रमाण-पत्र, फर्जी जन्म प्रमाण-पत्र, एड्रेस प्रूफ बनता ...

पर्यटन

कॉर्बेट की यादों से जुड़ा गर्नी हाउस

नवंबर 1947 में मिस मार्गरेट विनीफ्रेड कॉर्बेट ने वसियत के आधार पर गुर्नी हाउस कलावती वर्मा को बेच दिया ...

उत्सव

अभिव्यक्ति का त्यौहार होली

स्व.पंडित तारा प्रसाद पांडे (तारी मास्साब) ने बाल्यकाल में 7 वर्ष की आयु से ही गायन ...

राज्य

उत्तराखंड में 5000 हो गईं वक्फ संपत्तियां

सैकड़ो संपत्तियां ऐसी है जो रेलवे, वन, सिंचाई, राजस्व विभाग की जमीनों पर हैं, लेकिन उनका उल्लेख वक्फ रिकार्ड में दर्ज नहीं हैं ...

साकेत अग्रवाल

डॉ.अंबेडकर से नफरत किसे ?

कांग्रेस ने एक बार फिर 12 सेकेंड के शॉर्ट वीडियो से फेक नैरेटिव बनाने की कोशिश की, इस पर सियासत भी हुई और हंगामा भी हुआ। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़ने ने गृह मंत्री अमित शाह पर बाबासाहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर का अपमान करने पहल की। खड़गे ने अमित शाह से इस्तीफा मांगते हुए देश से माफी मांगने मांग कर दी। खड़गे ने धमकी भरे लहजे में कहा कि यदि अमित शाह अपने बयान के लिए माफी नहीं मांगते हैं तो पूरे देश में आग लग जाएगी। कांग्रेस के बुजुर्ग राजनेता मल्लिकार्जुन खड़गे क्या देश की जनता को आग में झोंकना चाहते हैं? क्योंकि जब भी देश में आग लगी या लगाई गई उसमें आम जनता ही झुलसी है। नेता तो सिर्फ आग लगाकर तमाशा देखते हैं। फिर आग लगाने की कैसी राजनीति? राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अमित शाह के खिलाफ मोर्चा खोला तो सपा के अखिलेश यादव, आरजेडी के तेजस्वी यादव, शिवसेना के उद्धव ठाकरे, आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल और एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी जैसे विरोधी दलों के तमाम नेता भी अपनी राजनीति चमकाने के लिए आग लगाने की राजनीति में कूद पड़े। कांग्रेस ने तो कई स्टेट में अमित शाह के खिलाफ प्रदर्शन भी किए। तो क्या वाकई में अमित शाह ने राज्यसभा में संविधान पर चर्चा के समय ऐसा कुछ कहा जिससे संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर का अपमान हुआ? क्या वाकई में अमित शाह का उद्देश्य अपमान करने का था? या कांग्रेस ने अमित शाह के बयान के 20 घंटे बाद जानबूझकर फेक नैरेटिव बनाने की कोशिश की और फेक वीडियो को हथियार बनाया? शीतकालीन सत्र के अंतिम दिनों में हंगामे के कारण दोनों सदनों में विपक्षी सांसदों ने कामकाज ठप कर दिया। नीली साड़ी और नीली टीशर्ट पहन कर राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने संसद के बाहर प्रदर्शन किया।

यह संवेदनशील मुद्दा बाबासाहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर से जुड़ा था लिहाजा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मैदान में उतरना पड़ा। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि कांग्रेस का इकोसिस्टम झूठ फैलाकर भाजपा को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन कांग्रेस के मंसूबे सफल नहीं होंगे। मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने अंबेडकर का हमेशा अपमान किया, उन्हें नेहरू की कैबिनेट से अपमानजनक तरीके से निकाला गया। चुनाव में अंबेडकर को हराया गया, उनकी समाधि तक नहीं बनाई। मोदी ने कहा कि कांग्रेस को बाबासाहेब से इतनी नफरत थी कि उन्हें भारत रत्न तक नहीं दिया। उनका चित्र संसद में नहीं लगने दिया। कांग्रेस ने हमेशा दलितों को दबाया। दलितों के नरसंहार भी कांग्रेस के राज में ही हुए। ये वही कांग्रेस है जिसने जवाहर लाल नेहरू के सामने बाबा साहेब अंबेडकर को छोटा दिखाने की हर कोशिश की। ये वही कांग्रेस है जिसने जगजीवन राम को योग्यता के बावजूद प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया। ये वही कांग्रेस है जिसमें कोई दलित नेता आज तक पार्टी अध्यक्ष नहीं बना। ये वही कांग्रेस है जिसने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 जिसमें कश्मीर को कई विशेष अधिकार प्राप्त थे लागू की। जबकि अनुच्छेद 370 का बाबासाहेब ने मुखर होकर विरोध किया था, लेकिन पंडित नेहरू ने बाबासाहब की एक नहीं चलने दी और देश पर अनुच्छेद 370 जबरन थोप दिया था। बाबासाहेब अंबेडकर का देहांत 1956 में हो गया था, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने बाबा साहेब को भारत रत्न देने से इनकार कर दिया। फिर इंदिरा गांधी ने भी इन्हें भारत रत्न नहीं दिया। राजीव गांधी ने भी बाबा साहेब को उनका वाजिब सम्मान नहीं दिया। जबकि कांग्रेस के राज में जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने जीते जी खुद ही भारत रत्न ले लिया। बाबासाहब अंबेडकर युग पुरुष थे, दूर द्रष्टा थे, लेकिन कांग्रेस ने हमेशा उन्हें दलित नेता कहकर एक दायरे में बांधने की कोशिश की। कांग्रेस का यह प्रयास भी रहा कि उनका कद नेहरू-गांधी परिवार के समकक्ष न हो सके। शायद बाबा साहेब को भारत रत्न नहीं दिया जाना कांग्रेस की इसी कुत्सित सोच का नतीजा थी। हालांकि 1990 में भाजपा समर्थित राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने सुब्रमण्यम स्वामी की पहल पर बाबासाहेब को भारत रत्न से सम्मानित किया। कांग्रेस बाबासाहेब का इससे बड़ा अपमान और क्या कर सकती है?

इसी कांग्रेस ने अमित शाह के राज्यसभा में करीब 85 मिनट के भाषण में से सिर्फ 12 सेकेंड की क्लिप काटकर उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर डॉ अंबेडकर के अपमान का इल्जाम लगा दिया। अमित शाह ने भी कांग्रेस को खुली चुनौती देते हुए कांग्रेस का कच्चा चिट्ठा खोल कर रख दिया, इतिहास के पन्ने पलटकर बताया कि कांग्रेस के किस-किस नेता ने डॉ.अंबेडकर का अपमान किया। जबकि भाजपा ने हमेशा बाबासाहेब अंबेडकर के आदर्शों को अपनाया, उन्हें सम्मान दिया। पीएम नरेंद्र मोदी देश के पहले प्रधानमंत्री बने जिन्होंने 2016 में उनकी जन्मस्थली महू जाकर बाबासाहेब अंबेडकर की 125वीं जयंती पर श्रद्धांजलि दी। अमित शाह इस बात को समझते हैं कि सोशल मीडिया में झूठ को वायरल करने से नुकसान हो सकता है। कांग्रेस इसका फायदा उठाना चाहती है, लेकिन कहते हैं कि दूध का जला छाछ भी फूंक मारकर पीता है। लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस ने संविधान, आरक्षण और बाबासाहेब को लेकर फेक नैरेटिव खड़ा किया था। लोगों को ये कहकर डराया था कि 400 पार का मतलब बाबासाहेब के आरक्षण को खत्म करना है। संविधान खत्म तो आरक्षण भी खत्म हो जाएगा। चुनाव में भाजपा इसका काउंटर करने में चूक गई। जिसका नुकसान हुआ लेकिन अब भाजपा अलर्ट है। इस बार भाजपा ने जवाब देने में देरी नहीं की। अमित शाह मीडिया के सामने आए और फेक नैरेटिव को एक्सपोज कर दिया। लिहाजा कांग्रेस और उसका इकोसिस्टम शांत हो गया। ●

बिना पैसे के भी होगा इलाज

यदि किसी रोगी के पास पैसे भी नहीं हैं तब भी चिकित्सक या अस्पताल उसके उपचार से इंकार नहीं कर सकते, न ही रोगी के उपचार में किसी तरह की देरी अथवा लापरवाही करेंगे, स्वास्थ्य सचिव डा.आर राजेश कुमार ने कहा कि चिकित्सक की पहली प्राथमिकता रोगी को तुरंत उपचार देकर उसके जीवन की रक्षा करना होती है।

उत्तराचंल दीप डेस्क

उत्तराखंड सरकार ने सरकारी अस्पतालों की इमरजेंसी सेवाओं को बेहतर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसकी शुरुआत राज्य के सभी राजकीय मेडिकल कालेजों से की गई है। स्वास्थ्य सचिव डा. आर राजेश कुमार ने राजकीय मेडिकल कालेजों को निर्देश दिए हैं कि वो आपातकालीन चिकित्सा प्रबंधन को और ज्यादा बेहतर बनाए। इसके लिए शासन न गाइड लाइन भी जारी की है। नई गाइड लाइन के मुताबिक हर राजकीय मेडिकल कालेज के अस्पताल का यह दायित्व है कि इमरजेंसी में आने वाले प्रत्येक रोगी को आपातकालीन चिकित्सा सेवा अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराएं। यदि किसी रोगी के पास पैसे भी नहीं हैं तब भी चिकित्सक या अस्पताल उसके उपचार से इंकार नहीं कर सकता। न ही रोगी के उपचार में किसी तरह की देरी अथवा लापरवाही करेंगे। स्वास्थ्य सचिव डा.आर राजेश कुमार ने हिदायत दी है कि चिकित्सक की पहली प्राथमिकता रोगी को तुरंत उपचार देकर उसके जीवन की रक्षा करनी होनी चाहिए। स्वास्थ्य सचिव ने राजकीय मेडिकल कालेजों के प्राचार्यों के साथ बैठक की और आपातकालीन चिकित्सा प्रबंधन पर लंबे विचार-विमर्श के बाद अस्पतालों के लिए एसओपी जारी कर दी। एसओपी में स्पष्ट कहा गया है कि ट्राइएज एरिया (आपातकालीन चिकित्सा की सबसे पहली आवश्यकता है, कि चाहे वो घायल हों या बीमार या आपदा से बचे हुए लोग) की त्वरित जांच, क्लीनिक प्रोटोकाल, डाक्युमेंटेशन और क्वालिटी एश्योरेंस आदि को लेकर एक विस्तृत गाइड लाइन बनाई गई है। स्वास्थ्य सचिव का कहना है कि आपातकाल में गंभीर रोगियों को 10 मिनट के भीतर इलाज मिलना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। चिकित्सा में किसी तरह की लापरवाही साबित होने पर संबंधित मेडिकल कालेज के चिकित्सा अधीक्षक और प्राचार्य की जवाबदेही होगी।

एसओपी में स्पष्ट निर्देश हैं कि आपातकालीन चिकित्सा की आवश्यकता वाले रोगी को बेड या विशेषज्ञ सेवा के अभाव में भी समुचित उपचार दिया जाना चाहिए। इमरजेंसी सेवा में नियुक्त स्टाफ चिकित्सक को तत्काल उचित जीवन रक्षक देखभाल करनी होगी। इसमें भावनात्मक सुरक्षा और व्यक्ति-केंद्रित देखभाल भी शामिल है। आपातकालीन विभाग विशेषीकृत इकाई के रूप में कार्य करेगा। जहां जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाली सभी स्थितियों में त्वरित और विविध आपातकालीन देखभाल के लिए पर्याप्त संसाधन व स्टाफ की व्यवस्था रहेगी। आनकाल फैकल्टी का यह दायित्व है कि वह आपात कालीन चिकित्सा अधिकारी को अपनी उपलब्धता और संपर्क विवरण के बारे में सूचित करेंगे। आनकाल ड्यूटी के तहत रोस्टर रजिस्टर में फैकल्टी को हस्ताक्षर करना आवश्यक होगा। रात को ड्यूटी रूम में उपलब्ध रहना होगा। किसी रोगी को देखने में अनावश्यक देरी की स्थिति में इमरजेंसी प्रभारी और चिकित्सा अधीक्षक स्थिति की समीक्षा करेंगे। यदि कोई चूक सामने आती है तो दोषी ईएमओ, एसआर या संकाय सदस्य के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

बिना किसी वाजिब कारण के एक से दूसरे विभाग में भेजने पर मरीज को परेशानी होती है। इसे चिकित्सकीय लापरवाही के बराबर माना जाना चाहिए। इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण ये है कि किसी भी मरीज के प्राथमिक उपचार में पैसे की बाधा नहीं आनी चाहिए।

चिकित्सा अधीक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि आपातकालीन विभाग में तैनात कोई कर्मचारी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी निजी प्रतिष्ठान से न जुड़ा हो। तैनाती से पहले इस आशय का शपथ पत्र लिया जाए। अगर कोई कर्मचारी मरीजों को निजी नर्सिंग होम या डायग्नोस्टिक सेंटर भेजने में संलिप्त पाया जाता है तो उसे विभाग से हटाकर उचित कार्रवाई की जाए। किसी भी अस्पताल का आपातकालीन विभाग रोगी के लिए जीवन रक्षक की तरह होता है। जहां मिलने वाली त्वरित, उचित और समविंत देखभाल स्वास्थ्य प्रणाली से आम जनता का विश्वास बढ़ाता है। ऐसे में अपने दायित्व का सही ढंग से निर्वहन न करने वाले कर्मचारियों के प्रशिक्षण या उन्हें हटाना आवश्यक हो जाता है। बिना किसी वाजिब कारण के एक से दूसरे विभाग में भेजने पर मरीज को परेशानी होती है। इसे चिकित्सकीय लापरवाही के बराबर माना जाना चाहिए। इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण ये है कि किसी भी मरीज के प्राथमिक उपचार में पैसे की बाधा नहीं आनी चाहिए।

चिकित्सा सचिव ने गाइड लाइन में कहा है कि ट्राइएज प्रक्रिया मरीज की स्थिति की गंभीरता के आधार पर प्राथमिकता देने के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित करें। यानी शीघ्र प्राथमिक उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए। क्लिनिकल प्रोटोकाल के तहत आपात स्थितियों में उपचार के लिए दिशा-निर्देश स्थापित करें। प्रभावी परिणाम के लिए स्टाफ का प्रशिक्षण सुनिश्चित करें। निरंतर देखभाल के लिए सटीक रिकार्ड की प्रक्रिया लागू करें। मरीज की शिकायतों का भी व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकरण किया जाए। नियमित आडिट और फीडबैक प्रणाली शामिल की जाए। एसओपी की प्रभावशीलता का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। रोगियों के हितों और अधिकारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उनके या उनके परिवार के साथ ईमानदारी से संवाद किया जाना चाहिए। रोग प्रबंधन के दौरान मरीज की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखना अति आवश्यक है। रोगी की गोपनीयता का सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए। राज्य के राजकीय मेडिकल कालेजों में इसका प्रयोग सफल होने पर इसे जिला और तहसील मुख्यालयों के सरकारी चिकित्सालयों में भी लागू किया जा सकता है। ●

सुर्खियां

26 जनवरी को लागू हो सकता है यूसीसी

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 'समान नागरिक संहिता' (यूसीसी) को लेकर बड़ा ऐलान कर दिया है। पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तराखंड में इसी महीने 'समान नागरिक संहिता' को लागू कर दिया जाएगा। यानी संभावना है कि 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर इसे लागू कर दिया जाएगा। क्योंकि 'समान नागरिक संहिता' लागू करने की सारी तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई हैं। भाजपा मुख्यालय में मीडिया से बात करते हुए मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी राज्य स्थापना दिवस पर प्रदेशवासियों को संबोधित किया था। अपने संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने 'समान नागरिक संहिता' सहित सरकार के बनाए गए तमाम कानूनों की सराहना की थी। अब यूसीसी लागू होते ही उत्तराखंड आजादी के बाद इस कानून को लागू करने वाला पहला राज्य बन जाएगा। यूसीसी शादी, तलाक, भरण-पोषण, संपत्ति का अधिकार, गोद लेने और उत्तराधिकार जैसे विषयों को अपने में समेटे हुए है। कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म, जाति या संप्रदाय से जुड़ा क्यों न हो, सभी के लिए उत्तराखंड में एक समान कानून होगा। दरअसल 2022 के विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान पुष्कर सिंह धामी ने वादा किया था कि अगर राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्ता में आती है तो यूसीसी को लागू किया जाएगा। भाजपा ने इस चुनावी वादे को अपने एजेंडे में भी प्रमुखता से स्थान दिया था। उत्तराखंड में भाजपा की सरकार बनते ही 'समान नागरिक संहिता' को लागू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। इससे पहले माना जा रहा था कि धामी सरकार 1 जनवरी 2025 से राज्य में 'समान नागरिक संहिता' को लागू कर देगी। हालांकि, निकाय चुनाव को लेकर अधिसूचना जारी होने की वजह से सरकार 23 जनवरी तक कोई फैसला नहीं ले सकती है। इस स्थिति में माना जा रहा है कि उत्तराखंड की धामी सरकार 26 जनवरी 2025 से 'समान नागरिक संहिता' लागू कर सकती है। वैसे भी भारत का संविधान 26 जनवरी को लागू हुआ था। भाजपा का मानना है कि उत्तराखंड में 'समान नागरिक संहिता' लागू होने के बाद यह सामाजिक समानता और न्याय की दिशा में एक मिसाल बनेगा। राज्य सरकार ने प्राथमिकता के आधार पर 'समान नागरिक संहिता' (यूसीसी) को समयबद्ध तरीके से क्रियान्वित किया है। उत्तराखंड में 'समान नागरिक संहिता' लागू होने के बाद भाजपा शासित राज्यों में 'समान नागरिक संहिता' लागू करने की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। ●

विकास के लिए गुरूद्वारा में अरदास

रूद्रपुर नगर निगम क्षेत्र से भाजपा मेयर प्रत्याशी विकास शर्मा की जीत के लिए शहर के मुख्य गुरूद्वारा श्री गोल मार्केट में प्रबंध कमेटी की ओर से विशेष अरदास की गई। साथ ही सिख समाज ने विकास शर्मा का समर्थन करने का ऐलान किया और उन्हें जीत की अग्रिम बधाई भी दे दी। दरअसल भाजपा मेयर प्रत्याशी विकास शर्मा गुरूद्वारा गोल मार्केट पहुंचने पर उनका गुरूद्वारा प्रबंध कमेटी के नेतृत्व में सिख समाज ने सम्मानित किया, साथ ही विकास शर्मा की जीत के लिए गुरूद्वारा में अरदास कराई गई। इस अवसर पर भाजपा मेयर प्रत्याशी विकास शर्मा ने कहा कि प्रदेश की पुष्कर सिंह धामी सरकार ने सिख समाज के हित में कई बड़े फैसले लिए हैं। तराई को आबाद करने में सिख समाज का बहुत बड़ा योगदान है। प्रथम गुरु गुरुनानक से लेकर दशमेश गुरुओं के आशीर्वाद से यह धरती लगातार कृषि, उद्योग एवं विकास की दृष्टि से लघु भारत का संदेश पूरे विश्व में दे रही है। सिख समाज की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रुद्रपुर में विभाजन विभषिका स्मृति स्थल का निर्माण कराने की फैसला किया है। साथ ही सिख समाज की आनंद कारज एक्ट की मांग को भी पूरा करने के लिए सरकार फैसला ले चुकी है। शहर में सिख समाज से जुड़ी जो भी समस्याएं हैं उन्हें मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मिलकर समाधान कराया जाएगा। विकास शर्मा ने दावा किया कि भाजपा सिख समाज की उम्मीदों पर खरा उतरने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। जनता के आशीर्वाद से मेयर बनने के बाद रुद्रपुर के चहुमुंखी विकास में कोई कसर बाकी नहीं रहेगी। दूसरी ओर निर्दलीय नामांकन कराने वाले समाजसेवी संजय ठुकराल भाजपा मेयर प्रत्याशी विकास शर्मा के प्रचार में जुट गए हैं। संजय ठुकराल ने कहा कि विकास शर्मा जमीन से जुड़े नेता हैं। उनके मेयर बनने से शहर के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। ●

खतरे मंडराते ही बजेगा सायरन

उत्तराखंड सरकार, राज्य में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए नई-नई तकनीकों पर काम कर रही है। इन तकनीक की सहायता से आपदा का पूर्वानुमान होने से नुकसान को कम करने पर जोर दिया जा रहा है। यानी उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण आपदा संभावित इलाकों में चेतावनी प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए 'मल्टी-हजार्ड अर्ली वार्निंग सिस्टम' विकसित कर रहा है। यह सिस्टम भूस्खलन, भूकंप, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के खतरों को पहले ही भांपकर स्थानीय लोगों को सतर्क करेगा। इसके लिए राज्य में आपातकालीन सूचना केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। ये सभी केंद्र आपदा की निगरानी कर खतरे की जानकारी सीधे प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंचाएंगे। इसके लिए यू-प्रिपेयर योजना के तहत आपदा प्रबंधन से जुड़ी संस्थाओं और पूर्व सूचना देने वाली एजेंसियों के साथ अनुबंध किया जा रहा है। इन एजेंसियों को उनकी सेवाओं का भुगतान तभी किया जाएगा जब वे सटीक और समय पर सूचना उपलब्ध कराएंगी। इस प्रणाली का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी आपदा की स्थिति में नुकसान को कम किया जा सके। 'मल्टी-हजार्ड अर्ली वार्निंग सिस्टम' से जुड़े सभी उपकरण और डेटा केंद्र, राज्य के आपातकालीन सूचना केंद्र से जुड़े रहेंगे। आपदा का खतरा मंडराते ही सायरन बजाकर स्थानीय लोगों को सतर्क कर दिया जाएगा। इस प्रणाली के तहत भूस्खलन, बाढ़ और भूवैज्ञानिक गतिविधियों की निगरानी के लिए संवेदनशील इलाकों में विशेष तरह के उपकरण लगाए जाएंगे। उत्तराखंड में मानसून के दौरान भूस्खलन, बाढ़ और बादल फटने की घटनाओं से हर साल जान-माल का भारी नुकसान होता है। आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सचिव विनोद कुमार सुमन का कहना है कि इस योजना का उद्देश्य आपदाओं से जुड़ी घटनाओं की पूर्व सूचना देकर लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इस प्रणाली को विश्व बैंक के सहयोग से विकसित किया जा रहा है। ताकि संभावित खतरों की पहचान और जोखिम को कम करने के लिए उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सके। अभी सूचना के अभाव में आपदाओं के दौरान भारी जन-धन का नुकसान होता है। जिसे कम करने के लिए यह कदम अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उत्तराखंड जैसे आपदा-प्रवण क्षेत्र में यह योजना आपदा प्रबंधन को न सिर्फ एक नई दिशा देगी। बल्कि सटीक और समय पर चेतावनी मिलने से जनहानि को रोका जा सकेगा। राहत और बचाव कार्यों को भी प्रभावी बनाया जा सकेगा।

भूमि कब्जाने वाले माफिया सक्रिय

उत्तराखंड राज्य बनने के बाद 20 बरसों तक भूमि संबंधी रिकार्ड सहारनपुर कमिश्नरी में रहने की वजह से यहां के भू-माफियाओं ने फर्जी दस्तावेज बनवा कर देहरादून के संभ्रांत नागरिकों और एनआरआई की संपत्तियों पर दावे करने का षड्यंत्र रचा है। इनमें अधिकतर मुस्लिम समुदाय के लोग हैं जो यहां कई सालों से एक्टिव है। हालांकि पूर्व जिलाधिकारी सोनिका सहारनपुर से भू-राजस्व दस्तावेज निकाल कर देहरादून ले आई थीं, लेकिन यहां भी वही माफिया अपने काम को अंजाम देने में कामयाब रहे। हाल ही में देहरादून के राजपुर थाने में एक एफआईआर दर्ज की गई है कि अमेरिका में रहने वाली ऋतु मेहता ने किशनपुर में रहने वाली अपनी मित्र सुमन देवी को अपने बंगले की देखरेख की जिम्मेदारी दी थी। सुमन ने पुलिस को बताया कि कुछ लोग उसके बंगले में जबरन घुस आए, लेकिन उन्हें अपने कुछ परिचितों की मदद से बाहर निकाल दिया। बाद में पता चला कि बंगले के बराबर में फरमान इलाही नाम का युवक रहता है, जिसने सहारनपुर से अपने परिचितों को बुलाकर कोठी पर कब्जे का प्रयास किया। पुलिस की जांच में पता चला कि फरमान इलाही ने सहारनपुर के माफिया से मिलकर मकान के फर्जी दस्तावेज बनवा लिए और अब उसे बेचने का प्रयास कर रहा है। पुलिस ने इस मामले में सहारनपुर के रहने वाले शेरखान, सलमान, इम्तियाज अब्दुल मतीन, देहरादून निवासी फरमान इलाही के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। फरमान इलाही मूलतः दिल्ली का रहने वाला है और वो देहरादून में ऐसी संपत्तियों पर नजर रखता है, जिसके स्वामी बाहर रहते हों ताकि उनके फर्जी दस्तावेज बना कर अपना कब्जा कर सके। देहरादून में ऐसे कई मामले सामने आ चुके हैं जिनमें फर्जी भू दस्तावेज बनाकर भू स्वामियों को परेशान किया जा रहा है। ऐसे कई मामले कोर्ट में भी चल रहे हैं। शत्रु संपत्तियों से जुड़े ऐसे कई मामले फर्जी दस्तावेजों के कारण जिला प्रशासन की कोर्ट में पेंडिंग हैं। जानकारी के मुताबिक, सहारनपुर के माफिया पुरानी ऊर्दू हिंदी शब्दावली, पुराने स्टांप पेपर और उस पर पुराने टाइप राइटर की प्रिंटिंग के आधार पर हूबहू असली जैसे फर्जी दस्तावेज तैयार करते हैं और उसके बाद स्थानीय लोगों को नोटिस जारी करते है या फिर सीधे गुंडागर्दी के बल पर उसकी संपत्ति पर कब्जा कर लेते हैं। इस गैंग के सदस्य नगर निगम, तहसील, निबंधक कार्यालयों में भी सक्रिय हैं और निचले तबके के सरकारी कर्मचारियों से मिलकर अपना काम करते हैं। जबरन कब्जा करने के षड्यंत्र में पूर्व में कुछ पुलिस कर्मियों की भी पहचान की गई थी। ●

144 वर्ष बाद बना कुंभ का महायोग

गंगा में कमर तक उतर कर डुबकी लगाकर झटके से ऊपर उठे माटी के जीवंत पुतलों से सिर्फ एक ही आवाज आती है, हर-हर गंगे, जय मां गंगे, इस तरह गंगा घाट वो जगह बन जाते हैं, जहां सांसारिक सागर का मंथन होता है और इस मंथन से एकता का अमृत मिलता है।

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज की संगमनगरी में 144 बरस बाद पूर्ण महाकुंभ का महायोग बना है। 13 जनवरी से शुरू हुआ महाकुंभ-2025, फरवरी की 26 तारीख तक चलेगा। इसमें देश-विदेश से 40 से 45 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान लगाया गया है, लेकिन यूपी की योगी आदित्यनाथ सरकार ने 100 करोड़ श्रद्धालुओं के हिसाब से व्यवस्था करने का दावा किया है। पहली बार यूपी में महाकुंभ दिव्या-भव्य और आधुनिक हो रहा है। सुरक्षा के लिहाज से जल-थल, और आकाश से मेला क्षेत्र पर नजर रखी जाएगी। पहली बार फायर रोबोट तैनात किए गए हैं। स्नान करते समय यदि कोई श्रद्धालु गहरे पानी में डूबने लगता है तो उसे बचाने के लिए भी रोबोट तैनात हैं। पूरे महाकुंभ क्षेत्र में एनएसजी के 200 कमांडो तैनात किए गए हैं। 200 कमांडो को 50-50 कमांडों को चार टीमों में बांटा गया है। अत्याधुनिक हथियारों व संसाधनों से लैस एनएसजी के कमांडो के पास हेलीकॉप्टर भी है, जिससे किसी आपात स्थिति में तुरंत मदद को पहुंचेंगे। आतंकियों से निपटने में दक्ष एनएसजी की टीम भी मेला क्षेत्र में लगाई गई हैं। महाकुंभ में श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए 15 हजार सिविल पुलिस के जवान महाकुंभ क्षेत्र के चप्पे-चप्पे पर नजर रखें हुए हैं। महिला श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए 400 महिला सुरक्षाकर्मी भी तैनात की गई हैं।

6 अमृत स्नान होंगे

दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन में अखाड़ों के शाही स्नान को अब अमृत स्नान नाम और पेशवाई को नगर प्रवेश नाम दिया गया। हर महाकुंभ में 6 अमृत स्नान (शाही स्नान) होते हैं। हालांकि अमृत स्नान (शाही स्नान) की परंपरा का शास्त्रों में कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता है। लेकिन यह परंपरा सदियों पुरानी है जहां मुहूर्त के समय सबसे पहले महाकुंभ में साधु-संत और नागाबाबा स्नान करते हैं। इसके बाद श्रद्धालुओं का स्नान शुरू होता है। इसी स्नान की परंपरा को शाही स्नान कहा जाता था। जिसे अब सीएम योगी आदित्यनाथ ने संतों की सलाह पर बदल दिया है। अब शाही स्नान को महाकुंभ-2025 में अमृत स्नान कहा जाएगा। बताया जाता है कि शाही स्नान की परंपरा 14वीं से 16वीं सदी के बीच शुरू हुई थी। करीब 45 दिनों तक चलने वाले महाकुंभ में अमृत स्नान का खास महत्व है। मान्यता है कि जो इंसान कुंभ में स्नान करता है उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। साथ ही यह उम्मीद भी की जाती है कि कुंभ में स्नान करने से इंसान मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है।

कुंभ से मिट्टी, जल व तुलसी लाएं

प्रयागराज में तीन पवित्र नदियों का संगम होता है, जिनमें गंगा, यमुना और सरस्वती शामिल हैं। ऐसे में जब आप महाकुंभ में स्नान के लिए जा रहे हैं तो संगम का जल और वहां की मिट्टी जरूर लेकर आएं, क्योंकि हिंदू धर्म में मान्यता है कि पवित्र नदियों की मिट्टी और जल घर लाना शुभ होता है। घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव रहता है। त्रिवेणी का जल बहुत ही पवित्र माना गया है। संगम का जल घर में सुख-समृद्धि का काम करेगा। यह पवित्र जल नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करता है। संगम में स्नान के बाद बड़े हनुमान जी के दर्शन जरूर करें। बड़े हनुमान जी के दर्शन करते समय पुजारी तुलसी के पत्ते प्रसाद स्वरूप देते हैं। ये तुलसी के पत्ते घर ले आएं और लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रख दें। इससे घर में आर्थिक समस्या नहीं होगी।

महाकुंभ के योग कैसे बनते हैं

पौराणिक कथा के अनुसार कुंभ की कहानी सागर मंथन में निकले अमृत को पाने के लिए देवताओं और असुरों में हुए युद्ध से शुरू होती है। कहते हैं कि युगों पहले अमृत की खोज में सागर को मथा गया था, जिसमें अमृत निकला। इस अमृत को पाने के लिए देवता और असुरों में भयंकर युद्ध हुआ था। युद्ध में अमृत किसी के हाथ नहीं लगा। छीना-झपटी में कलश से अमृत कई बार छलका और अलग-अलग स्थानों पर जा गिरा। ये स्थान हरिद्वार (उत्तराखंड), प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), उज्जैन (मध्य प्रदेश) और नासिक (महाराष्ट्र) थे। लिहाजा जब वृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करता है और सूर्य व चंद्रमा क्रमशः मेष और धनु राशि में प्रवेश करते हैं, तो कुंभ हरिद्वार में आयोजित किया जाता है। अमृत की यही खोज श्रद्धालुओं को एक साथ, एक स्थान पर ले आती है। पवित्र नदियों के बहते जल के आगे जात-पात और छोटे-बड़े की पहचान गायब हो जाती है और वो सिर्फ साधारण मनुष्य रह जाते हैं। गंगा में कमर तक उतर कर डुबकी लगाकर झटके से ऊपर उठे माटी के जीवंत पुतलों से सिर्फ एक ही आवाज आती है, हर-हर गंगे, जय मां गंगे। गंगा घाट वह जगह बन जाते हैं, जहां सांसारिक सागर का मंथन होता है और इस मंथन से एकता का अमृत मिलता है। जिसके तहत यह पूरी प्रक्रिया होती है, वही कुंभ और महाकुंभ कहलाते हैं। जब वृहस्पति वृषभ राशि में होता है और सूर्य व चंद्रमा मकर राशि में होते हैं, तब कुंभ प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में आयोजित किया जाता है। कथा के अनुसार सागर मंथन में अभी अमृत कलश बाहर आया ही था कि इसे लेकर असुरों में होड़ मच गई कि वह इसे देवताओं से पहले पी लेंगे। राजा बलि की सेना में उनका एक सेनापति स्वरभानु था। वह जल, स्थल और आकाश तीनों जगहों पर तेज गति से दौड़ सकता था। उसने अमृत कलश को एक पल में ही धन्वंतरि देव के हाथ से झटका और आकाश की ओर ले गया। देवताओं के दल में इंद्र के पुत्र जयंत ने जैसे ही स्वरभानु को अमृत ले जाते देखा तो वह तुरंत कौवे का रूप धरकर उसके पीछे उड़े और आकाश में उसके हाथ से अमृत कुंभ छीनने लगे। लेकिन जयंत को अकेला पड़ता देख सूर्य, चंद्रमा और देवताओं के गुरु वृहस्पति उनके साथ आ गए। लिहाजा जब वृहस्पति सिंह राशि में और सूर्य व चंद्रमा कर्क राशि में प्रवेश करते हैं, तो कुंभ नासिक में आयोजित किया जाता है। इसी तरह के दो और प्रयासों में कुंभ से अमृत छलका तो उज्जैन में क्षिप्रा नदी में जा गिरा और चौथी बार नासिक की गोदावरी नदी में अमृत की बूंदें गिरीं। इस तरह गंगा नदी में दो बार, इसके अलावा क्षिप्रा और गोदावरी नदी में अमृत की बूंदें गिरीं। इस तरह इन पवित्र नदियों के किनारे बसे हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में कुंभ के आयोजन होने लगे।

पौराणिक कथा के अनुसार मान्यता है कि सागर मंथन में जब देवता और असुरों में अमृत कलश के लिए युद्ध हुआ तो इंद्र के बेटे जयंत असुर स्वरभानु से अमृत कलश छीनकर 12 दिन में स्वर्ग पहुंचे थे, माना जाता है कि देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है।

ज्योतिषी गणना से बनता है महायोग

कुंभ मेले का आयोजन 12 साल में ही क्यों होता है? यह सवाल हर किसी के जहन में आ रहा होगा। दरअसल कुंभ के 12 साल में होने का आधार ज्योतिषी गणना के साथ पौराणिक कथा भी है। ज्योतिषी गणना के अनुसार जब वृहस्पति ग्रह मेष राशि या सिंह राशि में प्रवेश करता है और सूर्य-चंद्रमा की स्थिति से विशेष योग बनाता है, तब कुंभ का आयोजन होता है। माना जाता है कि इस तरह ग्रहों की यह स्थिति 12 में आती है। पौराणिक कथा के अनुसार एक और मान्यता ये भी है कि सागर मंथन में जब देवता और असुरों में अमृत कलश के लिए युद्ध हुआ तब इंद्र के बेटे जयंत असुर स्वरभानु से अमृत कलश छीनकर 12 दिन में स्वर्ग पहुंचे थे। माना जाता है कि देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। इसलिए महाकुंभ का आयोजन 12 वर्षों में होता है। कुंभ भी चार प्रकार के होते हैं। कुंभ, अर्धकुंभ, पूर्णकुंभ और महाकुंभ। इसमें कुंभ का आयोजन हर 12 साल में देश के 4 स्थानों में से एक पर होता है। वहीं अर्धकुंभ 6-6 साल में होता है। ये सिर्फ हरिद्वार और प्रयागराज में ही होता है। पूर्णकुंभ 12 साल में एक बार होता है। 12 पूर्णकुंभ होने पर यह महाकुंभ कहलाता है। इसलिए प्रयागराज में इस बार लग रहे कुंभ को महाकुंभ नाम दिया गया है। लेकिन जब वृहस्पति मकर राशि में और सूर्य व चंद्रमा अन्य शुभ स्थानों पर होते हैं, तब महाकुंभ का योग बनता है और यह संयोग हर 144 वर्षों में एक बार आता है। इस संयोग को विशेष रूप से शुभ और दिव्य माना जाता है। हर 144 साल में एक दुर्लभ खगोलीय घटना होती है, जो कुंभ को विशिष्ट बनाती है। हिंदू ज्योतिषीय गणनाओं में 12 और 144 वर्षों के चक्र का महत्व बताया गया है। 12 साल के चक्र को एक सामान्य कुंभ कहा जाता है और 12 कुंभ मेलों को इकट्ठा कर यानी 12 कुंभ (12×12=144 साल) के बाद इसे महाकाल कुंभ या विशेष महाकुंभ माना जाता है। मान्यता है कि हर 144 साल में अमृत कलश से विशेष ऊर्जा या दिव्यता पृथ्वी पर उतरती है, जिससे यह कुंभ मेला और भी अधिक पवित्र हो जाता है। महाकुंभ और पुण्य फलकुंभ मेला और महाकुंभ को मोक्ष प्राप्ति का अवसर माना जाता है। मान्यता है कि इस समय गंगा, यमुना, सरस्वती और अन्य नदियों में स्नान करने से भी पापों का नाश होता है और पुण्य की प्राप्ति होती है। महाकुंभ का समय साधु-संतों, ऋषि-मुनियों और योगियों के लिए ध्यान, साधना और धर्म प्रचार का विशेष काल माना जाता है। यह पूरे समाज के लिए आध्यात्मिक उन्नति का अवसर देता है। इसलिए महाकुंभ में करोड़ों श्रद्धालु, संत, महात्मा और अखाड़े शामिल होते हैं।

- **मान्यता है कि हर 144 साल में अमृत कलश से विशेष ऊर्जा या दिव्यता पृथ्वी पर उतरती है, जिससे कुंभ और भी अधिक पवित्र हो जाता है, महाकुंभ और पुण्य फलकुंभ मेला और महाकुंभ को मोक्ष प्राप्ति का अवसर भी माना जाता है।**
- **महाकुंभ का समय साधु-संतों, ऋषि-मुनियों और योगियों के लिए ध्यान, साधना और धर्म प्रचार का विशेष काल माना जाता है, यह पूरे समाज के लिए आध्यात्मिक उन्नति का अवसर देता है, इसलिए महाकुंभ में करोड़ों श्रद्धालु, संत, महात्मा और अखाड़े शामिल होते हैं।**

क्लीन होगा मेला क्षेत्र

144 साल बाद महाकुंभ-2025 में सर्वश्रेष्ठ योग बना है तो उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने इसे स्वच्छ कुंभ बनाने का फैसला किया। इस महा आयोजन को स्वच्छ बनाने के लिए योगी सरकार के मेला प्रशासन की ओर से व्यापक तैयारियां की गई हैं। 10 हजार से ज्यादा सफाई कर्मचारियों की तैनाती की गई है। वहीं 1.5 लाख शौचालय और 25 हजार लाइनर बैग युक्त डस्टबिन स्थापित की गई हैं। कुंभ मेला क्षेत्र में 300 से अधिक सेक्शन गाड़ियों और जेट स्प्रे सफाई प्रणाली का इस्तेमाल किया जा रहा है। पहली बार क्यूआर कोड के माध्यम से सेवा स्तर की निगरानी की जा रही है। ताकि किसी भी प्रकार की कमी को तुरंत दूर किया जा सके। कचरे के बेहतर प्रबंधन के लिए 120 टिपर और 40 कॉम्पेक्टर ट्रकों का उपयोग किया जा रहा है। प्रत्येक सेक्टर में ट्रांसफर स्टेशन की व्यवस्था की गई है और वाहनों की जीपीएस आधारित निगरानी की जा रही है। ताकि सफाई समय पर और प्रभावी रूप से की जा सके।

अटल जी की 'अटल' लव स्टोरी

वाजपेयी जी ने अपनी भावनाओं का इजहार पत्र के माध्यम से किया था, इस लेटर को उन्होंने राजकुमारी के लिए लाइब्रेरी की एक किताब में रखा था, राजकुमारी ने जवाब की चिट्ठी भी उसी किताब में रखी थी जिस किताब में अटल जी ने उनके लिए पत्र रखा था, हालांकि मिसेज कौल का जवाब अटल जी तक पहुंच नहीं पाया।

प्रो. श्याम सुंदर भाटिया
टीएमयू, मुरादाबाद

मशहूर लेखक और पत्रकार किंग शुक नाग ने अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन पर लिखी किताब 'अटल बिहारी वाजपेयी, ए मैन ऑफ ऑल सीजंस' में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जिंदगी में उनकी मोहब्बत को लेकर अनछुए पहलुओं का खुलासा किया है। हम आपको इस अधूरी प्रेम कहानी की नायिका के बारे में बताने जा रहे हैं। जिनके इंतजार में अटल बिहारी वाजपेयी जीवन भर अविवाहित रहे। अटल जी की मिसेज राजकुमारी कौल के साथ करीबी दोस्ती की चर्चा मीडिया में कभी नहीं हुई। यह मीडिया और वाजपेयी जी के बीच एक अघोषित समझौता-सा माना जाता रहा है, जिस पर न कभी मीडिया ने रुचि दिखाई और न ही अटल जी ने इस पर सफाई देने की जरूरत समझी। मिसेज राजकुमारी कौल ने एक बार एक मैगजीन को दिए इंटरव्यू में कहा था- 'अटल बिहारी वाजपेयी से उनकी दोस्ती को लेकर किसी को समझाने की जरूरत नहीं है। मिसेज कौल ने कहा था कि उनका पति के साथ भी रिश्ता काफी मजबूत है।' बात 40 के दशक की है जब अटल जी और राजकुमारी हक्सर, ग्वालियर में विक्टोरिया कॉलेज में पढ़ रहे थे। यह बात दीगर है कि अब इस कॉलेज को लक्ष्मीबाई कॉलेज कहा जाता है। कॉलेज के दिनों में दोनों ने एक-दूसरे की भावनाएं समझीं। विभाजन के उस दौर में किसी लड़के और लड़की के बीच की दोस्ती को सराहा नहीं जाता था। वाजपेयी और मिसेज कौल भी इस स्थिति से गुजर रहे थे। हालांकि वाजपेयी जी ने अपनी भावनाओं का इजहार एक पत्र के माध्यम से अवश्य किया था, इस लेटर को उन्होंने राजकुमारी के लिए लाइब्रेरी की एक किताब में रख दिया था। राजकुमारी कौल ने भी जवाब में अपनी भावनाओं का इजहार करते हुए उसी किताब में चिट्ठी रखी थी जिसमें किताब में अटल जी ने उनके लिए पत्र रखा था। हालांकि मिसेज कौल का जवाब अटल बिहारी वाजपेयी तक पहुंच नहीं पाया था। लेकिन उनकी दोस्ती हमेशा बनी रही अंतिम वक्त तक राजकुमारी कौल उनके साथ रहीं। कहा जाता है कि कौल अटल बिहारी के साथ अंतिम वक्त तक थी। यह भी कहा जाता है कि पति प्रो.बीएन कौल की मुत्यु के बाद राजकुमारी कौल अटल बिहारी वाजपेयी के

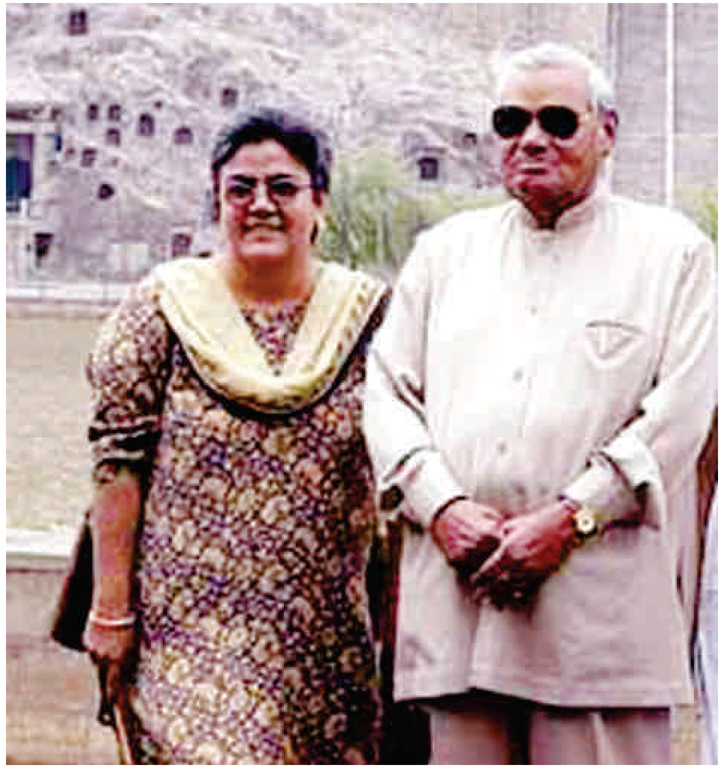

घर पर ही रहने लगी थी। वाजपेयी जी केवल कवि और राजनेता ही नहीं थे। बल्कि वे फिल्मों, अच्छे भोजन, अच्छी मित्रता में भी रूचि रखते थे। बहुत से लोग वाजपेयी जी को दिलचस्प और आशिक मिजाज भी मानते रहे हैं।

अटल जी व राजकुमारी रास्ते जुदा हुए

भारत विभाजन के दौरान राजकुमारी के कश्मीरी पंडित पिता गोविंद नारायण हक्सर ने उनकी शादी कश्मीरी पंडित बृज नारायण कौल से कर दी थी। दरअसल हक्सर अपनी बेटी की शादी अटल बिहारी वाजपेयी से नहीं करना चाहते थे। वाजपेयी जी और राजकुमारी हक्सर दोनों अपनी जिंदगी में रम गए थे। बाद में मिसेज कौल पति बीएन कौल के साथ दिल्ली चली गईं और वाजपेयी कानपुर की सियासी गलियों से होते हुए लखनऊ पहुंच गए। दिल्ली यूनिवर्सिटी के रामजस कॉलेज में मिसेज कौल के पति बीएन कौल दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे। बाद में वह रामजस हॉस्टल में वार्डन भी बने। कुछ सालों बाद अविवाहित वाजपेयी जी पूरी तरह से राजनेता बन गए। एक लंबे समय के बाद दिल्ली में अटल जी का मिसेज कौल से मिलना हुआ। प्रो.बीएन कौल उस वक्त हॉस्टल में रहने वाले छात्रों के प्लान में रोड़ा बन जाते थे, जब स्टूडेंट्स शराब पीने के लिए देर से हॉस्टल आने की योजना बनाते थे। ऐसे में छात्रों ने मिसेज कौल से शिकायत करने का प्लान बनाया। जब हॉस्टल में रहने वाले छात्रों का ग्रुप प्रो. बीएन कौल के घर शिकायत करने पहुंचा तो कहा जाता है कि उस समय उनका सामना अटल बिहारी वाजपेयी से हुआ था।

> **अटल बिहारी वाजपेयी के लुटियंस जॉन वाले बंगले में लोग जब अटल जी से मिलने जाते थे, तब उनको राजकुमारी कौल का परिवार उसी बंगले में मिलता था। इसका मतलब है, अटल जी के साथ ही कौल परिवार उनके सरकारी बंगले में शिफ्ट हो गया था। कॉलेज की मित्र राजकुमारी कौल से उनकी शादी तो न हो सकी, लेकिन राजकुमारी की शादी के बाद भी दोनों संग-संग रहे। इस रिश्ते को दोनों ने कोई नाम नहीं दिया। क्योंकि अटल जी का कद राजनीति में इतना बड़ा था कि विरोधी दल और मीडिया कभी उनकी जिंदगी में ताक-झांक नहीं कर सके।**

कौल की बेटी को लिया था गोद

सालों-साल तक अटल बिहारी वाजपेयी प्रो.बीएन कौल के घर नियमित बेरोकटोक आने-जाने वालों में शामिल थे। बाद में अटल जी कौल हाउस में शिफ्ट हो गए जबकि उस समय तक प्रोफेसर कौल रामजस कॉलेज के वार्डन थे, लेकिन 1978 में अटल बिहारी वाजपेयी जब मोरारजी सरकार में विदेश मंत्री बने तो वे मिसेज कौल और उनकी बेटियों के साथ सरकारी आवास में शिफ्ट हो गए। उन्होंने राजकुमारी कौल की बेटी नमिता और बाद में उनकी दोहिती निहारिका को गोद ले लिया था। अटल जी के प्रधानमंत्री बनने तक वे उनके साथ ही रहे। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने एक अंग्रेजी अखबार को दिए इंटरव्यू में बताया था, 'हम अटल बिहारी वाजपेयी के पड़ोस में रहते थे। घरों की दीवार से लगा एक दरवाजा था, जिससे दोनों परिवार के लोग आसानी से आ-जा सकते थे। अटल जी मछली के शौकीन थे। नमिता अक्सर हमारे घर आती थी। मेरी पत्नी और मिसेज राजकुमारी कौल की अच्छी बॉन्डिंग थी। जब नमिता की शादी तय हुई तो मेरी पत्नी ने ही सारी तैयारी की थी, क्योंकि दूल्हा बंगाली था।' नमिता की शादी रंजन भट्टाचार्य से हुई थी।

मैं अविवाहित हूं कुंवारा नहीं

अमर लेखिका अमृता प्रीतम ने एक बार कहा था कि कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जो हर हाल में रहते हैं। स्वीकृति से जन्मते और कायम रहते तो ठीक था, लेकिन यह कई बार अस्वीकृति में से भी जन्म ले लेते हैं। सिर्फ जन्म ही नहीं लेते बल्कि इंसान के साथ भी जीते हैं। मरने के बाद भी। 'एक ऐसा ही अटूट रिश्ता अटल जी और मिसेज कौल के बीच था।' वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर के अनुसार 'ये खूबसूरत प्रेम कहानी थी। अटल जी और राजकुमारी कौल के बीच चला यह अपनापन खूबसूरत रिश्ते में बुनता चला गया। हर किसी को मालूम था, राजकुमारी कौल अटल जी के लिए सबसे प्रिय है।' पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से एक बार सवाल पूछा गया था कि आप अब तक कुंवारे क्यों हैं? इसके जवाब में अपनी वाकपटु शैली में वाजपेयी जी ने पत्रकारों से कहा था कि 'मैं अविवाहित हूं, लेकिन कुंवारा नहीं हूं।' वाजपेयी जी के इस बयान का मर्म चाहे जो भी निकाला जाए। लोगों ने इस वाक्य के अपने हिसाब से अलग-अलग अर्थ निकाले हों, जो भी हो, अटल जी के लिए इन शब्दों के गंभीर मायने थे। वे प्रेम की सहजता और गंभीरता को भलीभांति समझते थे। वे न तो कभी किसी दूसरे के निजी मामलों में दखल देते थे और न ही अपने मामले में किसी दूसरे का दखल बर्दाश्त करते थे। लेकिन इस लोकप्रिय राजनेता की जिंदगी का एक अविस्मरणीय हिस्सा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से जुड़ा रहा है। बताते हैं, अटल जी पर जनसंघ के सीनियर लीडर्स का दबाव था कि वो इस रिश्ते का मोह छोड़ दें, लेकिन वह नहीं माने। अटल जी इस अटूट रिश्ते के प्रति आजीवन अटल रहे। वाजपेयी जी ने शादी भले ही नहीं की। हालांकि मिसेज राजकुमारी कौल प्रधानमंत्री आवास में भी उनके साथ रहीं, लेकिन पत्नी की हैसियत से नहीं, दोस्ती की खातिर। प्रधानमंत्री प्रोटोकॉल के हिसाब-किताब में उनका कहीं नाम नहीं था। वाजपेयी की आलोचना करने वाले नेताओं और दलों ने भी कभी इस नितांत निजी मसले को राजनीति के मैदान में नहीं घसीटा। यह प्रेम की एक ऐसी अलिखित कहानी थी और है, जिसे कोई नाम नहीं मिला। हालांकि मिसेज राजकुमारी कौल से संपर्कों के कारण अटल जी को कई बार विरोध का सामना भी करना पड़ा। 1968 में दीनदयाल उपाध्याय के निधन के बाद जनसंघ पार्टी के अध्यक्ष के लिए अटल जी के नाम पर विचार किया जा रहा था, तब जनसंघ में अटल जी के विरोधी बलराज मधोक ने अटल जी की जीवनशैली को लेकर कई गंभीर आरोप लगाए थे। बलराज मधोक का इशारा भी मिसेज राजकुमारी कौल की ही तरफ था।

2014 में राजकुमारी कौल का निधन

अटल जी के पूर्व सहायक और पत्रकार सुधींद्र कुलकर्णी ने 2014 में मिसेज राजकुमारी कौल की मृत्यु के बाद उनकी श्रद्धांजलि में इसका जिक्र किया है। जब मिसेज राजकुमारी कौल का निधन हुआ, तब मई 2014 में लोकसभा चुनाव अभियान जोरों पर था, लेकिन उस अभियान को छोड़कर लालकृष्ण आडवाणी, सुषमा स्वराज, राजनाथ सिंह और ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे नेता उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुए थे। अटल बिहारी वाजपेयी और राजकुमारी कौल के रिश्तों में हमेशा ही शालीनता और शिष्टता का भाव रहा है। जब राजकुमारी कौल का निधन हुआ, तब अटल बिहारी वाजपेयी इतने अस्वस्थ थे कि कहीं आना-जाना नहीं कर पाते थे, लेकिन फिर भी मिसेस कौल की मृत्यु ने उन्हें बुरी तरह प्रभावित किया। उनकी मृत्यु से अटल जी के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ा था। भाजपा के कई नेताओं का मानना है कि अटल बिहारी वाजपेयी और मिसेज राजकुमारी कौल के बीच बहुत पवित्र रिश्ता था और राजकुमारी कौल के परिवार के सदस्य भी अटल जी के घर आते-जाते थे। वो भी अटल जी को बहुत ही सम्मान देते थे। ऐसे में रिश्तों की पवित्रता को समझना बहुत जरूरी है। ●

- **भारत विभाजन के दौरान राजकुमारी के कश्मीरी पंडित पिता गोविंद नारायण हक्सर ने उनकी शादी कश्मीरी पंडित बृज नारायण कौल से कर दी थी। दरअसल हक्सर अपनी बेटी की शादी अटल बिहारी वाजपेयी से नहीं करना चाहते थे।**
- **अटल जी व मिसेज कौल के बीच यह अपनापन खूबसूरत रिश्ते बुनता चला गया, हर किसी को पता था, राजकुमारी कौल, अटल जी के लिए सबसे प्रिय है।' इसलिए अटल जी से एक बार पूछा गया था कि आप अब तक कुंवारे क्यों हैं? इसके जवाब में वाजपेयी जी ने कहा था कि 'मैं अविवाहित हूं, लेकिन कुंवारा नहीं हूं।'**

20 रुपये में बने भारतीय वोटर

साहिल सहगल वेबसाइट के जरिए महज 20 रुपये में फर्जी आय प्रमाण-पत्र, फर्जी जन्म प्रमाण-पत्र, एड्रेस प्रूफ बनता था, इसके बाद नकली प्रमाण-पत्रों से असली आधार कार्ड, पैन कार्ड और वोटर आईडी कार्ड, पासपोर्ट सब कुछ बनवाने में कोई मुश्किल नहीं होती थी।

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

दिल्ली और मुंबई में बांग्लादेशी कहां से आते हैं, कैसे इन शहरों में बस जाते हैं और वोटर बन जाते हैं? इसका खुलासा दिल्ली पुलिस ने किया है। फरवरी 2025 में दिल्ली विधानसभा चुनाव होने हैं। इसलिए दिल्ली में अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशी और राहिंग्या सुर्खियों में हैं। दिल्ली में बांग्लादेशियों और रोहिंग्यों का सवाल सिर्फ कानूनी और तकनीकी ही नहीं है, ये पूरी तरह से राजनीतिक भी है। घुसपैठ कर बांग्लादेश से आए मुसलमान पहले कांग्रेस का वोट बैंक थे। अब वो आम आदमी पार्टी के साथ हैं। दिल्ली में जब इनकी तलाश शुरू हुई, वोटर सूची से नाम कटने शुरू हुए तो आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल सबसे ज्यादा बोखलाए। उन्होंने भ्रम फैलाने की कोशिश की कि भाजपा दिल्ली में रहने वाले पूर्वांचल और बिहार के मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से कटवा रही है। उनका यह नैरेटिव नहीं चला तो सवाल किया कि जो बांग्लादेशी सीमा पार कर बंगाल, बिहार, झारखंड और असम होते हुए दिल्ली तक आ गए, उन्हें केंद्रीय गृह मंत्रालय क्यों नहीं रोक पाया? केजरीवाल ने सवाल किया कि देश की सीमाओं से घुसपैठ करने वाले रोहिंग्यों और बंग्लादेशियों को केंद्र सरकार भारत की सीमा में कैसे घुसने दे रही है? देश में जब भी बांग्लादेशी घुसपैठियों की चर्चा होती है तो इसे सबसे पहले वोट बैंक की नजर से देखा जाता है। लेकिन ये समस्या अकेले दिल्ली की नहीं है, बल्कि पूरे भारत की है। 20 साल पहले 2004 में सरकार ने संसद में बताया था कि देश में बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या करीब 2 करोड़ है। उस समय दिल्ली में 6 लाख बांग्लादेशी घुसपैठियों के होने का दावा किया गया था। 2013 में यूपीए सरकार के समय भी यही आंकडे दोहराए गए थे, लेकिन कभी किसी सरकार ने बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों की पहचान कर, उन्हें डीपोर्ट करने की ईमानदार कोशिश नहीं की। बांग्लादेश में हिंदुओं पर कट्टरपंथियों ने अत्याचार शुरू किए, हिंदुओं के धर्म स्थलों में आगजनी व तोड़फोड़ की, हिंदू महिलाओं के साथ दुराचार, धर्मान्तरण और हिंदुओं की सरेआम हत्या की गई तो अवैध रूप से भारत में रहने वाले बांग्लादेशियों को खदेड़ने का मुद्दा जोरशोर से उठा। इसके बाद ही बटेंगे तो कटेंगे, एक हैं तो सेफ हैं जैसे नारे निकले।

9000 संदिग्ध मिले

दिल्ली के उप राज्यपाल वीके सक्सेना के आदेश पर दिल्ली में अवैध घुसपैठियों की जांच दिल्ली पुलिस कर रही है। मीडिया में चल रही खबरों के मुताबिक दिल्ली पुलिस ने राजधानी में 275 अवैध बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान की है। झुग्गी बस्तियों में रहने वालों के दस्तावेजों की जांच की तो 9000 संदिग्ध लोग मिले। आउटर दिल्ली में बांग्लादेशी घुसपैठियें छिपकर रहते हैं। इन बांग्लादेशी नागरिकों के पास भारत में रहने के लिए कोई वैध दस्तावेज नहीं हैं। दिसंबर में 30 बांग्लादेशियों सहित 36 लोगों को गिरफ्तार किया गया। दिल्ली पुलिस 38 बांग्लादेशी नागरिकों को उनके देश भेज चुकी है। इनमें 11 वो बांग्लादेशी थे जो पर्यटन वीजा लेकर भारत आए थे और वीजा अवधि समाप्त होने के बाद भी दिल्ली के महीपालपुर में रह रहे थे। पुलिस जांच के दौरान बहुत से घुसपैठिए अपना कोई दस्तावेज पेश नहीं कर सके। इनमें से तमाम घुसपैठियों ने भारत के ही दूसरे राज्यों का मूल निवासी होने का दावा किया है। अब दिल्ली पुलिस ऐसा दावा करने वालों के राज्यों से जानकारी जुटा रही है। जिसके बाद कार्रवाई होगी। फिलहाल वैरिफीकेशन होने तक जो शक के दायरे में हैं, उन पर खुफिया नजर रखी जाएगी। दक्षिणी जिला पुलिस ने जिन 25 बांग्लादेशी घुसपैठियों को डिपोर्ट किया, उनमें से आठ एक ही परिवार के थे। इनमें से जहांगीर, उसकी पत्नी परीना बेगम, उसके चार बेटे जाहिद, आहिद, सिराजुल, वाहिद और दो बेटियां फातिमा व आशिमा दिल्ली में रंगपुरी इलाके में अवैध रूप से रह रहे थे। सभी मूल रूप से बांग्लादेश के मदारीपुर जिले के केकरहाट गांव के रहने वाले हैं। इन्हें एफआरआरओ के समक्ष पेश कर बांग्लादेश भेज दिया गया है। यह परिवार पहले पहचान छिपाकर रंगपुरी की बंगाली बस्ती में रहता था।

बीस रुपये में बांग्लादेशी घुसपैठिए भारत के नागरिक बन जाते हैं, वोटर लिस्ट में उनका नाम आ जाता है, वोट डालकर सरकार बनाते हैं और सभी सरकारी योजनाओं का फायदा उठाते हैं, यह एक तरह से भारत के नागरिकों के पेट पर लात मारने के समान है।

छह महीने पहले ही श्मशान स्थल के पास नरेंद्र नाम के शख्स के प्लॉट पर किराए का कमरा लिया। इसी प्लॉट पर कबाड़ की दुकान खोल ली। परिवार ने बांग्लादेश से जुड़े अपने पहचान संबंधी सभी दस्तावेज नष्ट कर दिए थे और खुद को बंगाली बताते थे। भाषा, कद-काठी और रंग-रूप के मामले में बंगाली और बांग्लादेशी में अंतर कर पानी मुश्किल है। हालांकि सत्यापन में जब इनकी असलियत सामने आई तो पुलिस ने इन्हें वापस इनके देश भेजने में देर नहीं लगाई।

घुसपैठिए की हत्या से खुलासा

साउथ दिल्ली के डीसीपी अंकित चौहान ने मीडिया को बताया कि गिरफ्तार साहिल सहगल एक वेबसाइट के जरिए महज 20 रुपये में फर्जी आय प्रमाण-पत्र, फर्जी जन्म प्रमाण-पत्र, एड्रेस प्रूफ बनता था। इन नकली प्रमाण-पत्रों का सत्यापन भी सस्ते में हो जाता था। उसके बाद नकली प्रमाण-पत्रों से असली आधार कार्ड, पैन कार्ड और वोटर आईडी कार्ड, पासपोर्ट सब कुछ बनवाने में कोई मुश्किल नहीं होती थी। यानी बीस रुपये में बांग्लादेशी घुसपैठिए भारत के नागरिक बन जाते हैं। वोटर लिस्ट में उनका नाम आ जाता है, वोट डालकर सरकार बनाते हैं और सभी सरकारी योजनाओं का फायदा उठाते हैं। यह एक तरह से भारत के नागरिकों के पेट पर लात मारने के समान है। लेकिन सबसे मुश्किल यह है कि बांग्लादेशी जितनी आसानी से भारत में घुस आते हैं, उन्हें डिपोर्ट करना उतना ही कठिन होता है, क्योंकि किसी को विदेशी साबित करना जांच एजेंसियों का काम है। घुसपैठियों के पास वैध दस्तावेज नहीं होते जिससे उन्हें घुसपैठिया साबित किया जा सके। लिहाजा घुसपैठिया साबित करने के लिए सालों कोर्ट में केस चलते रहते हैं। सिर्फ 20 रुपये में घुसपैठियों को भारत का नागरिक बनाने का खुलास बड़ा दिलचस्प है। 20 अक्टूबर 2024 को दिल्ली के संगम विहार में सेंटू शेख नाम के शख्स की हत्या हुई थी। पुलिस ने जब इस मर्डर की जांच के दौरान उसके घर की तलाशी ली, तो पुलिस को 21 आधार कार्ड, 6 पैन कार्ड और 4 वोटर आईडी मिली।

सारे दस्तावेज असली जैसे थे। जिन लोगों के वोटर कार्ड थे, पुलिस ने उनसे सख्ती से पूछताछ की तो पता लगा कि वे चारों बांग्लादेशी हैं। उनके आधार कार्ड, पैन कार्ड और वोटर आईडी बन चुकी हैं। सेंटू शेख ही उन्हें बांग्लादेश से भारत लाया था और पैसों के लेन-देन के झगड़े में उसकी हत्या हुई थी। बांग्लादेशी नागरिकों को भारत में लाने का काम सेंटू शेख के लिए बड़ा आसान था। सेंटू शेख बांग्लादेश के लोगों को पश्चिम बंगाल के रास्ते भारत में घुसपैठ कराता था। ये घुसपैठिए पहले बंगाल और झारखंड में आकर ठहरते थे। वहां से धीरे-धीरे दिल्ली आते थे। दिल्ली में सेंटू शेख उन सबको कंप्यूटर सेंटर चलाने वाले साहिल सहगल से मिलवाता था। यहां सात रुपये में बर्थ सर्टिफिकेट और बीस रुपये में इनकम सर्टिफिकेट बन जाता था। इसी सेंटर पर बांग्लादेशी घुसपैठियों के नकली बर्थ सर्टिफिकेट, पढ़ाई-लिखाई के प्रमाण-पत्र भी तैयार हो जाते थे।

2004 में सरकार ने संसद में बताया था कि देश में घुसपैठियों की संख्या 2 करोड़ है, उस समय दिल्ली में 6 लाख घुसपैठिया बताए गए थे, 2013 में यूपीए सरकार ने भी यही आंकडे दोहराए थे, लेकिन कभी किसी सरकार ने बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों को डीपोर्ट करने की ईमानदार कोशिश नहीं की।

मुसलमानों ने उठाया घुसपैठियों का मुद्दा

33 मौलाना और हजरत निजामुद्दीन दरगाह से जुड़े मुस्लिम प्रतिनिधियों ने दिल्ली के उपराज्यपाल और पुलिस कमिश्नर को एक ज्ञापन सौंपा था। जिसमें उन्होंने दिल्ली में अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की मांग की थी। मुस्लिम प्रतिनिधियों की मांग के बाद ही दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने दिल्ली पुलिस को आदेश दिया। जिसमें कहा गया कि दो महीने का विशेष अभियान चला कर दिल्ली में अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशियों व रोहिंग्यों पर कार्रवाई की जाए। आदेश में अवैध रूप से सड़क, पार्क, फुटपाथ आदि पर रहने वाले घुसपैठियों पर एक्शन लेने के निर्देश भी हैं। उपराज्यपाल के घुसपैठियों का पता लगाने के आदेश के बाद एमसीडी की भी इंट्री हो गई है। दिल्ली नगर निगम के अधिकारी भी राष्ट्रीय राजधानी में रहने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ अभियान चला रहे हैं। एमसीडी के सभी 12 जोन में घुसपैठियों के अतिक्रमण का पता लगाकर कार्रवाई की जा रही है। इसके अलावा एमसीडी ने सभी सरकारी स्कूलों को आदेश दिया है कि वे अपने यहां छात्रों के दस्तावेजों की जांच करें। ताकि अवैध रूप से घुसपैठ करने वाले बांग्लादेशी नागरिकों के बच्चों का सत्यापन हो सके। इससे पहले दिल्ली के पुलिस कमिश्नर रहे अजय राज शर्मा ने 2003 में अलग से बांग्लादेशी सेल बनाया था। ये सेल अब भी काम करता है। दिल्ली पुलिस के इस सेल का काम राजधानी में अवैध बांग्लादेशी नागरिकों के बारे में पता लगाना और उनको पकड़ना है।

घुसपैठियों में खतरनाक आतंकी

सिर्फ दिल्ली ही नहीं असम से लेकर केरल तक और पश्चिम बंगाल से लेकर महाराष्ट्र तक बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ एक्शन हो रहा है। पुलिस कार्रवाई के दौरान चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। बांग्लादेश के जिस आतंकवादी को असम पुलिस ने केरल से गिरफ्तार किया, उसके तार अल कायदा से जुड़े हैं। वो अंसारुल्लाह बांग्ला टीम का सक्रिय सदस्य है। इस संगठन पर भारत, ब्रिटेन, अमेरिका और बांग्लादेश में प्रतिबंध है, लेकिन ये बांग्लादेशी घुसपैठिया भारत में अंसारुल्लाह बांग्ला टीम के लिए स्लीपर सेल का नेटवर्क तैयार कर रहा था। इसी तरह महाराष्ट्र में जो बांग्लादेशी पकड़े गए, वे सभी वोटर बन चुके हैं। हैरानी की बात ये है कि लोकसभा, विधानसभा चुनावों में उन्होंने वोट भी डाले हैं। अब मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने महाराष्ट्र में बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान के लिए अभियान शुरू कराया है। महाराष्ट्र में डिटेंशन सेंटर बनाए जा रहे हैं। अवैध रूप से भारत में रहने वाले बांग्लादेशियों को डिपोर्ट किया जाएगा। किंतु क्या बांग्लादेशियों को पकड़ना आसान है? मुंबई में पिछले तीन साल में 686 बांग्लादेशी पकड़े गए लेकिन 222 को ही डिपोर्ट किया जा सका। बाकी केस अभी अदालतों में विचाराधीन हैं। बांग्लादेशी घुसपैठियों के आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने की खुफिया रिपोर्ट मिलती रहती हैं। लेकिन उनका कोई रिकॉर्ड पुलिस के पास नहीं होता, इसलिए आसानी से पकड़े भी नहीं जाते। कुल मिलाकर घुसपैठिये समाज और पुलिस दोनों के लिए मुसीबत बने रहते हैं।

कॉर्बेट की यादों से जुड़ा गर्नी हाउस

नवंबर 1947 में मिस मार्गरेट विनीफ्रेड कॉर्बेट ने वसियत के आधार पर गुर्नी हाउस कलावती वर्मा को बेच दिया, जो शारदा प्रसाद वर्मा की पत्नी थी, कलावती वर्मा प्रसिद्ध उद्योगपति और लार्ड वेवेल की परिषद के सदस्य रहे जेपी श्रीवास्तव की बहन थी, शारदा प्रसाद वर्मा भारत के राष्ट्रपति डा.राजेंद्र प्रसाद के रिश्तेदार थे।

पहाड़ों के सफर का प्लान बनाते ही हर किसी के जहन में हरी-भरी वादियां फूलों की घाटियां, झरने झीलें और जंगलों का नजारा घूमने लगता है। उत्तराखंड के कुमाऊं में सबसे फेमस टूरिस्ट डेस्टिनेशन में नैनीताल का नाम सबसे पहले आता है। हर कोई झील के इस शहर में आकर सुकून चाहता है। इसलिए उत्तराखंड का नैनीताल बेहद खूबसूरत डेस्टीनेशन कहलाता है। इस पर्यटन नगरी में सालाना हजारों की संख्या में सैलानी आते हैं और नैनी झील में जहां नौकाविहार करते हैं वहीं नैना देवी मंदिर जाकर मां का आशीर्वाद लेना नहीं भूलते। नैनीताल में ही वन्यजीवों को करीब से देखने के लिए जू है। लेकिन इसी नैनीताल में पर्यटकों की नजरों से ओझल एक अमूल्य धरोहर भी है। सर्व विदित है कि नैनीताल जिला मशहूर शिकारी जिम कॉर्बेट की यादों से जुड़ा हुआ है। जिम कॉर्बेट का जन्म 25 जुलाई 1875 को नैनीताल में ही हुआ था। जिम कॉर्बेट नैनीताल के जिस घर में रहते थे उसे गर्नी हाउस कहा जाता है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय नैनीताल के इसी घर में बिताया। जिम कॉर्बेट को नैनीताल में जीवंत रखने के लिए गर्नी हाउस को आज भी उनकी यादों के तौर पर सहेज कर रखा गया है। उनकी नैनीताल से जुड़ी यादों को देखने के लिए देश-विदेश से सैलानी कालाढूंगी के नेशनल टाइगर रिजर्व जिम कॉर्बेट जाकर वन्यजीवों को देखना चाहते हैं, लेकिन अधिकांश सैलानियों को गर्नी हाउस के इतिहास के बारे में जानकारी नहीं है। गर्नी हाउस में जिम कॉर्बेट के जीवन से जुड़ी कई अहम चीजें आज भी रखी हैं। 1947 में भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली। जिसके बाद जिम कॉर्बेट केन्या में जाकर बस गए।

अफलज फौजी
नैनीताल

आदमखोर बाघों का शिकार किया

नैनीताल के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो.अजय रावत कहते हैं कि जिम कॉर्बेट की स्कूली शिक्षा नैनीताल में अब के बिरला विद्या मंदिर से हुई, जिसे अंग्रेजों के शासनकाल में फिलेंडर स्मिथ कॉलेज के नाम से जाना जाता था। अपने जीवन का लंबा समय व्यतीत करने के बाद 17 साल की उम्र में जिम कॉर्बेट बिहार के मोकामा घाट चले गए। वहां उन्होंने फ्यूल इंस्पेक्टर के तौर पर नौकरी की। 1920 में जिम कॉर्बेट नौकरी छोड़कर फिर नैनीताल आ गए। इस दौरान अभिवाजित उत्तर प्रदेश के कुमाऊं में आदमखोर बाघों ने लोगों को अपना निवाला बनाना शुरू किया, तो जिम कॉर्बेट ने लोगों की रक्षा का जिम्मा उठाते हुए आदमखोर बाघों का शिकार शुरू किया। उन्होंने लोगों को सुरक्षा के लिए कई आदमखोर बाघों को अपना निशाना बनाया। वह नैनीताल नगरपालिका के सीनियर वाइस चेयरमैन भी रहे हैं। 1921 के बाद जिम कॉर्बेट ने नैनीताल के गर्नी हाउस में ही रहना शुरू कर दिया था। 1881 में निर्मित, गुर्नी हाउस कॉर्बेट को उनके माता-पिता के निधन के बाद विरासत में मिला था। इसका नाम कॉर्बेट की मां मैरी जेन गुर्नी के नाम पर रखा गया है। अब नैनीताल का गुर्नी हाउस ऐतिहासिक औपनिवेशिक कॉटेज बन गया है, जो कभी प्रसिद्ध ब्रिटिश शिकारी-संरक्षणवादी, लेखक, फोटाग्राफर और प्रकृतिवादी जिम कॉर्बेट का निवास स्थान होता था। यह नैनीताल झील के पास अयारपट्टा पहाड़ी पर है। गुर्नी हाउस नैनीताल की औपनिवेशिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इतिहास, प्रकृति और साहित्य में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

अधिकांश सैलानियों को गर्नी हाउस के इतिहास के बारे में जानकारी नहीं है, गर्नी हाउस में जिम कॉर्बेट के जीवन से जुड़ी कई अहम चीजें आज भी रखी हैं, 1947 में भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली, जिसके बाद जिम कॉर्बेट केन्या में जाकर बस गए।

पोस्टमास्टर थे जिम कॉर्बेट के पिता

नैनीताल का गर्नी हाउस 1881 में अस्तित्व में तब आया जब नैनीताल के पोस्टमास्टर क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट की मृत्यु हुई। उनके निधन के बाद उनकी पत्नी मैरी जेन गुर्नी कॉर्बेट और अपने नौ बच्चों के साथ अल्मा हाउस से अयारपट्टा की पहाड़ी पर चली गई। यहीं मैरी जेन गुर्नी कॉर्बेट ने गुर्नी हाउस बनवाया। प्रो.अजय रावत कहते हैं कि गर्नी हाउस का अभिप्राय किसी पुराने मकान के टूटने से उसके अवशेषों को निर्माण सामग्री के तौर पर उपयोग करके दोबारा बनाया गया नया घर, गर्नी हाउस कहलाता है। 1880 में नैनीताल की आल्मा हिल में भूस्खलन हुआ था, जिसके बाद जिम कॉर्बेट की मां ने 1881 में नैनीताल के अयारपट्टा में पुराने भवन को तुड़वा कर नए भवन का निर्माण कराया, जिसे आज गर्नी हाउस के नाम से जाना जाता है। 3 मार्च 1899 को वसीयत के द्वारा मैरी जेन गुर्नीी कार्बेट ने गुर्नी हाउस एस्टेट अपनी बेटी मिस मार्गरेट विनीफ्रेड कॉर्बेट (मैगी) को दे दी। जो अपनी मां की मृत्यु के बाद इस संपत्ति की एकमात्र और पूर्ण मालिक बन गई। मैगी और उनके भाई जिम कॉर्बेट 1947 तक इसी घर में रहे। जब जिम कॉर्बेट ने केन्या जाने का फैसला किया तो मैगी ने भी भारत छोड़ने का इरादा बना लिया। लिहाजा नवंबर 1947 में मिस मार्गरेट विनीफ्रेड कॉर्बेट ने वसियत के आधार पर गुर्नी हाउस कलावती वर्मा को बेच दिया। जो शारदा प्रसाद वर्मा की पत्नी थी। कलावती वर्मा प्रसिद्ध उद्योगपति और लार्ड वेवेल की परिषद के सदस्य रहे जेपी श्रीवास्तव की बहन थी। शारदा प्रसाद वर्मा भारत के राष्ट्रपति डा.राजेंद्र प्रसाद के रिश्तेदार थे। शारदा प्रसाद वर्मा अपने बच्चों को नैनीताल के प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ाना चाहते थे इसलिए नैनीताल में घर की तलाश शुरू की। इस तरह जिम कार्बेट का ऐतिहासिक आवास वर्मा परिवार का आशियाना बन गया। उनकी दो पीढ़ियां इस घर में रही।

गुर्नी हाउस में बाघ की खाल

कलावती वर्मा के बच्चों ने मई मई 2006 में यह गर्नी हाउस बेचने का फैसला किया तो शारदा प्रसाद वर्मा की ही पोत्री नीलांजना डालमिया ने इसे खरीद लिया। जिसके बाद से यह परिवार आज तक कॉर्बेट की विरासत और उनकी चीजों को संजोए हुए है। खास बात यह है कि जिम कॉर्बेट केन्या में बसने के बाद भी अपने दिल से नैनीताल को नहीं निकाल पाए थे। जिम कॉर्बेट केन्या में रहते हुए हमेशा नैनीताल को याद किया करते थे। यहां तक कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी कब्र पर उनके मूल पते के रूप में नैनीताल का नाम दर्ज किया गया है। इससे पता चलता है कि जिम कॉर्बेट मरते दम तक अपनी जन्मभूमि यानी नैनीताल को याद करते रहे। भले ही जिम कॉर्बेट का जन्म नैनीताल में हुआ हो लेकिन उनकी जन्मस्थली दशकों तक पर्यटकों की नजरों से ओझल रही है। क्योंकि इस इमारत में पर्यटकों का प्रवेश वर्जित था। गुर्नी हाउस का स्वामित्व अब निजी व्यक्तियों के पास है, उन्होंने इस परिसर को आम जनता के लिए खोल दिया है, जिससे पर्यटकों को एस्टेट की दीवारों के भीतर समाहित इतिहास में डूबने को मिलता है। गुर्नी हाउस में पर्यटकों का गर्मजोशी से स्वागत होता है। गुर्नी हाउस में लगी कलाकृतियों और घर के ऐतिहासिक कमरों के बारे में बताने के लिए भ्रमण भी कराया जाता है। घर के हर कमरे में कई प्राचीन कलाकृतियां लगी हैं। घर में असली शिकार किए गए जानवरों को देखा जा सकता है। दशकों पुराने शिकार किए गए जानवरों का संग्रहालय न होने के बावजूद बहुत अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है। घम में कुछ ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें, जिम द्वारा लिखी गई कुछ किताबें और बहुत कुछ देखने को मिलेगा। असली बाघ की खाल देखने और महसूस करने को मिलेगा।

नैनीताल के पोस्टमास्टर क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट के निधन के बाद उनकी पत्नी मैरी जेन गुर्नी कॉर्बेट अपने नौ बच्चों के साथ अल्मा हाउस से नैनीताल की अयारपट्टा की पहाड़ी पर चली गई, यहीं मैरी जेन गुर्नी कॉर्बेट ने गुर्नी हाउस बनवाया।

सूखाताल में दफन है जिम के माता-पिता

नैनीताल में पर्यटन ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में बढ़ना शुरू हुआ, मुख्य रूप से ब्रिटिश अधिकारियों और अभिजात वर्ग के बीच जो भारतीय गर्मी से राहत चाहते थे वो नैनीताल आते थे। नैनीताल के आकर्षण, शांत जलवायु, सुंदर दृश्यों और अद्वितीय सांस्कृतिक ताने-बाने ने इसे भारत और दुनिया भर के पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हिल स्टेशन बना दिया। सैलानी पर्यटन स्थलों के जिन स्थानों पर जाते हैं, वहां की सांस्कृतिक विरासत में रुचि अवश्य रखते हैं, गुर्नी हाउस भी ब्रिटिशकाल की समृद्ध संस्कृति का अनुभव कराता है और औपनिवेशिक इतिहास तथा जिम कॉर्बेट की विरासत के बारे में जानने का मौका देता है। 1947 में भारत की आजादी के बाद नैनीताल और गुर्नी हाउस जैसी जगह धीरे-धीरे अपने देश की विरासत को जानने के इच्छुक भारतीय पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गईं। जैसे-जैसे जिम कॉर्बेट और उनके वन्यजीव संरक्षण में योगदान की कहानी प्रसिद्ध हुई, गुर्नी हाउस उनके काम के प्रशंसकों, वन्यजीव उत्साही लोगों और उनके साहित्यिक योगदान से परिचित लोगों, विशेष रूप से कुमाऊं के आदमखोरों के लिए एक तीर्थ स्थल के रूप में विकसित हुआ। गुर्नी हाउस के ऐतिहासिक महत्व को पहचानते हुए, नैनीताल के सांस्कृतिक परिदृश्य को संरक्षित करने के प्रयास के रूप में, गुर्नी हाउस के संरक्षण के प्रयास किए गए हैं। नैनीताल के ही सूखाताल में स्थित सेंट जॉन्स चर्च से सटे कब्रिस्तान में जिम कॉर्बेट के माता-पिता की कब्र आज भी है। इस कब्रिस्तान में कुमाऊं के पहले कमिश्नर ल्यूशिंगटन की कब्र भी है। गर्नी हाउस से सटा कब्रिस्तान भी ऐतिहासिक है। जिसका निर्माण 1842 में हुआ था, हालांकि तब नैनीताल का नगरीकरण शुरू हो चुका था। उस दौर में जिन अंग्रेजों की मृत्यु होती थी, उनको गर्नी हाउस के पास के कब्रिस्तान में ही दफनाया जाता था।

अभिव्यक्ति का त्यौहार होली

स्व.पंडित तारा प्रसाद पांडे (तारी मास्साब) ने बाल्यकाल में 7 वर्ष की आयु से ही गायन शुरु कर दिया था, होली कि बैठकों में वह अपने पिता केशव दत्त पांडे की उंगली पकड़ कर आते थे, 12-13 वर्ष कि उम्र में ही उन्होंने बड़ी-बड़ी होली बैठकों में गाना शुरु कर दिया था।

बृजमोहन जोशी
नैनीताल

ऋतुराज वसंत के आगमन और फाल्गुन के प्रारंभ होते ही उत्तर भारत में सर्दी का खुशनुमा मौसम उमंग भरे दिलों में सिरहन भर देता है। वसंत फूलों की मादकता से मानव मन में रंग घोल देता है। कुमाऊं में फगुनाहट के परिवेश में होली पर्व पर गीत संगीत के माध्यम से अभिव्यक्ति की अपनी परंपरा है। कुमाऊं में होली गायकों में तारी मास्साब के नाम से जाने जाने वाले स्व.तारा प्रसाद पांडे ने होली संगीत का सामयिक शुद्धिकरण ही नहीं किया वरन नए रागों और तालों में होली गाकर नए आयाम प्रस्तुत किए। होली गायन में स्थानीय शैली में ठुमरी अंग की बारीकियों को प्रस्तुत करने का श्रेय स्व. तारा प्रसाद पांडे को ही जाता है। कुमाऊं में होली की भूमिका पूस मास (पौष) के पहले इतवार से प्रारंभ हो जाती है। इस दिन बैठकी होली का जो सिलसिला शुरू होता है वो होली के दंपति टीके तक बदस्तूर जारी रहता है। यहां होली की दो शैलियां प्रचलित हैं। खड़ी होली और बैठकी होली। खड़ी होली ग्रामीण अंचल में घर के आंगन या खुले स्थान पर गाई जाती है। टोलियों में सामूहिक रूप से पग संचालन के साथ गाई जाने वाली खड़ी होली है। इसमें आंचलिक लोक संगीत के तत्वों का समावेश होता है। वृत्ताकार श्रृंखला में पद संचालन की कलात्मक शैली के तहत मजीरा, खड़ताल और ढोलक की थाप के साथ गाई जाने वाली होली के गीतों में उल्लास झलकता है।

बैठकी होली

बैठकी होली का समां अपने आप में अनोखा होता है। कुमाऊं की होली बैठकों में हिंदुस्तानी संगीत की उपशास्त्रीय विधा अपने आंचलिक रंग में दमकती है। राग रागनियों में रचे बसे गीतों से मुख्य गायक रागदारी की शुरुआत करता है, तो रसिक श्रोता झूम उठते हैं। बैठकी होली में शरीक होना दरअसल महफिल में आए गुणी तथा रसिक श्रोताओं की गायन में भागीदारी होती है। जो मुख्य गायक को प्रात्साहित करते हैं साथ ही होली गायन के रंग रस में गोते लगाते हैं। पीलू, श्याम, कल्याण, काफी जंगला, खमाज, झिझोटी, शहाना, देश, बिहाग, जोगिया, जैजैवंती, भैरवी आदि रागों में गाए जाने वाली होलियां पारस्परिक रूप से समय के अनुसार गाई जाती है। बैठकी होली का मूल भारतीय हवेली संगीत में निहित है। जानकार लोग बताते हैं कि शास्त्रीय संगीत के घरानेदगार संगत्तज्ञ जब कुमाऊं भ्रमण पर आए तो उन्होंने ब्रज की होली की कुछ बंदिशें यहीं पर गाई थी। लम्बे समय के बाद तथा पीढ़ी दर पीढ़ी होली गायन की जो तकनीक कुमाऊं की आंचलिक विशेषता बनी उसमें स्वर, सामजस्य, स्वाभाविक कशिश और रंगत ने होली गायन की लोकप्रियता को बरकरार रखा। बैठकी होली अमूमन शहरी क्षेत्रों में अधिक होती है। जबकि ग्रामीण अंचल में खड़ी होली का प्रचलन अधिक है। इसके अलावा होली का एक रूप है और है, वो है महिला होली।

कुमाऊं में महिलाओं की पारंपरिक होली की बात ही निराली है, यहां महिलाएं पारंपरिक कुमाऊंनी होली की साड़ी पहनकर खड़ी और बैठकी होली में हिस्सा लेती हैं, महिलाओं की कुमाऊंनी होली की साड़ी और गले में गलोबंद उनकी सुंदरता में चार चांद लगाते हैं।

महिला होली

कुमाऊं में होली को लेकर विशेष प्रेम है। महिला होली में अधिक अनुशासित होती है अर्थात बैठक में सबसे पहले गणेश की होली गाई जाती है उसके बाद अन्य मुकाम आते हैं और अंत में आशीष अवश्य दिया जाता है। चाहे आठ दस घरों में बैठक हो या दस बारह घरों में आशीष अवश्य दिया जाता है। सभी घरों में यही क्रम रहता है। बैठकी होली में केवल महिलाएं ही भाग लेती हैं। इसके गीत भी प्रमुखतः महिलाओं पर ही आधारित होते हैं। महिलाएं अपने घरों में आस-पड़ोस की महिलाओं को एकत्र कर बैठकी होली की महफिल सजाती हैं। बहुत सी महिलाएं कालोनियों और मोहल्लों के साथ गांवों में घर-घर जाकर खड़ी होली, संगीत होली मनाती हैं। महिलाएं तरह-तरह के स्वांग रचकर हंसी ठिठोली करती हैं। कुमाऊं में महिलाओं की पारंपरिक होली की बात ही निराली है। यहां महिलाएं अपनी पारंपरिक कुमाऊंनी होली की साड़ी पहनकर खड़ी और बैठकी होली में हिस्सा लेती हैं। महिलाओं की कुमाऊंनी होली की साड़ी और गले में गलोबंद उनकी सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। होली की पारंपरिक कुमाऊंनी साड़ी होल्यार महिलाओं की पहचान बन चुकी है। होली आने से पहले ही बाजार में होली की रंग बिरंगी साड़ियां आ जाती हैं। अमूमन समूह के रूप में महिलाएं एक डिजाइन और कलर की होली की साड़ी खरीदना पसंद करती हैं। कुमाऊंनी होली में पारंपरिक परिधान का काफी महत्व है। अपनी संस्कृति को देखते हुए होल्यार महिलाएं कुमाऊंनी वेशभूषा के अनुसार होली के वस्त्र पहनती हैं। इससे पहाड़ी संस्कृति का प्रचार-प्रसार भी हो जाता है। ये साड़ी मुख्यतः लाल और सफेद रंग की होती है। इनमें सफेद साड़ी के ऊपर लाल रंग के बुरांश और गुलाब के फूल बने होते हैं। होल्यार महिलाओं के लिए साडियां सिंथेटिक, सूती और सिल्क में बनाई जाती हैं।

"कुमाऊं में फगुनाहट के परिवेश में होली पर संगीत के माध्यम से अभिव्यक्ति की परंपरा है, कुमाऊं में होली गायकों में तारी मास्साब के नाम से पहचाने जाने वाले स्व.तारा प्रसाद पांडे ने होली गीत का शुद्धिकरण ही नहीं किया वरन नए रागों और तालों में होली गाकर नए आयाम पेश किए।"

स्व.तारा प्रसाद पांडे को संगीत का वरदान

इस वर्ष 15 दिसंबर 2024 से अर्थात पौष (पूस) मास के पहले इतवार से बैठकी होली आरंभ हो गई हैं। इस बैठकी होली, जिसमें वसंत पंचमी तक भक्ति, दार्शनिक भावों व आध्यात्मिक रचनाओं को गाया जाता है। इन्हें निर्वाण की होली कहा जाता है। वसंत पंचमी से श्रृंगार व शिवरात्रि से धूम की होलियों के गायन के साथ बैठक कक्ष में अबीर गुलाल का टीका तथा गुड़ से मुंह मीठा कराने की परंपरा है। लोक मान्यताओं के अनुसार इसे 200 से 300 वर्ष पूर्व के आसपास कुमाऊं में प्रचलित होना माना जाता है। बैठकी होली के इसी क्रम में एक नाम ऐसा भी आया जो नाम नहीं तारा था। जिस प्रकार तारा कभी अस्तित्वहीन नहीं होता उसका अस्तित्व सदा-सदा के लिए होता है। जब कहीं भी होली बैठकों का आयोजन होगा, संगीत सभाओं का आयोजन होगा तब-तब स्व.पंडित तारा प्रसाद पांडे (तारी मास्साब) का नाम रूपी तारा चमकता रहेगा। स्व. तारा प्रसाद पांडे को संगीत का वरदान प्रकृति से प्राप्त था। उन्होंने बाल्यकाल में 7 वर्ष की आयु से ही गायन शुरू कर दिया था। होली कि बैठकों में वह अपने पिता केशव दत्त पांडे की उंगली पकड़ कर आते थे। 12-13 वर्ष कि उम्र में ही उन्होंने बड़ी-बड़ी होली बैठकों में गाना शुरू कर दिया था। इनकी अदभुत संगीत प्रतिभा से सभी लोग चकित रह जाते थे। धीरे-धीरे समय के साथ पंडित तारा प्रसाद पांडे संगीत में पारंगत हो गए। उन्होंने भारत खंडे संगीत महाविद्यालय लखनऊ से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात संगीत ही इनके जीविकोपार्जन का साधन बन गया। उन्होंने अपनी जीवन यात्रा संगीत शिक्षक के रूप में शुरू कर अपना जीवन संगीत को समर्पित कर दिया। उन्होंने 1987 में प्रधानाचार्य के पद से अवकाश ग्रहण किया। अपने जीवन के 58 वर्षों में से लगभग 45-46 वर्ष उन्होंने पूरे कुमाऊं में अपने मधुर स्वर बिखेरे तथा कुमाऊंनी होली को रोचक तथा मोहक गायन शैली प्रदान की। होली को पूर्ण रूप से शास्त्रीय आधार देकर सर्वसाधारण में इसके प्रति रूझान पैदा किया तथा लोक प्रिय बनाया। वर्तमान में कुमाऊं को इनके संगीत ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता थी परंतु काल के क्रूर हाथों ने इन्हें हमसे मात्र 58 वर्ष की आयु में ही 7 अक्टूबर 1987 को छीन लिया। पंडित तारा प्रसाद पांडे की रिक्तता हमें सदैव अखरती रहेगी तथा इस स्थान की पूर्ति होना असंभव ही है।

बैठकी होली अमूमन शहरी क्षेत्रों में अधिक होती है, लम्बे समय के बाद तथा पीढ़ी दर पीढ़ी होली गायन की जो तकनीक कुमाऊं की आंचलिक विशेषता बनी उसमें स्वर, सामजस्य, स्वाभाविक कशिश और रंगत ने होली गायन की लोकप्रियता को बरकरार रखा।

क्या जिंदगी का ठिकाना फिरत मन काहे को भुलाना...
मृगी काहे को सोच करें, तेरा मालिक सीता राम।
इस वन में तेरो नित को बसेरा,
ब्याध ने डारो जाल री,
कूंद फांद हिरनी पार निकल गई,
हिरना फंस गए जाल।।
मृगी काहे को सोच करें... ।

खड़ी होली

खड़ी होली की खास बात ये है कि वह चीर बंधन के बाद ही गाई जाती है जबकि बैठकी होली पौष महीने से शुरू होती हैं। चीर बंधन गांव के एक जगह पर सामूहिक रूप से बांधी जाती है। होल्यारों पर लाल, हरा, पीला तथा नीला रंग छिड़का जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में होल्यार घर-घर जाकर होली के गीतों का गायन करते हैं। छरड़ी के दिन सभी होल्यारों को आशीर्वाद वचन दिया जाता है। गांव में घर-घर चीर के टुकड़े के साथ कहीं गुड़ तो कहीं आटे से बना हलवा भी दिया जाता है। होली गायन में महिलाएं भी पीछे नहीं रहती हैं। वह भी टोलियां बनाकर होली के गीतों का गायन करती हैं। खड़ी होली बैठकी होली के कुछ दिनों बाद शुरू होती है। इसका प्रसार कुमाऊं के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलता है। खड़ी होली में गांव के लोग नुकीली टोपी, कुर्ता और चूड़ीदार पायजामा पहन कर एक जगह एकत्रित होकर होली गीत गाते हैं। साथ ही ढोल-दमाऊ तथा हुड़के की धुनों पर नाचते हैं। खड़ी होली के गीत, बैठकी के मुकाबले शास्त्रीय गीतों पर कम ही आधारित होते हैं, तथा पूर्णतः कुमाऊंनी भाषा में होते हैं। होली गाने वाले होल्यार बारी-बारी गांव के प्रत्येक में घर जाकर होली गाते हैं, और उसकी समृद्धि की कामना करते हैं। ●

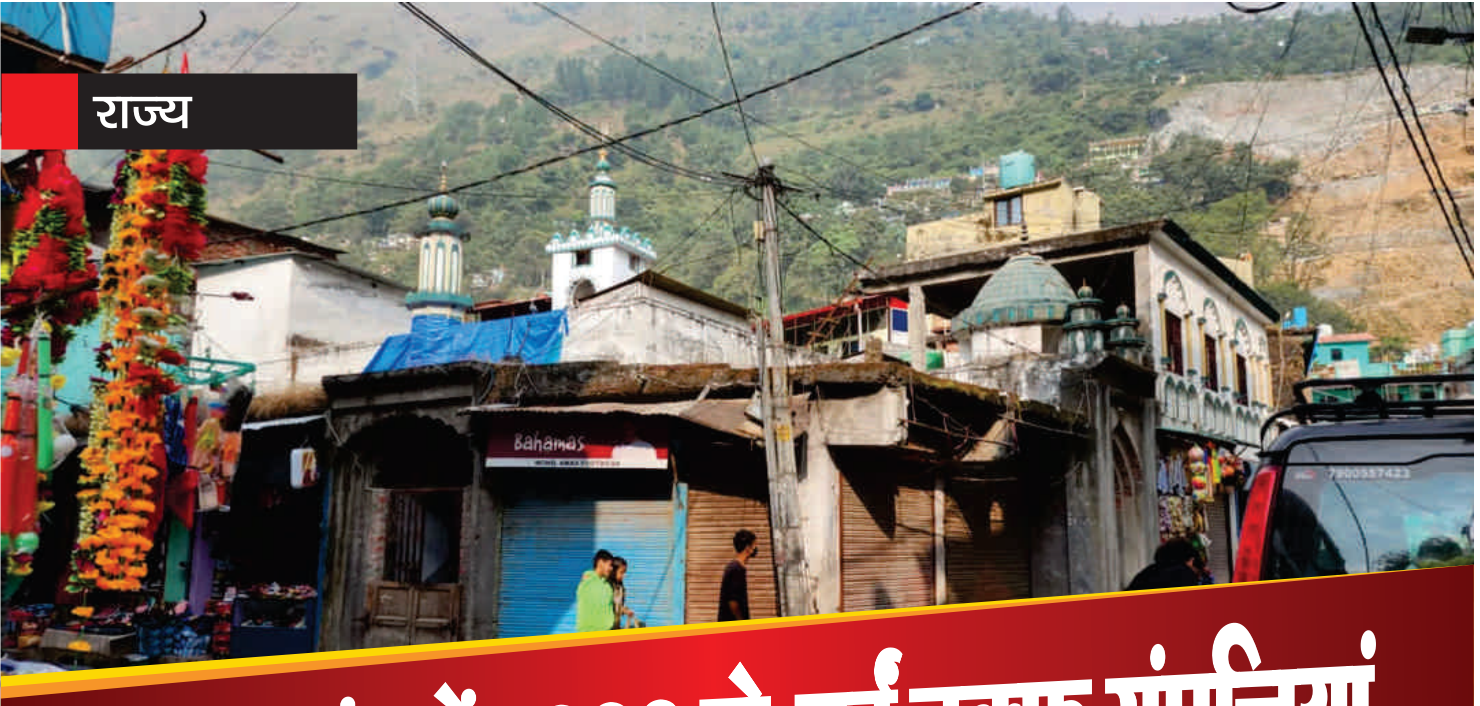

उत्तराखंड में 5000 हो गईं वक्फ संपत्तियां

सैकड़ों संपत्तियां ऐसी है जो रेलवे, वन, सिंचाई, राजस्व विभाग की जमीनों पर हैं, लेकिन उनका उल्लेख वक्फ रिकार्ड में दर्ज नहीं हैं, लेकिन जिस दिन कांग्रेस की सरकार उत्तराखंड में होगी उस दिन वक्फ संपत्तियों में किस तेजी से वृद्धि होगी इसकी कल्पना 5000 वक्फ संपत्तियों के आंकड़े से समझी जा सकती है। उत्तराखंड में भाजपा सरकार के रहते वक्फ बोर्ड इन्हें रिकार्ड में दर्ज नहीं कर पा रहा।

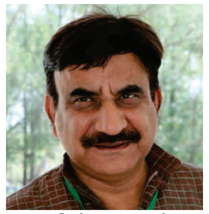

दिनेश मानसेरा
वरिष्ठ पत्रकार

कांग्रेस के शासनकाल में उत्तराखंड की डेमोग्राफी बदलने की पूरी साजिश रची गई। वोट बैंक के खेल में देवभूमि में संवेदनशील स्थानों पर रातों-रात अवैध मजारें बना दी गई। मस्जिदें और मदरसे खड़े कर दिए गए। अब पुष्कर सिंह धामी सरकार ने अवैध मजारों, मस्जिदों और मदरसों पर शिकंजा कसा तो पता चला कि विशुद्ध रूप से सनातनी देवों की भूमि उत्तराखंड में 5000 से ज्यादा वक्फ बोर्ड की संपत्तियां घोषित कर दी गई। यह सारा खेल हरीश रावत के मुख्यमंत्री रहते हुए यहां हुआ। इसलिए अब देवभूमि उत्तराखंड में डेमोग्राफी चेंज हो रही है, मुस्लिम आबादी के साथ वक्फ बोर्ड की संपत्तियों में भी अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। जो इस बात का संकेत है कि राज्य में बढ़ती मुस्लिम आबादी भविष्य में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक समस्या पैदा करने जा रही है। वक्फ बोर्ड के आंकड़े बताते हैं कि उसके रिकार्ड में 5000 से ज्यादा वक्फ संपत्तियां दर्ज हैं। इनके अलावा भी सैकड़ों संपत्तियां ऐसी है जो रेलवे, वन विभाग, सिंचाई विभाग और राजस्व विभाग की जमीनों पर अवैध कब्जा कर बनाई गई हैं, लेकिन उनका उल्लेख वक्फ बोर्ड के रिकार्ड में अभी दर्ज नहीं हैं, लेकिन भविष्य में मौका मिलते ही इन्हें भी वक्फ संपत्ति घोषित किया जा सकता है। इनमें मस्जिदें, मदरसें और मजारें शामिल है। उत्तराखंड में भाजपा सरकार के रहते भले ही वक्फ बोर्ड इन्हें रिकार्ड में दर्ज नहीं कर पा रहा हो, लेकिन जिस दिन कांग्रेस की सरकार उत्तराखंड में होगी उस दिन वक्फ संपत्तियों में किस तेजी से वृद्धि होगी इसकी कल्पना 5000 वक्फ संपत्तियों के आंकड़े को समझ कर की जा सकती है।

देवभूमि में वक्फ बोर्ड की संपत्तियां?

देवभूमि उत्तराखंड के वक्फ बोर्ड ने केंद्रीय वक्फ बोर्ड के सामने राज्य में 5183 संपत्तियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया है, इसके अलावा 205 संपत्तियों के मामले स्थानीय न्यायालयों में विचाराधीन होने की बात कही जा रही है। यानी 21 वर्षों में वक्फ बोर्ड की संपत्तियां दोगुनी हो गई हैं। 2003 में जब उत्तराखंड में नारायण दत्त तिवारी के नेतृत्व वाली कांग्रेस थी तब पहली बार उत्तराखंड वक्फ बोर्ड का गठन हुआ था। उस समय वक्फ बोर्ड के पास 2078 संपत्तियां थी। ये संपत्तियां भी यूपी वक्फ बोर्ड से उत्तराखंड वक्फ बोर्ड को विरासत में मिली थी। इनमें से 450 फाइल यूपी से उत्तराखंड आज तक नहीं पहुंची। उत्तराखंड वक्फ बोर्ड की संपत्ति सूची में मस्जिद से अधिक कब्रिस्तानों की संख्या है। पहाड़ी जिलों चमोली में 1, रुद्रप्रयाग में 1 टिहरी में 4, पौड़ी में 10, उत्तरकाशी में 1 बागेश्वर में 3, चंपावत में 6, अल्मोड़ा में 6 पिथौरागढ़ में 3 मस्जिदें और इनसे ज्यादा कब्रिस्तान होने की जानकारी सामने आई है। नैनीताल जिले में 48 मस्जिदें, ऊधमसिंह नगर में 144, हरिद्वार जिले में सबसे अधिक 322, देहरादून जिले में 155 मस्जिदें हैं, जो उत्तराखंड वक्फ बोर्ड में पंजीकृत की गई हैं। सुदूर पहाड़ी जिलों में भी वक्फ बोर्ड की औकाफ (दान में दी गई) संपत्तियों की जानकारी सामने आई है। उत्तराखंड में 2105 औकाफ संपत्तियां, जिनमें अल्मोड़ा जिले में 46, पिथौरागढ़ जिले में 11, पौड़ी में 26, सबसे अधिक हरिद्वार में 865, ऊधमसिंह नगर में 499 और देहरादून में 435 संपत्तियों पर वक्फ बोर्ड का अपना दावा है। पूरे उत्तराखंड में 773 स्थानों पर कब्रिस्तान बना दिए गए है जबकि 704 मस्जिदों को वक्फ बोर्ड के अधीन बताया गया है। उत्तराखंड में वक्फ बोर्ड की सूची से बाहर अभी इतनी ही और मस्जिदों के होने की सूचनाएं सरकार के पास हैं।

उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के रिकार्ड में 100 मदरसे देवभूमि में चल रहे हैं, जबकि मदरसा बोर्ड की सूची में चार सौ से ज्यादा मदरसे दर्ज हैं, राज्य के भीतर 201 से अधिक मजारे वक्फ बोर्ड में सूचीबद्ध हैं, इन मजारों में नमाज भी पढ़ाई जा रही है।

वक्फ के रिकार्ड में 100 मदरसे

उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के रिकार्ड में 100 मदरसे भी देवभूमि में चल रहे हैं। जबकि मदरसा बोर्ड की सूची में चार सौ से ज्यादा मदरसे दर्ज हैं। राज्य के भीतर 201 से अधिक मजारे वक्फ बोर्ड में सूचीबद्ध हैं। इन मजारों में नमाज भी पढ़ाई जा रही है। जिन्होंने धीरे-धीरे मस्जिद और फिर मदरसे का रूप ले लिया है। वक्फ बोर्ड की संपत्तियों में पूरे राज्य में 12 स्कूल और इतने ही मुसाफिरखाने पंजीकृत हैं, सूची में 1024 मकान और 1711 दुकानें भी हैं। 70 ईद गाह, 32 इमामबाड़े, 112 कृषि भूमि प्लाट और अन्य 253 संपत्तियां है। ऐसा माना जा रहा है कि वक्फ बोर्ड की कई संपत्तियों पर प्रभावशाली लोगों और भू माफिया का कब्जा है। उत्तराखंड वक्फ बोर्ड की स्थापना 2003 में हुई थी, तब वक्फ बोर्ड की संपत्तियों की संख्या 2078 थी। इनमें से 450 संपत्तियों की फाइलें यूपी से अभी तक उत्तराखंड वक्फ बोर्ड को नहीं मिली हैं लिहाजा यह विषय, एक विवाद के रूप में केंद्र सरकार तक पहुंचा हुआ है। ऐसा माना जा रहा है कि देवभूमि उत्तराखंड में पिछले 21 वर्षों में वक्फ बोर्ड की संपत्तियों की संख्या दो गुना से अधिक हो गई है। जो इस बात को प्रमाणित करता है कि देवभूमि उत्तराखंड में मुस्लिम आबादी में बेतहाशा वृद्धि हो चुकी है। अभी ये आंकड़े ऐसे है जो कि वक्फ बोर्ड में दर्ज हैं। जबकि बड़ी संख्या में मुस्लिम धार्मिक स्थल, मदरसे ऐसे भी हैं जो वक्फ बोर्ड में दर्ज नहीं है और वे सरकारी जमीनों को घेरकर या अवैध कब्जे कर बनाए गए हैं। वक्फ बोर्ड की संपत्तियों को लेकर संदेह है कि क्या वो वास्तव में वक्फ बोर्ड की संपत्ति है, अथवा उत्तराखंड सरकार की संपत्ति है? बहरहाल देवभूमि उत्तराखंड में वक्फ संपत्तियों का तेजी से बढ़ना चिंता का विषय है, राज्य में डेमोग्राफी चेंज को लेकर बहस छिड़ी हुई है। वक्फ संपत्तियों के बढ़ रहे आंकड़े भी इसी और संकेत दे रहे हैं कि देवभूमि उत्तराखंड के सांस्कृतिक देव स्वरूप के इस्लामीकरण की साजिश हो रही है?

सुदूर पहाड़ों में इस्लामिक षड्यंत्र

उत्तराखंड के कण-कण में देवों का वास है इसलिए इसे देवभूमि कहा जाता है। लेकिन सुदूर पहाड़ी बस्तियों में क्या एक व्यापक षड्यंत्र के तहत इस्लामिक धार्मिक स्थलों का विस्तार किया जा रहा है? ऐसा इसलिए कहा जा रहा कि जिस तरह से वन विभाग के जंगल में सैकड़ों अवैध मजारे बनाई गई, उसी तरह से क्या मस्जिदों का भी विस्तार किया गया है? हाल ही में उत्तरकाशी मस्जिद को लेकर एक विवाद शुरू हुआ था। ऐसा कहा जा रहा है कि ये अवैध रूप से बनाई गई है। क्योंकि पहले ये घर था और मुस्लिम परिवार रहता था, लेकिन पिछले कुछ समय से यहां मुस्लिम लोग इकट्ठा होकर जुम्मे की नमाज पढ़ने लगे और धीरे-धीरे इसे मस्जिद का रूप दे दिया गया। इस बारे में आरटीआई के जरिए मिली जानकारी के अनुसार, इस भूमि के दस्तावेजों में हेरा-फेरी की गई है, इसलिए उत्तरकाशी में हिंदू संगठनों का आंदोलन हुआ और हालात बिगड़े। पुलिस ने लाठीचार्ज तक किया। बाद में दो अधिकारियों का ट्रांसफर किया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मस्जिद के दस्तावेजों की पुनः जांच करने के आदेश दिए। दूसरी घटना बेरीनाग की है जहां एक घर में नमाज के लिए मुस्लिम एकत्र होते हैं। हैरानी की बात तो ये है कि यह घर सरकारी भूमि पर कब्जा कर बनाया गया है। इस घर का बाहर से एक दरवाजा दिखता है, लेकिन इस घर के अंदर इबादत का कमरा बना दिया गया। इस बारे में हिंदू संगठनों द्वारा एक वीडियो भी वायरल किया गया था। ऐसा ही एक और मामला सीमांत नगर धारचूला का है जहां पहले इनर लाइन थी। धारचूला जाने के लिए परमिट लेना पड़ता था, इनर लाइन हटाई, यहां पावर प्रोजेक्ट आए साथ में मुस्लिम लेबर आई और एक घर में नमाज शुरू हो गई। फिर उसी मकान ने दो मंजिला फिर तीन मंजिला आकर लेना शुरू किया और मस्जिद बनती चली गई। अब इस मस्जिद को मुस्लिम दुकानदारों ने घेर लिया और ये मस्जिद नाले के ऊपर विस्तार लेती चली गई।

सरकारी जमीन पर नजर

उत्तराखंड राज्य बनने के बाद देवभूमि में बड़ी संख्या में मस्जिदें बनी है। इनमें से ज्यादातर सरकारी भूमि पर कब्जा कर बनाई गई है। देहरादून और हरिद्वार जिले में सौ से अधिक मुस्लिम धार्मिक स्थलों की संख्या ऐसी है, जिन्हें सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा कर इमारत को विस्तार दिया गया और फिर उसे वक्फ बोर्ड में पंजीकृत कर दिया। देहरादून, सेलाकोई, रामपुर मंडी विकास नगर, हरबर्टपुर आदि कई क्षेत्रों में यदि मस्जिदों की भूमि के दस्तावेजों की जांच की जाए तो सच सामने आ जाएगा। कुछ ऐसे मामले भी है जो पहले सरकारी भूमि पर कब्जे कर मदरसे बने फिर उनमें नमाज होने लगी और बाद में ये मस्जिद का आकार लेने लगी। 8 फरवरी 2024 को हल्द्वानी के बनभूलपुरा में अतिक्रमण हटाने को लेकर जो बवाल हुआ उसके पीछे भी फर्जी मदरसा था, जो मलिक के बगीचे में नजूल की जमीन पर कब्जा कर बनाया गया था। लेकिन उसे मस्जिद बता कर प्रचारित किया गया। बहरहाल उत्तराखंड की पुष्कर सिंह धामी सरकार के सामने इस तरह के प्रकरण इसलिए भी सामने आ रहे है, क्योंकि उनका साफ कहना है कि वे उत्तराखंड के देव स्वरूप को किसी भी सूरत में बदलने नहीं देंगे। सीएम धामी को लगातार खुफिया एजेंसियों की रिपोर्ट भी पहुंच रही है, कि राज्य में सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करके डेमोग्राफी चेंज की जा रही है और यहां इस्लामिक धार्मिक स्थल बनाए जा रहे हैं। खुफिया एजेंसियों की रिपोर्ट में भी कहा गया है कि जब राज्य में वक्फ बोर्ड का गठन हुआ था तब उत्तर प्रदेश से 2078 संपत्तियां मिली थी जो अब बढ़कर 5183 हो चुकी हैं। ये इजाफा कैसे हुआ? इसका उत्तर खोजना बाकी है। क्योंकि उत्तराखंड में ही नहीं बल्कि पूरे देश में वक्फ बोर्ड के पास असीमित अधिकार है। अभी तक वक्फ बोर्ड जिस भूमि पर अपना हक बता देता है वो उसकी हो जाती है। इसके खिलाफ वन विभाग, राजस्व विभाग और रेलवे जब तक आपत्ति करता है या अपनी भूमि खाली कराना चाहता है तब तक देर हो चुकी होती है।

राज्य में जब वक्फ बोर्ड का गठन हुआ था तब यूपी से 2078 संपत्तियां मिली थी जो बढ़कर 5183 हो चुकी हैं, ये इजाफा कैसे हुआ? इसका उत्तर खोजना बाकी है, उत्तराखंड में ही नहीं बल्कि पूरे देश में वक्फ के पास असीमित अधिकार है, वो जिस भूमि पर अपना हक बता देता है वो उसकी हो जाती है।

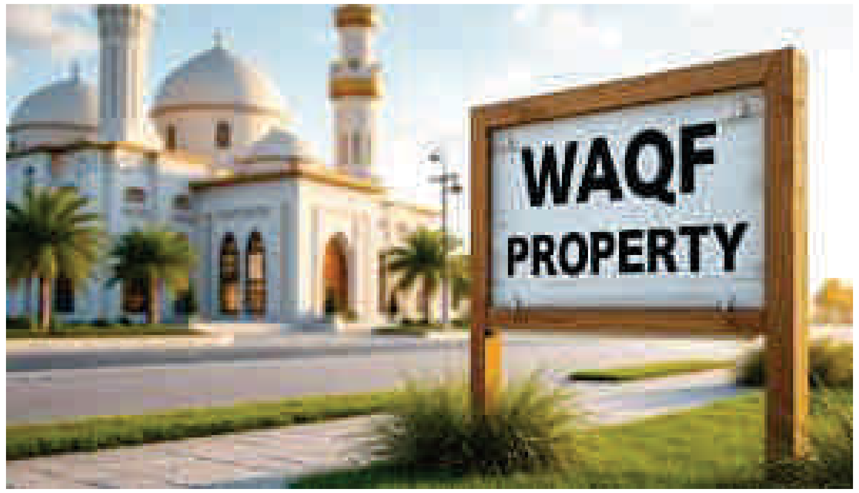

27 में लखनऊ का रास्ता संभल से

एएसआई टीम ने संभल में चतुर्मुख ब्रह्म कूप, अमृत कूप, अशोक कूप, सप्तसागर कूप, बलि कूप, धर्म कूप, ऋषिकेश कूप, परासर कूप, अकर्ममोचन कूप, धरणि बाराह कूप, भद्रका आश्रम तीर्थ, स्वर्गदीप तीर्थ, चक्रपाणि तीर्थ, कल्कि विष्णु मंदिर, चंदौसी में रानी की बावड़ी, फिरोजपुर का किला, झेम नाथ मंदिर, तोता मैना की कब्र और पृथ्वीराज की बावड़ी उर्फ चोरों का कुआं आदि का सर्वे किया है।

पारस अमरोही
वरिष्ठ पत्रकार

पुराणों के अनुसार कलियुग में अधर्म और पाप के नाश तथा सतयुग की पुनरुत्थान के लिए भगवान विष्णु कल्कि रूप में अवतार लेंगे। यानी श्रीहरि धरती से पापियों का नाश करेंगे और फिर धर्म की पताका लहराएगी। यह भगवान विष्णु का दसवां अवतार होगा। कल्कि पुराण के अनुसार भगवान विष्णु का कल्कि अवतार संभल में विष्णुयश नाम के ब्राह्मण के घर होगा। यूपी के संभल में कल्कि अवतार को लेकर जितनी भी कहानियां थी वो सब इतिहास के पन्नों में दफन हो चुकी थी। लेकिन उत्तर प्रदेश की धार्मिक नगरी संभल का इतिहास फिर से जिंदा होने लगा है। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के शासनकाल में यह धर्म नगरी अपने पुराने स्वरूप में लौटने लगी है। संभल की ऐतिहासिक विरासतों को संवारने की जिम्मेदारी स्थानीय प्रशासन पर है। भारतीय पुरातत्व विभाग (एएसआई) के संरक्षण में खंडहर हो चुका फिरोजपुर का किला, तोता मैना की कब्र, पृथ्वीराज चौहान की खंडहर हो चुकी बावड़ी को संरक्षित करने की दिशा में काम शुरू हो चुका है। संभल जिले में आधा दर्जन से ज्यादा बंद पड़े मंदिर और दो दर्जन कुएं मिल चुके हैं। माना जा रहा है कि संभल जल्द ही पर्यटन नगरी के तौर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो जाएगा। एएसआई के अधिकारियों के मुताबिक संभल में पर्यटन की खूब संभावनाएं हैं। यहां कदम-कदम पर ऐतिहासिक, धार्मिक और पुरातात्विक महत्व की धरोहर है। संभल में मिलने वाले धार्मिक स्थलों और पौराणिक महत्व के कुओं को लेकर राजनीति भी खूब हो रही है। क्योंकि जिस तेजी से 24 नवंबर की हिंसा के बाद संभल चर्चा में आया है उससे लगता है कि 2027 में लखनऊ का रास्ता संभल से होकर ही जाएगा। इसलिए सपा मुखिया अखिलेश यादव संभल में मिलने वाले मंदिरों, कुओं और बावड़ी को लेकर परेशान हैं और दावा कर रहे हैं कि जो लोग मस्जिदों और लोगों के घरों को खोद कर मंदिर निकाल रहे हैं वो एक दिन अपनी सरकार भी खोद डालेंगे। खुद को श्रीकृष्ण का वंशज बताने वाले अखिलेश यादव मुस्लिम वोट की खातिर श्रीहरि के दसवें कल्कि अवतार के तो पक्ष में बिल्कुल नजर नहीं आ रहे हैं। वो तो 24 नवंबर को संभल की हिंसा में पांच युवकों की मौत पर ही मातम मना रहे हैं। यहां तक कि संसद के शीतकालीन सत्र में समाजवादी पार्टी ने सिर्फ संभल के

अल्पसंख्यकों ही पैरवी की।

बैकफुट पर समाजवादी

संभल में 24 नवंबर को शाही जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हिंसा में पांच युवकों की मौत के बाद संभल के सपा सांसद जियाउर्रमान बर्क, विधायक इकबाल महमूद से लेकर सपा अध्यक्ष व सांसद अखिलेश यादव फ्रंट पर खेल रहे थे। उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार पर हमलावर थे, कानून व्यवस्था पर सवाल उठा रहे थे। संभल के डीएम, एसपी तथा सीओ के खिलाफ एक्शन की मांग कर रहे थे, लेकिन प्रशासन ने हिंसा के बाद बिजली चोरी के खिलाफ अभियान शुरू किया तो सपा के ज्यादातर नेताओं के घर बिजली चोरी पकड़ी गई। संभल के सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क तक पर बिजली चोरी की एफआईआर हुई और 1.91 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया। इतना सब होने के बाद से फ्रंट पर खेल रहे सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क और उनके आका अखिलेश यादव बैकफुट पर आ गए। इस बीच 14 दिसंबर को संभल में सासंद बर्क घर से 200 मीटर दूर दीपा सराय मोहल्ले में 1978 के सांप्रदायिक दंगों के बाद से बंद पड़ा एक प्राचीन शिव मंदिर प्रशासन को नजर आया। इस मंदिर का नाम प्राचीन संभलेश्वर मंदिर रखा गया। इसमें शिवलिंग के साथ हनुमान जी की भी प्रतिमा है। इस प्राचीन मंदिर में पुलिस अफसरों ने खुद साफ-सफाई और पूजा अर्चना की। इसके बाद संभल के डीएम राजेंद्र पैंसिया ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) को चिट्ठी लिखकर मंदिर के सर्वे का अनुरोध किया। इस प्राचीन मंदिर के पास ही एक कूप भी मिला जिसकी खुदाई करने पर माता पार्वती, भगवान गणेश और कार्तिकेय की खंडित प्रतिमाएं मिली। प्रशासन ने संभल के ही मुस्लिम इलाके में प्राचीन राधा-कृष्ण मंदिर का ताला भी खुलवाया। इसके बाद से तो संभल में प्राचीन मंदिरों और कुओं के मिलने का सिलसिला शुरू हो गया। एएसआई टीम ने अभी तक संभल में 28 से अधिक स्थानों का सर्वे किया है। इसमें चतुर्मुख ब्रह्म कूप, अमृत कूप, अशोक कूप, सप्तसागर कूप, बलि कूप, धर्म कूप, ऋषिकेश कूप, परासर कूप, अकर्ममोचन कूप, धरणि बाराह कूप, भद्रका आश्रम तीर्थ, स्वर्गदीप तीर्थ, चक्रपाणि तीर्थ, कल्कि विष्णु मंदिर, चंदौसी में रानी की बावड़ी, फिरोजपुर का किला, झेम नाथ मंदिर, तोता मैना की कब्र और पृथ्वीराज की बावड़ी उर्फ चोरों का कुआं शामिल है। इसके बाद से कहा जा रहा है कि संभल के सीने में और कितने राज दफन हैं? जिनका बाहर आना बाकी है।

संभल में मिलने वाले धार्मिक स्थलों और प्राचीन व पौराणिक महत्व के कुओं बावड़ी, किलों को लेकर राजनीति भी खूब हो रही है, जिस तेजी से 24 नवंबर की हिंसा के बाद संभल चर्चा में आया है उससे लगता है कि 2027 में लखनऊ का रास्ता संभल से होकर ही जाएगा।

संभल में विकसित होंगे तीर्थ स्थल

पुराणों में धार्मिक नगरी संबलगढ में ही भगवान कल्कि का अवतार होने का उल्लेख है। शास्त्रों में इसी धर्म नगरी संभल को पहचान के तौर पर बताया गया है कि इस नगर में 19 कुएं, 68 तीर्थ, 36 पुरे और 52 सराय होंगी। जिला प्रशासन ने इस नगर की पहचान चिह्नों की तलाश शुरू कर दी है। इस क्रम में अब तक 19 कुओं की तलाश पूरी हो चुकी है। 6 तीर्थ भी ढूंढे जा चुके हैं। अब प्रशासन 62 अन्य तीर्थों के अलावा पुरों और सरायों की खोज करनी है। संभल की शाही जामा मस्जिद से 27 किलोमीटर दूर चंदौसी में ऐतिहासिक रानी की बावड़ी मिली है। दावा किया जा रहा है कि यह रानी की बावड़ी है जिसका निर्माण 1857 में कराया गया था। यहां की रानी रहीं सुरेंद्र बाला की पोती राजकुमारी शिप्रा बाला का कहना है कि यह इलाका पहले हिंदू बहुल था। यह दादी सुरेंद्र बाला और बाबा जगदीश कुमार की संपत्ति है। उनके बेटे लल्ला बाबू उर्फ विष्णु कुमार की पांच बेटियों में से मैं सबसे छोटी हूं। बिलारी के राजपरिवार के कई हिस्सेदार होने के बाद यहां की जमीन बदायूं के अनेजा को बेच दी थी, लेकिन बावड़ी नहीं बेची थी। अनेजा ने इसकी प्लॉटिंग करके मुस्लिमों के बेच दिया। शिप्रा बाला का कहना है कि उनका कोई भाई नहीं था। पिता अकेले अपनी संपत्ति पर ध्यान नहीं दे पाते थे। ऐसे में लोगों ने उनकी जमीन हथियाना शुरू कर दी थी। इसलिए भी जमीन बेचनी पड़ी थी। शिप्रा बाला का कहना है कि 1857 के सिपाही विद्रोह के समय सहसपुर बिलारी की रानी ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में इस बावड़ी का छावनी के तौर पर इस्तेमाल किया था। राजपरिवार की अंतिम महारानी सुरेंद्र बाला की पोती शिप्रा ने इसे अपनी दादालाई प्राप्टी बताया है?

पृथ्वीराज चौहान की राजधानी रही

संबलगढ उर्फ संभल नगर के तीनों कोणों पर शिवालय हैं। श्री कल्कि नगरी के नाम से भी संभल को जाना जाता है। स्कंद पुराण में संभल की धरती पर श्री कल्कि अवतार का प्रसंग है। जबकि एक जमाने में संभल पृथ्वीराज चौहान की राजधानी भी रहा है। स्थानीय लोग संभल को धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की मांग करने लगे हैं। हालांकि यह मांग तीन दशक से भी ज्यादा पुरानी है। वर्ष 1992 में तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के कार्यकाल में तत्कालीन पर्यटन राज्यमंत्री लल्लू सिंह संभल आए थे। लल्लू सिंह ने संभल को धार्मिक पर्यटन की नगरी के तौर पर विकसित करने का भरोसा दिया था। इसके लिए तत्कालीन पर्यटन मंत्री कलराज मिश्र के सामने एक प्रस्ताव भी रखा गया था, लेकिन धनाभाव में प्रस्ताव अटक गया था। इसके बाद जब भी संभल के सनातनी लोग लखनऊ गए उन्होंने संभल के धार्मिक और पौराणिक महत्व का उल्लेख करते हुए इस नगरी के तीर्थ स्थलों को विकसित करने की मांग की, लेकिन अफसोस इस बात का रहा है कि तब सपा और बसपा या कांग्रेस की सरकारें थी जो हिंदुओं के धार्मिक स्थलों को तवज्जों नहीं देती थीं। 2017 में सपा, बसपा का युग समाप्त हुआ और योगी आदित्यनाथ की सरकार बनी। उनके सनातनी प्रेम और हिंदुत्ववादी विचारधारा से संभल के सनातनी लोगों में एक उम्मीद जगी। लिहाजा योगी आदित्यनाथ के समक्ष जब यह मांग रखी गई तो वह इस पर सहमत हो गए। उन्होंने बहजोई प्रवास के दौरान संभल को धार्मिक पर्यटन केंद्र के तौर पर विकसित करने वादा किया था। जो अब साकार होता नजर भी आ रहा है। एक जमाना था जब संभल में हिंदुओं की संख्या ज्यादा थी, लेकिन 1978 में हुए सांप्रदायिक दंगे के बाद हिंदुओं ने पलायन शुरू कर दिया, जिसका नतीजा यह हुआ कि मंदिर खंडहर हो गए और बावड़ी वक्त के साथ जमीन में धंसती चली गईं।

- **खुद को श्रीकृष्ण का वंशज बताने वाले अखिलेश यादव मुस्लिम वोट की खातिर श्रीहरि के दसवें कल्कि अवतार के तो पक्ष में बिल्कुल नजर नहीं आ रहे, वो तो 24 नवंबर को संभल की हिंसा में पांच युवकों की मौत पर ही मातम मना रहे हैं।**
- **पुराणों में धार्मिक नगरी संभल की पहचान के तौर पर बताया गया है कि इस नगर में 19 कुएं, 68 तीर्थ, 36 पुरे और 52 सराय होंगी, जिला प्रशासन ने इस नगर की पहचान चिह्नों की तलाश शुरु कर दी है, अब तक 19 कुओं की तलाश पूरी हो चुकी है, 6 तीर्थ भी ढूंढे जा चुके हैं।**

कभी हिंदू बाहुल था संभल

दशकों से बंद खग्गू सराय और सरायतरीन में मिले दो मंदिरों पर खामोशी छाई थी। मुस्लिम बाहुल इलाके में ये दोनों मंदिर सांस्कृतिक रूप से समृद्ध रहे हैं। हिंदू समाज की आस्था का केंद्र रहे हैं। दशकों पहले यहां हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसालें दी जाती थी। हालांकि समय के साथ सांप्रदायिक तनावों ने इन इलाकों को गहरे जख्मों का गवाह बनाया, लेकिन खग्गू सराय और सरायतरीन के मंदिर वैसे ही खड़े हैं। दोनों मोहल्लों से हिंदुओं के पलायन करने से देखरेख के अभाव में मंदिर जर्जर हो गए। अब यह मंदिर खुल चुके हैं और पूजा पाठ शुरू हो गई है। 1978 के सांप्रदायिक दंगे ने खग्गू सराय के हिंदू परिवारों में खौफ पैदा कर दिया। असुरक्षा और चारों तरफ फैली मुस्लिम आबादी ने खग्गू सराय के करीब 40 हिंदू परिवारों को अपनी जमीन और मकान बेचकर पलायन करने का विवश किया। इसके बाद 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद देश भर में सांप्रदायिक तनाव बढ़ा। इससे संभल भी अछूता नहीं रहा। सरायतरीन के मोहल्ला कश्यवान जो पहले हिंदू बहुल था, सांप्रदायिक तनाव की चपेट में आ गया। तनाव के कारण मोहल्ला कश्यवान में 100 से अधिक हिंदू परिवारों ने अपनी संपत्ति बेचकर अन्य सुरक्षित स्थानों पर बसने का निर्णय लिया। इस तरह संभल मुस्लिम बाहुल हो गया।

परिक्रमा होती है झरने की

अत्रि मुनि झरना भारत का इकलौता ऐसा झरना है जिसकी श्रद्धालु परिक्रमा करते हैं, ऊंचाई से गिरने वाले इस झरने को निहारने से एक अलग अनुभूति होती है, अत्री मुनि झरने को जो चीज वास्तव में खास बनाती है, वो है इसकी अछूती प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक माहौल, जो इस क्षेत्र को घेरे हुए है।

हरीश भट्ट
रामनगर

उत्तराखंड धर्मिक तीर्थ यात्रा और खूबसूरत हिल स्टेशन के लिए जाना जाता है। लेकिन क्या आपको मालूम है कि यहां कई ऐसे झरने हैं जो बेहद खूबसूरत हैं, लेकिन बहुत से खूबसूरत झरने अभी भी पर्यटकों की नजरों से ओझल हैं। ऐसे ही खूबसूरत झरनों में एक अत्रि मुनि झरना है। यह झरना चमोली जिले के गोपेश्वर में प्रसिद्ध व पवित्र ऋषि अत्रि मुनि आश्रम के करीब है। अत्रि मुनि सप्तऋषियों में से एक है और देवी सती अनुसूइया के पति हैं। अत्रि मुनि का आश्रम अनुसूइया देवी मंदिर से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है। यह आश्रम एक चट्टान में बनी प्राकृतिक गुफा के भीतर बना हुआ है। आश्रम में जाने के लिए चट्टान पर बनी लोहे की जंजीरों पर चढ़ना पड़ता है और उसके बाद एक पतली सी गुफा से नीचे लेटकर जाना पड़ता है। इस गुफा के बारे में कहा जाता है कि अगर इस गुफा में सिर की तरफ से प्रवेश किया जाए तो इसे आसानी से पार किया जा सकता है। जबकि पैर की तरफ से जाने पर गुफा में फंस सकते हैं। इस आश्रम के बगल में एक खूबसूरत झरना है। कहा जाता है कि अनसूइया देवी मंदिर की यात्रा के बाद अत्रि मुनि आश्रम की यात्रा करना जरूरी होता है, अन्यथा यात्रा अधूरी मानी जाती है। इस आश्रम का बड़ा धार्मिक महत्व भी है। गोपेश्वर की यात्रा के दौरान बहुत से पर्यटक इस पवित्र आश्रम में अवश्य आते हैं। यह आश्रम गोपेश्वर के प्रमुख धार्मिक आकर्षण केंद्रों में से एक है।

रहस्यमयी अत्री मुनि झरना

यदि आप एक अनोखे डेस्टीनेसन की तलाश में हैं, जहां आप हिमालय की गोद में प्रकृति के बेहद खूबसूरत नजारों का आनंद लेना चाहते हैं तो प्रसिद्ध अत्रि मुनि झरना एक बहुत सुंदर डेस्टीनेशन है, जहां आप जा सकते हैं और स्वर्ग का आनंद ले सकते हैं, जैसा आपने पहले कभी नहीं लिया होगा। यह झरना चमोली जिले में है, जहा जंगलों में 5.5 किलोमीटर की रोमांचक यात्रा के बाद पहुंचा जा सकता है, जो गोपेश्वर से लगभग 19 किलोमीटर दूर है। अत्रि मुनि झरना एक शानदार प्राकृतिक रहस्य को समेटे हुए है। यह अपनी शांत, सुंदरता और रहस्यमय आकर्षण से पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसका नाम ऋषि अत्रि मुनि के नाम पर ही क्यों रखा गया है? माना जाता है कि यहां ऋषि अत्रि स्वयं ध्यान करते थे। इसलिए यह झरना भारत का इकलौता ऐसा झरना है जिसकी श्रद्धालु पक्रिमा करते हैं। काफी ऊंचाई से नीचे गिरने वाले इस झरने को निहारने से एक अलग तरह की अनुभूति होती है। अत्रि मुनि झरने को जो चीज वास्तव में खास बनाती है, वह है इसकी अछूती प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक माहौल, जो इस क्षेत्र को घेरे हुए है। क्योंकि यह अत्रि मुनि आश्रम के करीब है जो आध्यात्मिक साधकों को भी आकर्षित करता है। यह झरना आम रास्ते से दूर है, जो इसे एकांत और प्रकृति के साथ गहरे संबंध की तलाश करने वालों के लिए एक आदर्श डेस्टीनेशन बनाता है। झरने तक की यात्रा अपने आप में रोमांचकारी होती है, जो पर्यटकों को घने जंगलों, विचित्र गांवों और प्राकृतिक दृश्यों से होकर ले जाती है और हिमालय की तलहटी के लुभावने दृश्यों के दर्शन कराती है। झरने का शांत वातावरण फोटोग्राफी के लिए ध्यान आकर्षित करता है और मन व आत्मा को तरोताजा कर देता है। इसके अलावा स्थानीय लोक कथाएं तथा इस स्थान का आध्यात्मिक महत्व अनुभवों में सांस्कृतिक समृद्धि की परत जोड़ता है। लिहाजा पर्यटकों को प्रकृति की शांति में डूबने, उत्तराखंड की समृद्ध विरासत को जानने और शांत सौंदर्य का आनंद लेने के लिए अत्रि मुनि आश्रम व झरना स्थल की यात्रा करनी चाहिए, जो इस छिपे हुए रत्न को एक दर्शनीय स्थल बनाता है।

यह झरना आम रास्ते से दूर है, जो इसे एकांत और प्रकृति के साथ गहरे संबंध की तलाश करने वालों के लिए आदर्श डेस्टीनेशन बनाता है, झरने तक की यात्रा अपने आप में रोमांचकारी होती है, जो पर्यटकों को घने जंगलों, विचित्र गांवों और प्राकृतिक दृश्यों से होकर ले जाती है।

मां सती अनसूइया की परीक्षा

लोकमान्यता है कि जब ऋषि अत्रि मुनि झरने से कुछ ही दूरी पर तपस्या कर रहे थे तो उनकी पत्नी अनसूइया ने पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए इस स्थान पर अपना निवास बनाया था। किवंदिती है कि देवी अनसूइया की महिमा जब तीनों लोकों में गाई जाने लगी तो अनसूइया के पतिव्रत धर्म की परीक्षा लेने के लिए पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को विवश कर दिया। पौराणिक कथा के अनुसार तब ये त्रिदेव देवी अनसूइया की परीक्षा लेने साधु वेष में उनके आश्रम पहुंचे और उन्होंने भोजन की इच्छा प्रकट की। लेकिन उन्होंने अनुसूइया के सामने शर्त रखी कि वह उन्हें गोद में बैठाकर ऊपर से निर्वस्त्र होकर आलिंगन के साथ भोजन कराएंगी। इस पर अनसूइया संशय में पड गई। उन्होंने आंखें बंद कर अपने पति का स्मरण किया तो सामने खड़े साधुओं के रूप में उन्हें ब्रह्मा, विष्णु और महेश खड़े दिखाई दिए। अनुसूइया ने मन ही मन अपने पति का स्मरण किया और ये त्रिदेव छह महीने के शिशु बन गए। तब माता अनसूइया ने त्रिदेवों को उनकी शर्त के अनुरूप ही भोजन कराया। इस प्रकार त्रिदेव बाल्यरूप का आनंद लेने लगे। उधर तीनों देवियां पतियों के वियोग में दुखी हो गई। तब नारद मुनि के कहने पर वे अनसूइया के समक्ष अपने पतियों को मूल रूप में लाने की प्रार्थना करने लगीं। अपने सतीत्व के बल पर अनसूइया ने तीनों देवों को फिर से पूर्व रूप में ला दिया। तभी से वह मां सती अनसूइया के नाम से प्रसिद्ध हुई। हर वर्ष यहां दत्तात्रेय जयंती पर मार्गशिष महीने की चतुर्दशी एवं पूर्णिमा को अनसूइया मेला लगता है। मंदिर के गर्भ गृह में अनसूइया की भव्य पाषाण मूर्ति विराजमान है, जिसके ऊपर चांदी का छत्र रखा है। मंदिर परिसर में शिव, पार्वती, भैरव, गणेश और वन देवताओं की मूर्तियां विराजमान हैं। मंदिर से कुछ ही दूरी पर अनसूइया पुत्र भगवान दत्तात्रेय की त्रिमुखी पाषाण मूर्ति स्थापित है। अब यहां एक छोटा सा मंदिर बना दिया गया है। अनसूइया माता के मंदिर से कुछ ही दूर लगभग 3 किलोमीटर उत्तर की दिशा में महर्षि अत्रि की गुफा और अमृत गंगा नामक झरने का विहंगम दृश्य श्रदलुओं और साहसिक पर्यटन के शौकीनों के लिए आकर्षण का केंद्र है, गुफा तक पहुंचने के लिए जंजीर पकड़कर रॉक क्लाइम्बिंग भी करनी पड़ती है। गुफा में महर्षि अत्रि की पाषाण मूर्ति है। गुफा के बाहर अमृत गंगा और झरने का दृश्य मन मोह लेता है। यहां का झरना शायद देश का अकेला ऐसा झरना है जिसकी परिक्रमा बिना अमृत गंगा को लांघे की जाती है। आधुनिक पर्यटन की चकाचौंध से दूर यह इलाका इको-फ्रैंडली पर्यटन का अद्वितिय उदाहरण है। यहां भवन पारंपरिक पत्थर और लकड़ियों के बने हैं।

- **ऋग्वेद में अत्रि मुनि की कथा है जिन्होंने पूर्ण सूर्यग्रहण से सूर्य की मुक्ति के लिए स्वर्भानु नामक असुर का वध किया क्योंकि असुर के प्रभाव से सूर्य दिन में अचानक गायब हो गया और लोगों को अंधेरे में डर लगने लगा, तब अत्रि मुनि ने असुर स्वर्भानु का वध कर सूर्य का पुनः तेज प्राप्त किया था।**
- **अनसूइया देवी मंदिर की यात्रा के बाद अत्रि मुनि आश्रम की यात्रा करना जरूरी होता है, अन्यथा यात्रा अधूरी मानी जाती है, इस आश्रम का बड़ा धार्मिक महत्व भी है, गोपेश्वर की यात्रा के दौरान बहुत से पर्यटक इस आश्रम में अवश्य जाते हैं।**

खगोलीय वैज्ञानिक थे अत्रि मुनि

प्राचीन भारत में एक महर्षि हुए हैं। खगोलीय घटनाओं से जुड़ी कहानियों में उनके उल्लेख के कारण उन्हें प्राचीन भारत का खगोलीय वैज्ञानिक भी कहा जाता है। ऋग्वेद में पूर्ण सूर्यग्रहण की पहचान करने के लिए अत्रि ग्रहण का उल्लेख किया गया है। इसी तरह रॉबर्ट गार्फिकल ने भी अपनी पुस्तक लूना कॉग्निटा में अत्रि ग्रहण के बारे में चर्चा की है। ऋग्वेद ग्रंथ में ऋषि अत्रि मुनि की कथा है जिन्होंने पूर्ण सूर्यग्रहण से सूर्य की मुक्ति के लिए स्वर्भानु नामक असुर का वध किया था। कथा में कहा गया है कि असुर के प्रभाव से सूर्य दिन में अचानक गायब हो गया और लोगों को अंधेरे में डर लगने लगा। तब ऋषि अत्रि मुनि ने असुर स्वर्भानु का वध कर सूर्य का तेज पुनः प्राप्त किया था। ऋग्वेद की भाषा बहुत प्रतीकात्मक है जिसमें अर्थ छिपा हुआ है, जिससे ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में इसे समझना मुश्किल हो जाता है। हालांकि कहानी में सूर्य के गायब होने की व्याख्या खगोलविदों ने पूर्ण सूर्यग्रहण के रूप में की है। बताया जाता है कि अत्रि मुनि भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। पुराणों के अनुसार, चन्द्रमा, दत्तात्रेय और दुर्वासा ब्रह्मा जी के असल पुत्र थे ऋषि अत्रि मुनि का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। उनकी पत्नी अनसूइया थीं, जिन्होंने अपने सतीत्व के तपोबल से ब्रह्मा, विष्णु, महेश को छोटे बच्चों में बदल दिया था। महर्षि अत्रि ग्रहण के बारे में बहुत ज्ञान रखते थे, बताया जाता है कि सप्त ऋषियों में एक महर्षि अत्रि मुनि ने ग्रहण का ज्ञान बाकी लोगों को दिया था खगोल शास्त्र के कई रहस्य उन्होंने दुनिया को बताए थे, आसमान में टिमटिमाते तारों से लेकर अज्ञात ग्रहों तक के अध्ययन में वो समय से बहुत आगे थे। अयोध्या नरेश श्रीराम अपने वनवास काल में भार्या सीता तथा भाई लक्ष्मण के संग ऋषि अत्रि मुनि के चित्रकूट आश्रम में आए थे। यह भी धारणा है कि ऋषि अत्रि मुनि ने अंजुली में जल भरकर सागर को सोख लिया था फिर सागर ने याचना की कि हे! ऋषि मुझ में निवास करने वाले समस्त जीव-जंतु एवं पशु-पक्षी जल के बिना प्यास से मारे जाएंगे अतः मैं आपसे यह विनम्र निवेदन करता हूं कि मुझे जलाजल कर दें। तब ऋषि अत्रि मुनि प्रसन्न हुए और उन्होंने मूत्रमार्ग से सागर को मुक्त कर दिया था। माना जाता है तब से ही सागर का जल खारा हो गया। इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने के लिए, यात्री गोपेश्वर पहुंच कर अपनी यात्रा शुरू कर सकते हैं। अनुसूया देवी मंदिर और अत्रि मुनि आश्रम के लिए निकटतम हवाई अड्डा देहरादून में जॉली ग्रांट में है। हवाई अड्डे से मंदिर और आश्रम तक पहुंचने के लिए टैक्सी किराए पर ले सकते हैं या बस से सफर कर सकते हैं।

देश शोक में राहुल विदेश में

कांग्रेस ने डॉ. मनमोहन सिंह को भारत रत्न देने से भी इनकार कर दिया था, जबकि राष्ट्रपति रहते हुए प्रणव मुखर्जी ने सोनिया गांधी के सामने प्रस्ताव रखा था कि डॉ. मनमोहन सिंह को भारत रत्न दिया जाना चाहिए, लेकिन सोनिया गांधी ने साफ इनकार कर दिया था।

केके चौहान

राजनीति का स्तर इतना गिर गया है कि किसी महान शख्सियत की मौत पर भी सियासत हो रही है। ऐसा शायद भारत में ही होता है, पर क्या कहें इसे ही राजनीति कहा जाता है। राजनीतिज्ञ का हर कदम शतरंज की एक चाल की तरह होता है। फिलहाल तो एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री, भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर एवं पूर्व प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह के निधन के बाद उनकी अंत्येष्टि स्थल से लेकर उनका स्मारक बनाने के नाम पर कांग्रेस और भाजपा के बीच जमकर राजनीति हुई। दिल्ली के निगमबोध घाट पर डॉ. मनमोहन सिंह की अंत्येष्टि के समय राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने पहुंचकर यह संदेश देने की कोशिश की कि डॉ.मनमोहन सिंह का व्यक्तित्व राजनीति से ऊपर था। जिनका सम्मान भारत के सभी लोग करते हैं। पर इतना सब कुछ करने के बाद भी भाजपा की बजाय कांग्रेस पूर्व प्रधानमंत्री का स्मारक बनाने की मांग पर हल्ला कर जनता की हमदर्दी हथियाने में आगे निकल गई। कांग्रेस ने नैरेटिव सेट किया कि भाजपा ने देश के पहले सिख प्रधानमंत्री और अर्थशास्त्री डॉ.मनमोहन सिंह का निगमबोध घाट पर अंतिम संस्कार कराकर अपमान किया है। कांग्रेस ने भ्रम फैलाया कि केंद्र की एनडीए सरकार डॉ.मनमोहन सिंह का स्मारक नहीं बनाना चाहती है, इसलिए निगमबोध घाट पर उनका अंतिम संस्कार कराया गया है। कांग्रेस ने एक भ्रम ये भी फैलाया कि पूर्व पीएम डॉ.मनमोहन सिंह को राहुल गांधी पितातुल्य राजनीतिज्ञ गुरु मानते थे। जिस समय उनकी शवयात्रा निकली राहुल गांधी उसी वाहन में सवार थे जिस पर पूर्व पीएम का पार्थिव शरीर रखा गया था। राहुल गांधी की आंखें नम थी।

कांग्रेस के इतने सारे नैरेटिव से भाजपा कुछ असहज तो हुई, लेकिन राजनीति में कब कौन किसे मात दे दे यह कहना मुश्किल होता है। पर कांग्रेस लीडर राहुल गांधी तो ऐसे नेता हैं जो खुद ही कांग्रेस को बैकफूट पर धकेल देते हैं। राहुल गांधी ने दिवंगत डॉ.मनमोहन सिंह के मान सम्मान और अपमान पर हल्ला मचा रही कांग्रेस को मुश्किल में डाल दिया। पूर्व पीएम के निधन के बाद जो कांग्रेस फ्रंट पर थी उसे नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बैकफुट पर ला दिया। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह के निधन पर केंद्र सरकार ने सात दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया था। इस दौरान भाजपा ने अपने सरकारी व पार्टी के सभी कार्यक्रम एक जनवरी तक स्थगित कर दिए। राज्य सरकारों ने भी सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए, सामाजिक संगठनों ने भी राष्ट्रीय शोक की वजह से कोई कार्यक्रम नहीं किया, लेकिन राहुल गांधी नेता प्रतिपक्ष होते हुए राष्ट्रीय शोक मनाने की जगह न्यू ईयर की पार्टी करने वियतनाम चले गए। नए साल की शुरुआत से ठीक पहले लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के वियतनाम दौरे ने भाजपा को बैठे बिठाए कांग्रेस को घेरने का मौका दे दिया। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, जो चार दिन पहले व्याकुल होने का स्वांग कर रहे थे, वो नया साल मनाने के लिए वियतनाम चले गए। इससे पहले भी कांग्रेस ने पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव और प्रणब मुखर्जी का इसी तरह अपमान किया था।

देश पूर्व प्रधानमंत्री और प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर सात दिन का शोक मना रहा है और राहुल गांधी न्यू ईयर का जश्न मनाने वियतनाम चले गए, इससे पता चलता है कि कांग्रेस पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह का कितना सम्मान करती है?

ये कैसा डॉ.मनमोहन प्रेम

भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने एक्स पर लिखा, 'देश प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर सात दिन का शोक मना रहा है और राहुल गांधी विदेश चले गए। इससे पता चलता है कि कांग्रेस पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह का कितना सम्मान करती है? राहुल गांधी ने डॉ.मनमोहन सिंह के जीवनकाल में उनका एक-दो बार नहीं बल्कि कई बार अपमान किया। ये वही राहुल गांधी है जिन्होंने 2013 में डॉ. मनमोहन सिंह सरकार के अध्यादेश को बकवास बताते हुए मीडिया के सामने प्रेस कॉन्फ्रेंस में फाड़ दिया था। प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह इससे काफी नाराज थे। तब उन्होंने तत्कालीन योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया से पूछा था कि क्या मुझे अब इस्तीफा दे देना चाहिए? मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने अपनी किताब 'बेकस्टेज द स्टोरी बिहाइंड इंडियाज हाई ग्रोथ ईयर्स' में खुद इसका उल्लेख किया है।

कांग्रेस डॉ.मनमोहन सिंह का कितना सम्मान करती है इसे ऐसे समझा जा सकता है कि कांग्रेस का कोई नेता उनकी अस्थियां लेने नहीं गया। न ही यमुना नदी में उनके अस्थि विसर्जन में कांग्रेस का कोई नेता शामिल हुआ। यहां तक कि कांग्रेस ने डॉ. मनमोहन सिंह को भारत रत्न देने से भी इनकार कर दिया था। जबकि राष्ट्रपति रहते हुए प्रणव मुखर्जी ने सोनिया गांधी के सामने प्रस्ताव रखा था कि डॉ. मनमोहन सिंह को भारत रत्न दिया जाना चाहिए, लेकिन सोनिया गांधी ने साफ इनकार कर दिया था। यही गांधी परिवार का असली चेहरा है। ये वही राहुल गांधी हैं जो मुंबई में 26/11 की घटना के दौरान पूरी रात पार्टी करते रहे थे।

- **जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने मंत्रिमंडल के खास साथियों सहित डॉ.मनमोहन सिंह की शवयात्रा में पीछे-पीछे चल रहे थे, वह आम तौर पर जरूरी नहीं था, पीएम मोदी का तो डॉ.मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित करना ही काफी था।**
- **राहुल गांधी ने डॉ.मनमोहन सिंह के जीवनकाल में उनका एक-दो बार नहीं बल्कि कई बार अपमान किया, ये वही राहुल गांधी है जिन्होंने 2013 में डॉ. मनमोहन सिंह सरकार के अध्यादेश को बकवास बताते हुए मीडिया के सामने प्रेस कॉन्फ्रेंस में फाड़ दिया था।**

भाजपा नेता अमित मालवीय ने सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि राहुल गांधी को देश में क्या चल रहा है उससे कोई मतलब नहीं है। वैसे भी गांधी परिवार और कांग्रेस सिखों से नफरत ही करती है। इंदिरा गांधी ने भी दरबार साहिब का अपमान किया था। मालवीय ने एक्स पर लिखा, पूरा देश पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक मना रहा है और राहुल गांधी नए साल का जश्न मनाने के लिए वियतनाम गए हैं। राहुल गांधी ने डॉ. सिंह के निधन का राजनीतिकरण किया और अपनी राजनीति के लिए उसका फायदा उठाया, लेकिन उनके प्रति उनकी घृणा अस्वीकार्य है। भाजपा को कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने जवाब दिया। टैगोर ने भाजपा यानी संघियों की भटकाव की राजनीति बताते हुए कहा कि राहुल गांधी हर साल क्रिसमस के त्योहार पर विदेश खासकर इटली में होते हैं। इस पर भाजपा ने पलटवार करते हुए कहा कि नए साल पर भारतीय अपने देश में रहकर खुशियां मनाते हैं, लेकिन वो नानी के घर इटली घूमते जाते हैं। यानी हमेशा उनकी मां सोनिया गांधी के विदेशी मूल के होने की याद भारतीयों को दिलाते हैं।

क्या सहमी हुई थी कांग्रेस?

डॉ.मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार कहां होगा? इसका फैसला हुआ भी नहीं था कि कांग्रेस ने आक्रामक खेल शुरू कर दिया। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि देश की जनता यह नहीं समझ पा रही है कि सरकार को पूर्व पीएम के अंतिम संस्कार और स्मारक के लिए एक जगह क्यों नहीं मिल पा रही? स्मारक के लिए जगह की मांग को लेकर कांग्रेसी नेताओं के ताबडतोड़ बयान आने लगे। लिहाजा सरकार ने तय किया कि निगमबोध घाट पर पूर्व पीएम की अंत्येष्टि की जाएगी। इसके बाद तो कांग्रेस के हमले और भी तेज हो गए। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को लेकर जिस तरह कांग्रेस आक्रामक थी उसके पीछे कांग्रेस को एक तरह का डर था। यानी कांग्रेस थोड़ी भी लापरवाही बरतती तो जिस तरह भाजपा ने पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव और पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को अपना बना लिया वैसे ही कहीं डॉ.मनमोहन सिंह का भी भाजपा का हो जाने का खतरा था। जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने मंत्रिमंडल के खास साथियों सहित डॉ.मनमोहन सिंह की शवयात्रा में पीछे-पीछे चल रहे थे, वह आम तौर पर जरूरी नहीं था। पीएम मोदी का तो डॉ.मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित करना ही काफी था। पर भाजपा ने जिस तरह की भावना दिखाई वो बिल्कुल वैसी थी जैसा कि एक और दिवंगत कांग्रेस नेता को मरने के बाद अपने पाले में लाना है। सरदार वल्लभ भाई पटेल, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, लाल बहादुर शास्त्री, पीवी नरसिम्हा राव, प्रणव मुखर्जी जैसे कांग्रेस नेताओं की पार्टी ने जिस तरह उपेक्षा की उसका नतीजा रहा है कि भाजपा उन्हें अपना बना सकी।

भाजपा तो यही दिखाना चाहती थी कि कांग्रेस में केवल गांधी परिवार के नेताओं का ही वर्चस्व है। पूर्व राष्ट्रपति स्व. प्रणव मुखर्जी की बेटी शर्मिष्ठा मुखर्जी ने जिस तरह के बयान दिए वो कांग्रेस में गांधी परिवार के अलावा किसी दूसरे नेता को महत्व न देने के ठोस उदाहरण थे। शर्मिष्ठा मुखर्जी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, जब बाबा का निधन हुआ था, कांग्रेस ने शोक जताने के लिए वर्किंग कमेटी की बैठक तक नहीं बुलाई थी। एक वरिष्ठ नेता ने मुझसे कहा कि सीडब्लूसी की बैठक दिवंगत राष्ट्रपतियों के लिए नहीं बुलाई जाती। वो आगे लिखती हैं कि यह तर्क पूरी तरह बकवास है, क्योंकि बाद में मुझे बाबा की डायरी से पता चला कि पूर्व राष्ट्रपति केआर नारायणन के निधन के बाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक बुलाई गई थी और उनका शोक संदेश बाबा ने ही तैयार किया था। इस बीच पीवी नरसिम्हा राव के भाई का भी बयान आ गया कि पूर्व पीएम पीवी नरसिम्हा राव की मृत्यु के बाद उनकी अंत्येष्ठि के लिए दिल्ली में जगह नहीं दी गई। उनकी शव यात्रा के समय कांग्रेस मुख्यालय का गेट तक नहीं खोला गया। जाहिर है कि कांग्रेस की ओर से ऐसी गलती डॉ.मनमोहन सिंह के लिए नहीं की गई। इसके पीछे कही न कहीं भाजपा का डर था कि डॉ.मनमोहन सिंह भी कहीं मरने के बाद भाजपा के खेमें में न चले जाएं। वैसे अभी भी भाजपा डॉ.मनमोहन सिंह का स्मारक बनाने और भारत रत्न की घोषणा करके कांग्रेस से आगे निकल सकती है।

भाजपा की चिंता?

दरअसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा तमाम कोशिशों के बाद भी पंजाब जीतने की स्क्रिप्ट नहीं लिख पा रहे हैं। तमाम कोशिशों के बावजूद पार्टी पंजाब में चौथे नंबर से ऊपर नहीं उठ पा रही है। इसी तरह दिल्ली में विधानसभा चुनाव होने ही वाले हैं। दिल्ली विधानसभा की कई सीटें सिख बाहुल्य हैं। दिल्ली में लगभग 12 प्रतिशत सिख समुदाय है। इसके साथ ही दिल्ली की 9 सीटों पर सिख हार जीत का आधार बनते हैं। राजौरी गार्डन, तिलक नगर, जनकपुरी, मोती नगर, राजेंद्र नगर और ग्रेटर कैलाश जैसी सीटों पर सिखों का असर ज्यादा है। वर्तमान में 9 सीटों में से आठ पर आम आदमी पार्टी का कब्जा है। अकाली दल का साथ छूटने के बाद से भाजपा को चिंता है कि कहीं उसके वोट इस बार के दिल्ली विधानसभा चुनावों में कांग्रेस या आम आदमी पार्टी के साथ न चले जाए।

इस बार दिल्ली में किसकी सरकार?

एस चौहान
नई दिल्ली

2011 में जनलोकपाल की मांग और भ्रष्टाचार के विरोध में आंदोलन जब शुरू हुआ तो सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे और अरविंद केजरीवाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के दो मोहरे थे। बाद में केजरीवाल ने अन्ना का आंदोलन हाईजैक कर लिया और दिल्ली की सत्ता का रास्ता बना लिया। इस तरह के आरोप 2011 में कांग्रेस लगाती रही है। कांग्रेस यह भी कहती थी कि केजरीवाल आरएसएस की कठपुतली हैं। लेकिन इन 13 वर्षों में केजरीवाल ने जो खेल दिल्ली में किया उसने भाजपा और कांग्रेस को दिल्ली की सत्ता के लिए तरसा दिया। अब भाजपा केजरीवाल के सरकारी आवास 'शीशमहल' पर आक्रामक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे मुद्दा बनाकर दिल्ली चुनाव को एक दिलचस्प मोड़ दे दिया। दिल्ली विधानसभा चुनावों का ऐलान हो चुका है। दिल्ली की सभी 70 विधानसभा सीटों के लिए एक चरण में 5 फरवरी को वोट डाले जाएंगे। जबकि नतीजे 8 फरवरी को घोषित किए जाएंगे। चुनाव की तारीख के ऐलान के साथ ही दिल्ली में चुनाव 'आदर्श आचार संहिता' लागू हो गई है। आचार संहिता के तहत सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल चुनाव प्रचार के लिए नहीं किया जा सकेगा। चुनावी रैलियों के लिए पुलिस से अनुमति अनिवार्य होगी। इस बार दिल्ली का चुनाव क्या बदलाव के लिए होगा? यानी दिल्ली की जनता उखड़ी सड़कों, सिल्ट से भरे नालों, टेंकर माफिया, बदहाल चिकित्सा, दिल्ली में दम तोड़ते इंफ्रास्ट्रक्चर के खिलाफ मतदान करेगी या फिर दिल्ली की जनता मुफ्त बिजली, पानी, महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवा, महिलाओं को 2100 रुपये महीने के लिए वोट देगी। वैसे राजनीति के जानकार मान रहे हैं कि दिल्ली का यह चुनाव आम आदमी पार्टी के लिए आसान नहीं है। क्योंकि दस साल बाद कांग्रेस दिल्ली में अपनी खिसकी हुई जमीन पर खड़ा होने की कोशिश कर रही है। इससे कुछ विधानसभा सीटों पर चुनाव त्रिकोणिय हो सकता है। यदि कांग्रेस यह चुनाव गंभीरता से लड़ती है तो इसका सीधा फायदा भाजपा को हो सकता है और 26 साल बाद वह सत्ता में वापसी कर सकती है।

घोटालों में घिरी केजरीवाल सरकार

आम आदमी पार्टी 2013 से दिल्ली की सत्ता पर काबिज है। दिल्ली में पिछले पांच वर्षों में जो घोटाले उजागर हुए वो अरविंद केजरीवाल का पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। इनमें शराब घोटाले के आरोप में खुद मुख्यमंत्री रहते हुए अरविंद केजरीवाल को जेल जाना पड़ा था। वैसे भी केजरीवाल ने दिल्ली को नशेड़ी बनाने के लिए शराब की एक बोतल के साथ एक फ्री कर दी थी। दक्षिण के शराब कोरोबारियों को दिल्ली में बुला लिया था। खैर अब केजरीवाल कुछ शर्तों के साथ जमानत पर हैं। यानी वो मुख्यमंत्री तो बन सकते हैं, लेकिन सचिवालय नहीं जा सकते। किसी पत्रावली पर हस्ताक्षर नहीं कर सकते। ऐसे में केजरीवाल का सीएम रहना या न रहना एक समान है। भाजपा का आरोप है कि अरविंद केजरीवाल के शासनकाल में दिल्ली जल बोर्ड 70 लाख करोड़ रुपये के घाटे में चला गया। जिस मोहल्ला क्लीनिकों का बढ़ चढ़कर प्रचार किया जाता है उसमें भी करोड़ों रुपये का घोटाला सिर्फ जांच के नाम पर किया गया। इसके अलावा डीटीसी बस खरीद व खरखाव घोटाले सहित तमाम भ्रष्टाचार के आरोप अरविंद केजरीवाल की सरकार पर लगते रहे हैं। दिल्ली में प्रदूषण चरम पर रहता है। इसकी एक वजह टूटी सड़कें भी हैं जिन पर वाहन चलते हैं तो धूल का गुब्बार उठता है। मुफ्त की योजनाओं और घोटालों की वजह से दिल्ली इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में काफी पिछड़ चुका है। इसलिए दिल्ली में जल निकासी का उचित प्रबंध नहीं है। हल्की सी बारिश में दिल्ली तालाब में तब्दील हो जाती है।

अरविंद केजरीवाल कुछ शर्तों के साथ जमानत पर हैं, यानी वो मुख्यमंत्री तो बन सकते हैं, लेकिन सचिवालय नहीं जा सकते, किसी पत्रावली पर हस्ताक्षर नहीं कर सकते, ऐसे में केजरीवाल का सीएम रहना या न रहना एक समान है।

शीशमहल बनेगा गले की फांस

2024 में दिल्ली के ओल्ड राजेंद्र नगर में राउज आईएएस कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में बरसात का पानी भरने से यूपीएससी की तैयारी कर रहे 3 छात्रों की मौत हो गई थी। दस वर्षों में यमुना नदी को साफ करने का अरविंद केजरीवाल हर साल छठ पूजा के समय वादा करते रहे, लेकिन यमुना साफ नहीं कर पाए। आखिरी बार उन्होंने 2025 तक यमुना साफ करने का दावा किया था, लेकिन यमुना मैली की मैली ही है। यही एंटी इनकंबेंसी दिल्ली के विधानसभा चुनावों में झलक रही है। अब दिल्ली की अरविंद केजरीवाल और आतिशी सरकार के पास जनता को दिखाने के लिए कोई रिपोर्ट कार्ड नहीं है, इसलिए पुजारियों और ग्रंथियों को 18000 रुपये सम्मान राशि देने और महिलाओं को 2100 रुपये प्रतिमाह देने का एक और वादा किया जा रहा है। जबकि 18 महीने से दिल्ली के इमामों को केजरीवाल वेतन नहीं दे रहे हैं। ऐसे में पुजारी या ग्रंथी केजरीवाल पर कैसे यकीन कर सकते हैं? इसलिए आम आदमी पार्टी की सरकार के पास जनता को दिखाने और बताने के लिए कोई उपलब्धि नहीं है। उनके पास दिल्ली की जनता के लिए एक चीज दिखाने के लिए अवश्य है, वो है मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा बनवाया गया अपना सरकारी आवास जिसे 'शीश महल' कहा जाता है। मुख्यमंत्री रहते हुए अरविंद केजरीवाल ने 48 करोड़ रुपये की लागत से यह 'शीश महल' तब बनवाया था जब दिल्ली की जनता कोरोना महामारी के समय अस्पतालों में एक बेड और आक्सीजन के लिए तड़प रही थी। 2024 में 'शीश महल' के भीतर क्या-क्या सुविधाएं हैं यह खुलासा हुआ तो हर कोई हैरान रह गया था। क्योंकि अरविंद केजरीवाल ने पहली बार मुख्यमंत्री बनने पर एक शपथ-पत्र दिया था कि वो कोई सरकारी सुविधा नहीं लेंगे। कोई बंगाल-गाड़ी नहीं लेंगे। हर काम जनता की राय लेने के बाद करेंगे। लेकिन वक्त के साथ केजरीवाल ऐसे बदले कि अब शायद जनता उन्हें बदल दे? क्योंकि उनका शपथ-पत्र तक छूठा साबित हो चुका है। ऐसे नेता पर दिल्ली की जनता भला फिर क्यों यकीन करे?

केजरीवाल व आतिशी की घेराबंदी

कांग्रेस दिल्ली के पिछले दो विधानसभा चुनावों में सिर्फ रस्म अदायगी के लिए चुनाव लड़ी, इससे दिल्ली में कांग्रेस का जो वोट बैंक था वो पूरी तरह खिसक कर आम आदमी पार्टी के पास चला गया। यही वजह रही कि आम आदमी पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में बंपर जीत हासिल की। 2015 के विधानसभा चुनाव में केजरीवाल की आम आदमी पार्टी को 67 सीटें मिली थी, जबकि तीन भाजपा के हिस्से में आई थी। कांग्रेस शून्य पर रह गई थी। 2020 के विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस शून्य पर रही जबकि भाजपा तीन से बढ़कर आठ पर पहुंच गई थी और 62 सीटों के साथ केजरीवाल तीसरी बार मुख्यमंत्री बने थे। 2020 में भले ही भाजपा की पांच सीटें बढ़ी, लेकिन ये बदलाव के संकेत थे। इस बार कांग्रेस पुरानी गलतियों से सबक लेकर अपने खोए वोट बैंक को वापस लेने की जद्दोजहद कर रही है। इसलिए उसने अपने प्रत्याशियों का चयन करने में सावधानी बरती है। कांग्रेस दावा कर रही है कि वो शीला दीक्षित द्वारा कराए गए कामों का गिनाकर वोट मांगेगी। साथ ही कांग्रेस ने भी केजरीवाल की तर्ज पर महिलाओं को 2500 रुपये प्रतिमाह देने के साथ 25 लाख रुपये का बीमा देने की घोषणा कर दी है। यानी कांग्रेस इस बार दिल्ली का चुनाव लड़ते हुए नजर आ रही है। इसलिए कांग्रेस ने नई दिल्ली से विधायक एवं पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल को घेरने का चक्रव्यूह रचा है। उनके मुकाबले कांग्रेस ने नई दिल्ली विधानसभा सीट से पूर्व सीएम शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित को प्रत्याशी बनाया है। यानी साफ है कि कांग्रेस सत्ता में आती है तो सीएम को हराने वाला ही सीएम बनेगा। इसी तरह भाजपा ने भी दिल्ली के सीएम रहे साहिब सिंह वर्मा के बेटे पूर्व सांसद प्रवेश वर्मा को अरविंद केजरीवाल के मुकाबले उतारा है। यानी दिल्ली के दो पूर्व सीएम के बेटों ने केजरीवाल की घेराबंदी कर ली है। इससे खुद केजरीवाल का चुनाव टफ हो गया है। दिल्ली की मौजूदा सीएम आतिशी को भी घेरने की पूरी कोशिश कांग्रेस और भाजपा ने की है। दिल्ली की कालकाजी विधानसभा सीट से भाजपा ने अपने पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी पर दाव चला है तो कांग्रेस ने कालकाजी सीट से अलका लांबा को प्रत्याशी बनाया है। अलका लांबा 1994 से 2014 तक कांग्रेस में थीं, लेकिन 2014 में आम आदमी पार्टी में शामिल हो गई थी। उन्होंने 2015 में चांदनी चौक से चुनाव जीता, लेकिन अपना कार्यकाल पूरा करने से पहले ही, 2019 में वह फिर से कांग्रेस में शामिल गई थी। अलका लांबा ने कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में दो विधानसभा चुनाव 2003 में मोती नगर से और 2020 में चांदनी चौक से लड़े और दोनों हार गईं थी।

- **दिल्ली सरकार के पास जनता को दिखाने के लिए कोई उपलब्धि भले ही नहीं है, लेकिन सरकार के पास जनता को दिखाने के लिए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का सरकारी आवास अवश्य है जिसे 'शीश महल' कहा जाता है।**
- **कांग्रेस ने नई दिल्ली से पूर्व सीएम शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित को प्रत्याशी बनाया है, तो भाजपा ने दिल्ली के ही पूर्व सीएम साहिब सिंह वर्मा के बेटे प्रवेश वर्मा को उम्मीदवार बनाया है यानी दिल्ली के दो पूर्व सीएम के बेटे से अरविंद केजरीवाल का मुकाबला है।**

अन्ना आंदोलन से निकला भ्रष्ट नेता?

भ्रष्टाचार के खिलाफ एक आंदोलन ने कैसे अरविंद केजरीवाल को दिल्ली का सरताज बना दिया? दरअसल भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन 2011 में सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के नेतृत्व में शुरू हुआ था। यह आंदोलन कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार के दौरान हुए कई घोटालों के उजागर होने पर शुरू हुआ था। आंदोलनकारियों ने देश में सार्वजनिक पदों पर बैठे लोगों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों की जांच और मुकदमा चलाने के लिए जन लोकपाल विधेयक की मांग की थी। 2011 में 4 अप्रैल को अन्ना हजारे ने जन लोकपाल विधेयक की मांग को लेकर दिल्ली के रामलीला मैदान में आमरण अनशन शुरू कर दिया था। सरकार ने उनकी मांग मानते हुए अनशन के पांचवें दिन यानी 9 अप्रैल को अधिसूचना जारी की, जिसके बाद अन्ना ने एक छोटी बच्ची के हाथों नींबू पानी पीकर अपना अनशन तोड़ा था। मगर 15 अगस्त तक संसद में विधेयक पास नहीं हुआ तो 16 अगस्त को अन्ना हजारे दोबारा अनशन पर बैठ गए। इसके बाद देशभर में अन्ना के समर्थन ने आंदोलन शुरू कर दिया। आखिरकार सरकार को आनन-फानन में इस बिल को लोकसभा में लाना पड़ा। लोकसभा में 18 दिसंबर 2013 में बिल पास होने के बाद अन्ना का आंदोलन खत्म हुआ था। संसद से बिल पारित होने के बाद जन लोकपाल विधेयक लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013 के रूप में कानून बन गया। इसे 1 जनवरी, 2014 को राष्ट्रपति की स्वीकृति भी मिली और यह 16 जनवरी 2014 से लागू हो गया। अन्ना के आंदोलन को किरण बेदी, कुमार विश्वास, अनुपम खेर, जनरल वीके सिंह, योगेंद्र यादव जैसी हस्तियों ने समर्थन दिया था। अरविंद केजरीवाल, संजय सिंह, टीवी चैनल की पत्रकार शाजिया इल्मी जैसे कई लोग इस आंदोलन के बाद हीरो बन गए। अन्ना अपने आंदोलन को राजनीतिक लोगों से दूर रखते थे। लेकिन अन्ना के इसी आंदोलन से निकले कई लोग नेता ही नहीं बने बल्कि विधानसभा और लोकसभा, राज्यसभा तक पहुंच गए। इन्हीं लोगों ने मिलकर आम आदमी पार्टी बनाई थी। केजरीवाल इसके संयोजक बने। 16 दिसंबर, 2012 को दिल्ली में निर्भया गैंगरेप की घटना के बाद हुए प्रदर्शनों में लोगों की सहानुभूति को आम आदमी पार्टी ने दोनों हाथों से बटोरा। हालांकि आम आदमी पार्टी जल्द ही बिखरने भी लगी थी। इससे जुड़े कई लोग दूसरी पार्टियों में शामिल हो गए, तो कुछ ने राजनीति से किनारा कर लिया। केजरीवाल से मतभेदों के चलते कई लोगों को इस पार्टी का साथ छोड़ना पड़ा। मगर पूरे आंदोलन का सबसे ज्यादा फायदा केजरीवाल ने उठाया। इस आंदोलन से नेता बने केजरीवाल को दिल्ली ने तीन बार अपना भविष्य सौंपा था।

भारत में डीप स्टेट के एजेंट सक्रिय

कांग्रेस नेता राहुल गांधी क्या डीप स्टेट के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं? क्योंकि भारत में इकलौते राहुल गांधी ऐसे नेता है जो गौतम अडानी के पीछे हाथ धो कर पड़े हैं, यह सवाल इसलिए क्योंकि डीप स्टेट नहीं चाहता कि भारत नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत अर्थ व्यवस्था बने।

दुनियां को अपने हिसाब से चलाने वाले डीप स्टेट यानी ब्यूरोक्रेट, खुफिया एजेंसियां और मल्टीनेशनल हाउसों की ताकत इस सीमा तक है कि वे उन राष्ट्रों में तख्ता पलट करने में भी सक्षम है जो उनके एजेंडे में फिट नहीं बैठते हैं। भारत में डीप स्टेट की यह ताकत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज में उतनी परिणामोन्मुखी साबित नहीं हो पा रही है जितना इसका सफल इतिहास रहा है। ट्रंप, जॉनसन, शिंजो आबे से जुड़े घटनाक्रम विशुद्ध रूप से इसी रणनीति का हिस्सा हैं। इसके बाबजूद भारत में पीएम नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और वैचारिक समर्थन के मौजूदा प्रभाव के आगे अभी वैसे हालात नहीं है, जैसा कि कल्पित है। इसके इतर संकेत तो चिंतित करने वाले ही हैं। भारत में डीप स्टेट लॉबी की जड़े 70 साल पुरानी हैं कभी रूसी तो कभी चीनी और अमेरिकी जासूसी से लेकर उनके एजेंडे को चलाने वाला बहुत ही विस्तृत प्रभाव वाला वर्ग यहां हमेशा से मौजूद रहा है। लेफ्ट लिबरल प्रभाव वाला यह वर्ग इसी डीप स्टेट लॉबी के इशारों पर पिछले आठ सालों से समाज में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और कतिपय अधिकारों के नाम पर यहां पूरी ताकत से सक्रिय है। किसान आंदोलन के नाम पर 26 जनवरी 2022 को लालकिले पर उपद्रव हो या अमेरिकी राष्ट्रपति की मौजूदगी में 23 फरवरी से 26 फरवरी, 2020 के बीच हुए दंगों में 53 लोगों की मौत की साजिश, डॉलर और पेट्रो डॉलर से लेकर चीन से मिलने वाला चंदा सब जगह भारत के विरुद्ध काम करता हुआ नजर आता है। शिंजो आबे की हत्या के साथ हमारे देश में एक वर्ग खड़ा नजर आता है, कांग्रेस के एक नेता ने आबे की हत्या को भारत में अग्निवीर योजना से जोड़ दिया था, क्योंकि हत्यारा जापान के एक पार्ट टाइम फोर्स का हिस्सा था। सोशल मीडिया पर कुछ पत्रकारों और एकेडेमिक्स ने जॉनसन, ट्रंप और श्रीलंका के मामलों के तत्काल बाद यही रुख और आशा व्यक्त की थी कि अब अगली बारी नरेंद्र मोदी की है।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

वर्ल्ड आर्डर में भारत के प्रभुत्व

किसान आंदोलन, शाहीन बाग का सीएए आंदोलन, अग्निवीर, लाल किला कांड, नूपुर शर्मा, हिजाब जैसे मुद्दे पर जिस तरह की उग्रता के साथ प्रतिक्रियाएं सामने आई, वह विदेशी षड्यंत्र का हिस्सा हो सकती हैं। प्रदर्शन के नाम पर एनजीओ और सिविल सोसायटी की भूमिकाएं भी जिस तरह से बेनकाब हुई है वह समाज के अंदर तक देश विरोधी ताकतों की घुसपैठ को रेखांकित करती हैं। नागरिक अधिकारों एवं गरीब कल्याण के नाम पर देश में करीब 40 हजार करोड़ की समानांतर आर्थिकी पर चोट करने वाले मोदी सरकार के नए कानून की प्रतिक्रियाओं को देश में आंदोलनजीवियो की गतिविधियों के साथ समझने की आवश्यकता है। भारत की वर्ल्ड आर्डर में स्थिति का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि कोरोना के बाद हमारी अर्थव्यवस्था पटरी पर आ गई है और कोरोना से संबंधित स्वास्थ्य ढांचा न होने के बाबजूद भारत ने इस महामारी का सफलतापूर्वक सामना किया। एक बड़े वर्ग ने देश के अंदर ही इस महामारी को लेकर जिस तरह का कुप्रचार किया वह उसी डीप स्टेट लॉबी के एजेंडे का हिस्सा रहा है। वैक्सीन को लेकर भी विपक्षी दलों ने जिस तरह का भ्रम पैदा किया वो भी डीप स्टेट का ही एजेंडा था। किंतु भारत ने दुनियाभर को डब्ल्यूएचओ के अडंगों के बाबजूद दो प्रभावी वैक्सीन उपलब्ध कराई। डब्ल्यूएचओ उस समय चीन की गोद में बैठा था। यह वर्ल्ड आर्डर में भारत के प्रभुत्व का एक उदाहरण था जिसे वैक्सीन डिप्लोमेसी कहा गया था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डीप स्टेट और विदेशी ताकतों के इरादों को भांप चुके हैं, डीप स्टेट नहीं चाहता था कि डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव जीतें, लेकिन ट्रंप चुनाव जीते और अब उनके शपथ लेने के बाद डीप स्टेट का क्या होगा यह भविष्य बताएगा?

रूस पर प्रतिबंध की भारत ने हवा निकाली

दरअसल दुनियां के धनी और ताकतवर देश जिनमें यूरोप, अमेरिका और चीन शामिल है, वो नहीं चाहते कि भारत बदलती विश्व व्यवस्था में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़े। क्योंकि नरेंद्र मोदी की लीडरशिप का मतलब है एक मजबूत और स्वतंत्र सोच वाला भारत जिसके लिए नेशन फर्स्ट है। रूस-यूक्रेन युद्ध के उदाहरण से समझे। यूरोप और अमेरिका ने रूस के विरूद्ध तमाम प्रतिबंध लगाए, जिनकी भारत ने हवा निकाल दी। भारत आज तक अपने उसी रुख पर कायम है जो रूस की आलोचनाओं या प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करता है। ताकतवर देश और डीप स्टेट के व्यापारी चाहते थे कि कोई भी मुल्क रूस से तेल न खरीदे किंतु भारत ने इसे नहीं माना है और अपनी जरूरतों के हिसाब से तेल खरीद रहा है। यह साबित करता है कि डीप स्टेट यानी मल्टीनेशनल हाउसों का दबाब भारत को ऐसे देश के रूप में उभरने नहीं देना चाहता है जो उसके व्यापारिक हितों के खिलाफ चले। चीनी कंपनियों के विरूद्ध ईडी, इनकम टैक्स की कारवाई से किसके हित प्रभावित हो रहे है? क्या कोई देश चीनी दबदबे के आगे चीनी एप्स को राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर प्रतिबंधित करने का साहस कर पाया है।

राहुल गांधी क्या डीप स्टेट के एजेंट हैं?

कांग्रेस नेता राहुल गांधी क्या डीप स्टेट के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं? क्योंकि भारत में इकलौते राहुल गांधी ऐसे नेता है जो गौतम अडानी के पीछे हाथ धो कर पड़े हैं। यह सवाल इसलिए क्योंकि डीप स्टेट नहीं चाहता कि भारत नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत अर्थ व्यवस्था बने। सवाल ये भी कि क्या विदेशी ताकतें गौतम अडानी के बहाने भारत की अर्थव्यवस्था पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी से हमला करती हैं। विदेशी ताकतें ही कभी मेडिकल सिस्टम को चरमराना चाहती हैं, कभी आंदोलनों और सामाजिक वैमनस्यता को बढ़ावा देने का प्रयास करती हैं। कभी धर्म के बहाने उन्माद फैलाती है तो कभी सीएए और एनआरसी पर विरोधी ताकतों को भड़का कर भारत को अस्थिर करने का प्रयास करती हैं। इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि विदेशी ताकतें सीधे भारत की अर्थव्यवस्था पर हमला करा रही हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के मजबूत स्तंभ बन चुके गौतम अडानी ग्रुप पर पहले अमेरिकी रिसर्च कंपनी हिंडन बर्ग से हमला कराया गया। अब अमेरिकी न्याय विभाग का अडानी समेत उनके परिवार पर गंभीर आरोप लगाना और अगले ही दिन अडानी व उनके परिवार के खिलाफ कोई मामला नहीं होने की बात करना। इन्हीं आरोपों की वजह से अडानी ग्रुप के शेयरों में भारी गिरावट का दर्ज होना। यानी भारतीय अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करने की खतरनाक साजिश रची गई। इतना ही नहीं उन्हीं रिपोर्टों को आधार बनाकर लगातार संसद से सड़क तक विपक्षी पार्टियों का हंगामा करना क्या भारत में डीप स्टेट की साजिश का हिस्सा नहीं हो सकती है? क्या विपक्ष भी डीप स्टेट के विदेशी जाल में फंस चुका है? ये ऐसे तमाम सवाल हैं जो मौजूदा परिस्थितियों और क्रमवार घट रही घटनाओं से स्वयं पैदा हो रहे हैं।

डीप स्टेट की कोशिशें जारी

विशेषज्ञों का कहना है कि कई विदेशी ताकतें दूसरे देशों में डीप स्टेट की कोशिशें लगातार जारी रखती हैं। डीप स्टेट अपने आप में अवैध नेटवर्क से स्थापित एक गुप्त सरकार होती है, जो सत्ता के खिलाफ अपने और विदेशी एजेंडे के मुताबिक काम करती है। सीधे शब्दों में कहें तो यह अपने ही देश व सरकार के खिलाफ साजिशों से जुड़ी होती है। इसके लिए बकायदा कुछ लोगों को विदेश से फंडिंग तक होती है। डीप स्टेट का मकसद किसी देश की मौजूदा सरकार को अस्थिर करना व संबंधित देश के हालात को हर तरह से खराब करने की कोशिश होती है, वह आर्थिक, सामाजिक या गृहयुद्ध जैसे प्रयासों में से कुछ भी हो सकता है। ऐसा करके विदेशी ताकतें किसी भी देश में अपने प्रभाव वाले समूहों को बढ़ावा देती हैं। ताकि सब कुछ उनके मुताबिक हो सके। इस काम में देश देख रहा है कि किस तरह कांग्रेस सांसद राहुल गांधी विदेशी ताकतों के एजेंडे को आगे बढ़ाते हैं। भले ही उनकी पार्टी के नेता उनसे असहमत ही क्यों न हों। पिछले दिनों इंडिया गठबंधन का हिस्सा रही उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी और पश्चिम बंगाल की टीएमसी ने अडानी के मुद्दे पर कांग्रेस से खुद को अलग कर लिया था, लेकिन राहुल गांधी का तो एक मात्र एजेंडा अडानी ही है भले ही उनके सहयोगी दल उनसे असहमत ही क्यों न हों।

कांग्रेस के एक नेता ने शिंजो आबे की हत्या को अग्निवीर योजना से जोड़ा था, क्योंकि हत्यारा जापान में पार्ट टाइम फोर्स का हिस्सा था, इसके बाद कुछ पत्रकारों और एकेडेमिकस ने जॉनसन, ट्रंप व श्रीलंका के मामलों के बाद यही आशा व्यक्त की थी कि अब बारी नरेंद्र मोदी की है।

डीप स्टेट का क्या होगा?

जानकार मानते है कि भारत में डीप स्टेट का प्रयास आज से नहीं हो रहा, बल्कि भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार बनने के बाद पिछले 10 वर्षों से जारी है। विदेशी ताकतों को पता है कि अडानी सिर्फ एक उद्योगपति नहीं, बल्कि वह भारत की अर्थव्यवस्था के मजबूत स्तंभ हैं। इसलिए विदेशी ताकतें उन्हें टारगेट कर रही हैं। यह सिर्फ अडानी पर नहीं, बल्कि पूरे भारत पर हमला है। विपक्ष भी कहीं न कहीं उनकी चाल में फंसता दिख रहा है। अडानी के बहाने संसद को नहीं चलने देना, एक तरीके से जनहित के मुद्दों को रोकना है। जनकल्याण और आर्थिक प्रगति के कार्यों में बाधा डाली जा रही है। ऐसा करके वित्तीय सुधारों के कार्यों को रोका जा रहा है। संसद नहीं चलने से जनता के करोड़ों रुपयों की बर्बादी हो रही है। यह भारत की प्रगति में बाधक है। ताजा उदहारण पड़ोसी बांग्लादेश है जहां डीप स्टेट ने शेख हसीना का तख्ता पलट करा दिया। डीप स्टेट ने बांग्लादेश में विपक्षी दलों और कट्टरपंथियों को ताकतवर बनाकर प्रधानमंत्री शेख हसीना को अपदस्थ करा दिया। जैसा बांग्लादेश में हुआ, वैसा ही भारत में भी कराने की डीप स्टेट कोशिश कर रहा है। हालांकि भारत की जनता बहुत समझदार है। इसलिए भारत में वह कामयाब नहीं हो पा रहा। वह कोशिश तो बहुत कर रहा है, लेकिन यहां अव्यवस्था नहीं फैल पा रही। फिर भी विदेशी ताकतें अपना पूरा प्रयास कर रही हैं कि भारत में भी अराजकता फैले। इसलिए कभी अडानी पर, कभी बाबा रामदेव पर, कभी हमारी सेना पर, कभी रफैल पर, कभी हमारी वैक्सीन पर, कभी मेडिकल सिस्टम तो कभी संविधान पर अटैक करके भारत की शक्ति को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। मगर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। क्योंकि भारत की जनता को काई विदेशी ताकत बरगला नहीं सकती। फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डीप स्टेट और विदेशी ताकतों के इरादों को भांप चुके हैं। डीप स्टेट नहीं चाहता था कि डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव जीतें, लेकिन ट्रंप चुनाव जीते और अब उनके शपथ लेने के बाद डीप स्टेट का क्या होगा यह भविष्य बताएगा? ●

निकाय चुनाव कांग्रेस-भाजपा में सीधी टक्कर

भाजपा में प्रदेश स्तर से लेकर बूथ स्तर तक एक मजबूत व संगठित टीम है, जबकि कांग्रेस प्रत्याशियों को अपने दम पर चुनाव लड़ना है, क्योंकि कांग्रेस के पास वैसा संगठन नहीं है जैसा भाजपा के पास है, इसलिए कहा जा सकता है कि नगर निगम चुनाव में कांग्रेस संगठन स्तर पर बेहद कमजोर है।

कृष्ण कुमार चौहान

राज्य में 11 नगर निगमों, 43 नगर पालिका परिषदों और 46 नगर पंचायतों सहित 100 नगर निकायों के लिए चुनाव 23 जनवरी को होने हैं और नतीजे 25 जनवरी को आएंगे। इस चुनाव में ईवीएम की जगह मतपत्रों के माध्यम से वोट डाले जाएंगे। राज्य की 100 नगर निकायों के लिए उत्तराखंड के 30,83,500 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 14,93,519 महिलाएं, 15,89,467 पुरुष मतदाता हैं। जबकि 514 अन्य मतदाता हैं। उत्तराखंड के पांच बड़े नगर निगम देहरादून, हल्द्वानी, काशीपुर सामान्य सीट हैं। हरिद्वार सीट ओबीसी महिला के लिए आरक्षित है, जबकि श्रीनगर सामान्य महिला के लिए आरक्षित हैं। जिन पर हर किसी की नजर रहेगी। इन पांच बड़े नगर निगमों के चुनावी समीकरण क्या होंगे इसे समझना भी आवश्यक है? उत्तराखंड में भाजपा का संगठन मजबूत है। भाजपा का कार्यकर्ता जुझारु माना जाता है। भाजपा कार्यकर्ता यदि किसी वजह से नाराज भी होता है तो उसकी नाराजगी चंद रोज की ही होती है। मतदान का दिन आने तक नाराजगी खत्म हो जाती है और वह खुद को रोक नहीं पाता। लिहाजा फिर से जी जान से चुनाव में जुट ही जाता है। इसके पीछे मनोवैज्ञानिक तर्क यह दिया जाता है कि भाजपा कार्यकर्ता हार को स्वीकार करना नहीं चाहता। इसलिए हर चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को जीताना कार्यकर्ता की नैतिक जिम्मेदारी भी हो जाती है। यदि भाजपा प्रत्याशी हारता है तो हर कार्यकर्ता अपनी निजी हार मानता है। इस लिहाज से कांग्रेस को भाजपा की एक मजबूत टीम से टक्कर लेनी होगी। यही कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। चुनाव निशान आवंटित होने के बाद उत्तराखंड में निकाय चुनाव पूरे शबाब पर है। कांग्रेस तथा भाजपा में आधारभूत अंतर भी देखा जा रहा है। चुनाव लड़ने के लिहाज से दोनों दलों में बड़ा अंतर है। भाजपा में प्रदेश स्तर से लेकर बूथ स्तर तक एक मजबूत और संगठित टीम काम कर रही है, जबकि कांग्रेस प्रत्याशियों को अपने दम पर चुनाव लड़ना पड़ रहा है। इसकी वजह कांग्रेस के पास वैसा संगठन नहीं है जैसा भाजपा के पास है। इसलिए कहा जा सकता है कि नगर निगम चुनाव में कांग्रेस संगठन स्तर पर बेहद कमजोर है। कांग्रेस की इसी कमजोरी का फायदा भाजपा को मिल सकता है। लेकिन प्रतिद्वंदी कांग्रेस प्रत्याशी को कमजोर समझने की भूल भी भाजपा को नहीं करनी होगी।

हल्द्वानी में कांटे की टक्कर

हल्द्वानी नगर निगम के चुनाव में इस बार 2 लाख 41 हजार मतदाता अपने मेयर का चुनाव करेंगे। इनमें 1 लाख 18 हजार महिलाएं तथा 1 लाख 23 हजार पुरुष हैं। हल्द्वानी नगर निगम चुनाव में भाजपा ने अपने फायर ब्रांड नेता गजराज सिंह बिष्ट पर दाव लगाया है। जबकि कांग्रेस ने हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश की पहली पसंद ललित जोशी पर भरोसा किया है। वैसे ललित जोशी कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की श्रेणी में भी आते हैं। भाजपा प्रत्याशी गजराज सिंह बिष्ट बेदाग छवि के साथ 40 वर्षों से भाजपा के लिए जमीनी स्तर पर संघर्ष करते रहे हैं। विद्यार्थी परिषद के सामान्य कार्यकर्ता से लेकर प्रदेश महामंत्री तक का सफर करने वाले कार्यकर्ता गजराज सिंह बिष्ट को भाजपा ने मेयर प्रत्याशी इसलिए बनाया है क्योंकि वो अपनी बात बेबाक तरीके से बिना किसी लाग लपेट के रखने के लिए प्रसिद्ध है। जनसामान्य में उनकी अपनी पहचान है, मतदाताओं पर मजबूत पकड़ है। आम जनता और कार्यकर्ताओं के साथ बेहतर तालमेल रखने वाले हैं। उनसे कुछ नेता भले ही नाराजा भी हो सकते हैं, लेकिन चुनाव में इन नेताओं को साबित करना होगा कि मेयर को जिताने में उन्होंने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। ऐसा इसलिए भी कहा जा रहा है कि भाजपा का कोई भी नेता नहीं चाहेगा कि पार्टी हारे। वैसे भी भाजपा में चुनाव व्यक्ति नहीं बल्कि पार्टी लड़ती है। पार्टी का चुनाव निशान ही चुनाव में प्रत्याशी होता है। यह संदेश खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिया है। इसलिए भाजपा को किसी तरह के भीतर घात का खतरा तो नहीं समझा जा सकता। मेयर प्रत्याशी गजराज सिंह बिष्ट भी जनता से वादा कर चुके हैं कि नए साल के पहले महीने की मेहनत के बदले वो हल्द्वानी महानगर को सुनहरे 5 वर्ष देंगे। गजराज सिंह बिष्ट के साथ निवर्तमान मेयर जोगेंद्र पाल सिंह रौतेला भी मजबूती से खड़े हैं। उनका कहना है कि ट्रिपल इंजन की सरकार में ही देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हल्द्वानी नगर निगम को 2200 करोड़ की सौगात दी थी। जिस पर कार्य शुरू हो चुका है। इसलिए हल्द्वानी नगर निगम क्षेत्र में विकास के लिए भाजपा का मेयर चुना जाना नितांत आवश्यक है।

- **हल्द्वानी नगर निगम चुनाव में भाजपा ने अपने फायर ब्रांड नेता गजराज सिंह बिष्ट पर दाव लगाया है, जबकि विधायक सुमित हृदयेश की पसंद ललित जोशी पर भरोसा किया है, गजराज सिंह बिष्ट और ललित जोशी की बेदाग छवि है। दोनों राजनीति में जमीनी स्तर पर संघर्ष करते रहे हैं।**
- **हल्द्वानी मेयर चुनाव में शोएब अहमद समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी हैं जिन्हें मुस्लिम नेता मतीन सिद्दिकी ने समर्थन दिया, सपा प्रत्याशी शोएब अहमद और उनको समर्थन देने वाले मतीन सिद्दिकी कांग्रेस को कितना डेंट पहुंचाते हैं ये तो 25 जनवरी को ही पता चलेगा।**

शोएब ने क्यों किया सरेंडर?

कांग्रेस ने हल्द्वानी नगर निगम चुनाव में विधायक सुमित हृदयेश की पसंद ललित जोशी को मैदान में उतारा है। छात्र जीवन में ही उन्होंने राजनीति में इंट्री कर ली थी। छात्र राजनीति से निकल कर आए, ललित जोशी प्रखर वक्ता हैं। साफ छवि उन्हें भाजपा के मुकाबले के लिए मजबूत प्रत्याशी बनाती है। इसलिए कहा जा सकता है कि यह चुनाव एक तरफा तो बिल्कुल नहीं है। वैसे भी हल्द्वानी का मुस्लिम वोट एक मुस्त ललित जोशी ही मिल सकता है। क्योंकि रेलवे की भूमि खाली कराने का विरोध करने वाले विधायक सुमित हृदयेश के मुसलमानों पर बड़े अहसान है। वो ही मुस्लिम समाज द्वारा कब्जाई गई रेलवे की भूमि का विरोध करने के लिए सुप्रीम कोर्ट तक गए। सुमित हृदयेश की पैरवी की वजह से ही रेलवे की भूमि से अतिक्रमण हटाने का मामला कोर्ट की कार्रवाई के कारण लटका हुआ है। वैसे भी मुस्लिम वोट भाजपा को हराने वाले प्रत्याशी को ही एक मुस्त पड़ता रहा है। ललित जोशी राजनीति के मंझे खिलाड़ी हैं। वो अच्छी तरह जानते हैं कि कहां और किसके बीच कैसा नाटक करना है। इसलिए उन्हें राजनीति में दूसरा केजरीवाल या एनडी तिवारी भी कहा जाता है। हल्द्वानी मेयर चुनाव में शोएब मलिक ने समाजवादी पार्टी प्रत्याशी के रूप में नामांकन कराया, लेकिन रहस्यमयी तरीके से नाम वापस लेकर मुस्लिम नेता मतीन सिद्की को भी धोखा दे दिया। शोएब मलिक ने क्यों सरेंडर किया, इसका जबाव मुस्लिम मतदाताओं को देना चाहिए। शिव गणेश बहुजन समाज पार्टी से और मोहन कांडपाल उत्तराखंड क्रांति दल का चुनाव निशान कुर्सी लेकर मेयर की कुर्सी पर विराजमान होने के लिए चुनाव मैदान में हैं।

देहरादून नगर निगम

देहरादून नगर निगम मेयर चुनाव में कांग्रेस और भाजपा में कांटे की टक्कर मानी जा रही है। कांग्रेस ने राज्य आंदोलनकारी और वरिष्ठ नेता वीरेंद्र पोखरियाल को चुनाव मैदान में उतारा है। पोखरियाल डीएवी कॉलेज में छात्रसंघ अध्यक्ष रह चुके हैं। कांग्रेस के शासन काल में वो सहकारिता अध्यक्ष भी रहे हैं। उनकी गिनती कांग्रेस के सक्रिय और तेज तर्रार नेताओं में होती है। पोखरियाल के मुकाबले भाजपा में भारतीय युवा मोर्चा के अध्यक्ष रहे सौरभ थपलियाल को मैदान मे उतारा है। थपलियाल युवाओं में काफी लोकप्रिय हैं। उनकी फैन फॉलोइंग भी ज्यादा है। 2022 विधानसभा चुनाव में उनका डोईवाला विधानसभा सीट से टिकट कट गया था। इस बार पार्टी ने उन पर मेयर पद के लिए भरोसा जताया है। देहरादून के 7 लाख 65 हजार मतदाता देहरादून नगर निगम चुनाव में पोखरियाल और थपलियाल के भाग्य का फैसला करेंगे। एक सौ वार्ड वाले इस नगर निगम क्षेत्र में पांच विधानसभा क्षेत्र आते हैं। इसलिए पांचों विधायकों की प्रतिष्ठ से भी इस चुनाव को जोड़ कर देखा जा रहा है। लिहाजा देहरादून में काफी रोचक मुकाबला देखने को मिलेगा।

हरिद्वार नगर निगम

हरिद्वार नगर निगम की मेयर सीट ओबीसी महिला के लिए आरक्षित होने से यहां का चुनाव पेचिदा माना जा रहा है। हरिद्वार नगर निगम क्षेत्र में 1 लाख 93 हजार मतदाता हैं। 60 वार्डो वाले हरिद्वार नगर निगम में ब्राह्मण और वैश्य मिश्रित जनसंख्या का दबदबा है। हरिद्वार में ठाकुर समाज तीसरे नंबर पर आता है। कुछ अल्पसंख्यक समाज के मतदाता भी इस नगर निगम में हैं। लिहाजा भाजपा ने ओबीसी महिला के लिए आरक्षित नगर निगम से किरण जैसल पर दाव चला है। जैसल दो बार नगर निगम पार्षद रह चुकी हैं। उनके पति सुभाष चंद्र मायापुर वार्ड से तीन बार पार्षद रह चुके हैं। किरण के बेटे सहित पूरा परिवार भाजपा का कट्टर समर्थक है। किरण जैसल को स्थानीय सांसद और विधायक की पैरवी से ही भाजपा का टिकट भी मिला है। इसलिए किरण जैसल हरिद्वार नगर निगम चुनाव में भाजपा की मजबूत प्रत्याशी के रूप में देखी जा रही हैं। उनका सीधा मुकाबला कांग्रेस प्रत्याशी अमरेश बालियान से है। कांग्रेस पृष्ठभूमि से आने वाले अमरेश बालियान के बेटे वरुण बालियान यूथ कांग्रेस में सक्रिय हैं। हरिद्वार नगर निगम सीट महिला ओबीसी के लिए आरक्षित होने की वजह से भाजपा और कांग्रेस को प्रत्याशी का चयन करना आसान नहीं था।

हल्द्वानी का मुस्लिम वोट एक मुस्त ललित जोशी को मिल सकता है, क्योंकि रेलवे की भूमि खाली कराने का विरोध करने वाले विधायक सुमित हृदयेश के मुसलमानों पर बड़े अहसान है, वो ही मुस्लिम समाज द्वारा कब्जाई गई रेलवे की भूमि का विरोध करने के लिए सुप्रीम कोर्ट तक गए हैं।

काशीपुर में कांग्रेस भारी

काशीपुर नगर निगम चुनाव सबसे ज्यादा दिलचस्प होने वाला है। क्योंकि कांग्रेस ने अपने वरिष्ठ नेता संदीप सहगल पर भरोसा जताया है। जबकि भाजपा ने पुराने नेता दीपक बाली पर दाव खेला है। हालांकि रियल स्टेट कारोबारी दीपक बाली 2022 में आम अदमी पार्टी की झाड़ू लेकर काशीपुर से विधानसभा चुनाव लड़ चुके हैं। दीपक बाली आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं। जून 2022 में वो भाजपा में शामिल हुए हैं। 1 लाख 28 हजार मतदाताओं वाले काशीपुर नगर निगम में अल्पसंख्यक मतदाता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नए परिसीमन के बाद यहां 40 वार्ड बन गए हैं। इनमें से 10 वार्ड महिलाओं के लिए आरक्षित रखे गए हैं। कांग्रेस प्रत्याशी संदीप सहगल कारोबारी हैं, इसलिए व्यापारियों पर उनकी मजबूत पकड़ है। फिर मुस्लिम मतदाताओं का रुझान भाजपा को हराने वाले प्रत्याशी की तरफ हो सकता है। इससे माना जा रहा है कि भाजपा यहां कुछ कमजोर हो सकती है। हालांकि भाजपा प्रत्याशी दीपक बाली भी व्यापारी हैं, वो भी व्यापारियों में अच्छी पकड़ रखते हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के करीबी हैं, इसलिए वो यदि चुनाव जीतते हैं तो सीएम की निकटता का फायदा काशीपुर की जनता को मिलेगा, लेकिन भाजपा कार्यकर्ता मान रहे हैं कि मेयर चुनाव में उन्हें पैरासूट प्रत्याशी का समर्थन करना पड़ेगा। यदि 2022 के चुनाव में दीपक बाली दलबदल न करते तो संभव था कि उनकी जीत ज्यादा आसान होती। उन पर पैरासूट प्रत्याशी होने का ठप्पा न लगा होता।

श्रीनगर में पूनम बिगाड़ेगी खेल?

श्रीनगर नगर निगम में कांग्रेस बैकग्राउंड की निर्दलीय प्रत्याशी पूनम तिवारी कांग्रेस का खेल बिगाड़ सकती हैं। श्रीनगर में यह पहला नगर निगम चुनाव है। क्योंकि पिछले कार्यकाल में ही श्रीनगर, नगर पालिका को नगर निगम का दर्जा मिला है। भाजपा ने श्रीनगर नगर निगम मेयर चुनाव के लिए आशा उपाध्याय को प्रत्याशी बनाया है तो कांग्रेस ने मीना रावत पर भरोसा किया है। इस बार भाजपा और कांग्रेस दोनों के मजबूत प्रत्याशी हैं। भाजपा की आशा तिवारी पिछले नगर पालिका चुनाव में दूसरे नंबर पर रही थी। आरक्षण की आखिरी सूची में यह सीट सामान्य महिला के लिए आरक्षित हुई तो भाजपा ने आशा उपाध्याय को चुनाव मैदान में उतार दिया। कांग्रेस से मीना रावत भी मजबूत प्रत्याशी मानी जा रही हैं लेकिन कांग्रेस बैकग्राउंड की पीएचडी होल्डर पूनम तिवारी निर्दलीय चुनाव लड़ रही हैं। पूनम के पति पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में चले गए थे। पूनम तिवारी नगर पालिका की अध्यक्ष रही हैं। माना जा रहा है कि पूनम तिवारी कांग्रेस का खेल बिगाड़ सकती हैं।

संभल के सांसद पर सियासी संकट

सपा सांसद के घर जो बिजली उपकरण है उससे बिजली का लोड 16 किलोवाट है, लेकिन सांसद के घर पर सिर्फ 2-2 किलोवाट के 2 कनेक्शन थे जिसे आधार मानकर ही जियाउर्रहमान बर्क के खिलाफ बिजली चोरी का मुकदमा दर्ज हुआ है और 1.91 लाख रुपये का जुर्माना ठोका गया है।

भारत भूषण
आईएफटीएम

उत्तर प्रदेश में संभल के समाजवादी पार्टी सांसद जियाउर्रहमान बर्क की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही हैं। उनके खिलाफ एक के बाद एक कानूनी कार्रवाई हो रही है। पुराने दुर्घटना के मुकदमे की फाइल भी संभल प्रशासन ने खोल दी है। उनके पुस्तैनी घर में सड़क पर अतिक्रमण कर बनाई गई सीढियों पर बुल्डोजर चल चुका है। बिजली चोरी का आरोप भी सपा सांसद पर लगा है। उनके घर का बिजली कनेक्शन काट दिया गया है। सांसद के खिलाफ बिजली चोरी की रिपोर्ट दर्ज करने के बाद उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन ने उन पर 1.19 करोड़ रुपये का जुर्माना अलग से ठोक दिया है। उनके पिता ममलुकुर्रहमान बर्क पर बिजली विभाग के अधिकारियों को धमकी देने और सरकारी काम में बाधा डालने का केस अलग से दर्ज हो चुका है। उत्तर प्रदेश में शायद ये पहला मौका है जब किसी सांसद के घर बिजली चोरी पकड़ी गई। वह भी तब जब उन पर जिला इलेक्ट्रिसिटी कमेटी के अध्यक्ष के तौर पर बिजली चोरी रोकने की जिम्मेदारी है। इससे सांसद जियाउर्रहमान बर्क ही नहीं उनके दादा शफीकुर्रहमान बर्क तक की राजनीतिक प्रतिष्ठा, रुतबा, सियासी, साम्राज्य और प्रभुत्व सब मिट्टी में मिल गया है। सांसद जियाउर्रहमान बर्क के दादा डा.शफीकुर्रहमान बर्क तक की राजनीतिक नींव हिल गई। ये वही स्व. सांसद डा.शफीकुर्रमान बर्क हैं जो संसद में राष्ट्रगान के समय भी खड़े नहीं होते थे। वो अपने कट्टरपंथी और विवादित बयानों से मीडिया की सुर्खियों में बने रहते थे।

आजम का हश्र देखा है जियाउर्रहमान ने

अपने दादा और पड़ोसी जिले रामपुर के मोहम्मद आजम खां की विरासत को शायद जियाउर्रहमान आगे बढ़ा कर सुर्खियों में रहना चाहते थे, लेकिन अब उन पर जिस तरह एफआईआर हो रही हैं, घर का बिजली कनेक्शन कटा है, बिजली चोरी का आरोप लगा है, करीब दो करोड़ रुपये का जुर्माना लगा है उससे ऐसा लग रहा है कि जिस तरह सपा के कद्दावर नेता मोहम्मद आजम खान का राजनीतिक करियर चौपट हुआ है वैसे ही बड़बोले जियाउर्रहमान बर्क की राजनीति हासिये पर जाने वाली है? क्योंकि सपा प्रमुख अखिलेश यादव तभी तक अपने मुस्लिम नेताओं का साथ देते हैं जब तक वो वोट दिला सकते हैं। किंतु जिस दिन कोई नेता कानूनी शिकंजे में फंसता है तो अखिलेश यादव दूरी बना लेते हैं, ऐसा ही अखिलेश यादव ने रामपुर के सांसद और विधायक रहे मोहम्मद आजम खां और उनके परिवार के साथ किया है। जब मोहम्मद आजम खां और उनका परिवार मुकदमों फंसा तथा जेल गया तो अखिलेश यादव ने आजम खां का नाम तक लेना बंद कर दिया। जिस मोहम्मद आजम खां की कभी यूपी में तूती बोलती थी आज वो कहां हैं, किस हाल में हैं, उनके परिवार पर क्या बीत रही है ये सब शायद अखिलेश यादव को नहीं पता है। संभवतः अखिलेश जानते हैं कि मोहम्मद आजम खां अब उनके किसी काम के नहीं रहे हैं। क्योंकि उन पर इतने मुकदमे लग चुके हैं कि वो घर पर कम और जेल में ज्यादा रहते हैं। ऐसा ही कुछ जियाउर्रहमान बर्क के साथ भी हो सकता है। जिस दिन सांसद जियाउर्रहमान बर्क की गिरफ्तारी हुई उस दिन अखिलेश यादव उनसे भी क्या दूरी बना लेंगे, इससे इनकार नहीं किया जा सकता!

सांसद जियाउर्रहमान बर्क ही नहीं उनके दादा शफीकुर्रहमान बर्क तक की राजनीतिक प्रतिष्ठा, रुतबा, सियासी साम्राज्य और प्रभुत्व सब मिट्टी में मिल गया है, सांसद जियाउर्रहमान बर्क के दादा डा. शफीकुर्रहमान बर्क तक की राजनीतिक नींव हिल चुकी है।

सांसद ने संभल से दूरी बनाई ?

संभल के सपा सांसद जियाउर्रहमान 24 नवंबर को संभल की शादी जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हुई हिंसा में नामजद आरोपी हैं। इस मामले में उनकी गिरफ्तारी न हो इसके लिए वो हाईकोर्ट गए और एफआईआर को राजनीति के प्रेरित बताते हुए एफआईआर निरस्त करने की मांग की। साथ ही गिरफ्तारी पर भी स्टे मांगा है, लेकिन शीतकालीन अवकाश की वजह से उनकी इस याचिका पर हाईकोर्ट में सुनवाई नहीं हो पाई है, लिहाजा अब उन पर गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है। क्योंकि 24 नवंबर को संभल में शाही जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान जो हिंसा हुई उसे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चुनौती के रूप में लिया। इसके बाद सपा सांसद और संभल के सपा नेताओं पर जो एक्शन हो रहा है उससे सांसद सहमे हुए हैं। लिहाजा सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिलने के लिए वक्त मांगा ताकि यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कानूनी एक्शन से कुछ राहत मिल सकें, परंतु अमित शाह से उनकी मुलाकात कब होगी इसका कुछ पता नहीं है, क्योंकि गृह मंत्री ने सांसद को मिलने के लिए समय नहीं दिया है। लिहाजा सपा सांसद को डर सता रहा है कि कहीं मोहम्मद आजम खां जैसा हाल उनका भी न हो जाए। इसलिए वो संभल से दूरी बनाए हुए हैं। हिंसा में पांच युवकों की मौत हो गई, लेकिन वो दुख जताने भी संभल नहीं आए। उनके घर पर बुल्डोजर चल गया, घर का बिजली कनेक्शन कट गया, लेकिन वो संभल में घुसने की हिम्मत नहीं कर पाए। शायद सांसद को डर है कि एक बार गिरफ्तारी हुई तो फिर अदालतों से जमानतें ही लेते फिरेंगे। क्योंकि जिले के आला अफसरों से जूते साफ कराने का दावा करने वाले मोहम्मद आजम खां का जो हश्र हुआ है वो जियाउर्रहमान बर्क अच्छी तरह जानते हैं।

बिजली चोरी रोकने की जिम्मा है बर्क पर

समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर्रहमान बर्क के खिलाफ बिजली चोरी के आरोप में मुकदमा दर्ज हुआ है। उन पर भारी भरकम जुर्माना लगाया गया है, लेकिन हैरानी और शर्म की बात ये है कि जो सपा सांसद जिला इलेक्ट्रिसिटी कमेटी के अध्यक्ष हैं, उन्हीं के घर में बिजली चोरी पकड़ी गई। जिला इलेक्ट्रिसिटी कमेटी जिले में बिजली परियोजनाओं को गति देने और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए अगस्त 2024 में बनाई गई थी। जिस कमेटी के सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क अध्यक्ष हैं, उसका मुख्य काम जिले में बिजली चोरी रोकना भी है। लेकिन ताज्जुब की बात ये है कि संभल की दीपा सराय जहां सांसद जियाउर्रहमान बर्क का घर है वहां बिजली विभाग को 80 प्रतिशत लाइन लॉस होता है। उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन के अधीक्षण अभियंता विनोद कुमार गुप्ता का कहना है कि जब सपा सांसद के घर पर बिजली चोरी पकड़ी जाती है तब किस प्रकार से उम्मीद की जा सकती है कि जिले में बिजली चोरी कम होगी? सपा सांसद के घर में जो बिजली उपकरण है उस हिसाब से बिजली का लोड 15 से 16 किलोवाट है। लेकिन सपा सांसद के घर पर सिर्फ 2-2 किलोवाट के 2 कनेक्शन लगे थे। इसे आधार मानकर ही सांसद जियाउर्रहमान बर्क के खिलाफ बिजली चोरी का मुकदमा दर्ज हुआ है और 1.91 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। इससे सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि जिस सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क के कंधे पर बिजली चोरी रोकने की जिम्मेदारी है, वही सपा सांसद बिजली चोरी में आरोपी हैं। बाकी उनसे क्या उम्मीद की जा सकती है?

नेताओं पर बिजली चोरी के आरोप

बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता विनोद कुमार गुप्ता का कहना है संभल शहर में 24 सितंबर से 20 दिसंबर तक चलाए गए बिजली चेकिंग अभियान में बिजली चोरी के 1379 मामले पकड़े गए। इसमें 7.1 करोड़ का जुर्माना लगाया गया है। मुरादाबाद के मुख्य अभियंता एके सिंघल का कहना है कि चैकिंग अभियान के बाद से संभल में लाइन लॉस वाले इलाकों में 60 प्रतिशत तक की कमी आई है। रायसत्ती इलाके में लाइन लॉस सामान्य हो गया है। इस इलाके में 85 प्रतिशत तक लाइन लॉस हुआ करता था। यानी रायसत्ती में अब बिजली चोरी बंद हो गई है। मुख्य अभियंता का कहना है कि संभल के मोहल्ला दीपा सराय, खग्गू सराय, मियां सराय, नखासा, चौधरी सराय, रुकनुद्दीन सराय, रायसत्ती, हातिम सराय, शहबाजपुर में सबसे ज्यादा लाइन लॉस होता है। इन इलाके में कई बार बिजली की चेकिंग करने गई टीम के साथ मारपीट की घटनाएं हो चुकी हैं। किंतु अब इन इलाको में नियमित चेकिंग कराई जाएगी। मुख्य अभियंता एके सिंघल का कहना है कि संभल में बिजली चोरी का सबसे बड़ा मामला सांसद जियाउर्रहमान बर्क का सामने आया है। उनके खिलाफ 1.91 करोड़ का जुर्माना लगाया गया है। सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष फिरोज खां पर 55 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। बसपा सरकार में मंत्री रहे अकीलुर्रहमान के आवास में भी बिजली चोरी पकड़ी गई। मीटर पूर्व मंत्री अकीलुर्रहमान के बेटे के नाम से लगा था। जिस पर दो लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। मुख्य अभियंता का कहना है कि चेकिंग के दौरान एक टन बिजली का केबल जब्त किया गया है। इससे ही स्पष्ट है कि किस स्तर पर बिजली चोरी की जा रही थी। संभल की कई मस्जिदों की छतों पर बिजली चोरी का नेटवर्क पकड़ा गया। इसलिए अब बिजली चोरी रोकने के लिए आर्मर्ड केबल खींचा जा रहा है। 42 किलोमीटर आर्मर्ड केबल बिछाया जा चुका है। इससे गली मोहल्लों में बिजली चोरी रोकने में आसानी होगी। उनका कहना है कि आर्मर्ड केबल बिछाए जाने से संभल के कई इलाकों में की जा रही बिजली चोरी को पूरी तरह रोकने से विभाग को 4.5 करोड़ के राजस्व का लाभ होगा।

- **अखिलेश यादव जानते हैं कि मोहम्मद आजम खां अब उनके किसी काम के नहीं रहे हैं, क्योंकि उन पर इतने मुकदमे लग चुके हैं कि वो घर पर कम और जेल में ज्यादा रहते हैं, ऐसा ही कुछ जियाउर्रहमान बर्क के साथ भी हो सकता है, अखिलेश यादव उनसे भी दूरी बना सकते हैं!**
- **चेकिंग अभियान के दौरान एक टन बिजली का केबल जब्त किया गया है। इससे ही स्पष्ट है कि किस स्तर पर बिजली चोरी की जा रही थी। संभल की कई मस्जिदों की छतों पर बिजली चोरी का नेटवर्क पकड़ा गया। इसलिए अब बिजली चोरी रोकने के लिए आर्मर्ड केबल खींचा जा रहा है।**

यह बदला हुआ उत्तर प्रदेश है

उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव, मायावती या कांग्रेस का राज नहीं जहां हिंसा होने पर अफसरों को सजा मिलती थी और हिंसा करने वालों को मुआवजा बांटा जाता था। यह बदला हुआ उत्तर प्रदेश है जहां कानून व्यवस्था से छेड़छाड़ करने वाला भले ही सांसद, विधायक, पूर्व मंत्री या कितना बड़ा नेता ही क्यों न हो उसको बख्शा नहीं जाता है। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के राज में हिंसा होने पर अफसरों को सजा नहीं मिलती, न ही तबादला किया जाता, बल्कि उन्हें खुलकर कानून व्यवस्था पटरी पर लाने का टास्क दिया जाता है। अब हिंसा करने वालों को मुआवजा नहीं बांटा जाता बल्कि अब हिंसा के दौरान सरकारी और प्राइवेट संपत्ति को हुए नुकसान की वसूली हिंसा करने वालों से की जाती है। इसलिए सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव बेचैन हैं। वो संभल में बिजली चोरी करने वालों के साथ खड़े हैं। अखिलेश यादव लगातार मीडिया में आकर कह रहे हैं कि संभल में गरीबों के घरों की बिजली काटी जा रही है। उन पर जुर्माना किया जा रहा है। गरीबों के घर की तलाशी हो रही है। अब अखिलेश यादव की नजर में क्या बिजली चोरी के आरोप से घिरे उनके सांसद जियाउर्रहमान बर्क और पूर्व सपा जिला अध्यक्ष फिरोज खां गरीबी की श्रेणी में आते हैं? जिस शहर में 80 से 85 प्रतिशत बिजली का लाइन लॉस होता है, जहां बिजली चोरी करना अधिकार समझा जाता हो उसकी पैरवी यदि अखिलेश यादव करते हैं तो उनसे उत्तर प्रदेश के बेहतर भविष्य की उम्मीद कैसे की जा सकती है? कैसे बहुसंख्यक अखिलेश यादव के हाथ में अपना भविष्य सौंप सकते हैं?

प्रेरक कथा

धर्म की रक्षा में ही समग्र सुरक्षा

धर्म की रक्षा करने अथवा एक बार स्वयं में धर्म स्थापित करने के उपरांत धर्म सदैव हमारी रक्षा करता रहता है, इसी प्रकार से यदि हम सुरक्षा के नियमों का पालन करते हैं तो वे नियम हमारी सुरक्षा करने में सक्षम होते हैं लेकिन यदि हम सुरक्षा के नियमों को तोड़ते हैं तो हमारा जीवन संकट में पड़ जाता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम। यानी इस शरीर को स्वस्थ बनाए रखना भी हमारा धर्म ही है। हमें चाहिए कि हम उचित दिनचर्या व ऋतुचर्या का पालन करें। खाद्याखाद्य का विशेष रूप से ध्यान रखें। इस प्रकार से शरीर-धर्म के लिए अपेक्षित नियमों का पालन कर हम स्वयं की समग्र सुरक्षा की ओर ही अग्रसर हो सकेंगे। शास्त्रों में कहा गया है कि

धर्म एवं हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः

अर्थात मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश करता है और रक्षित किया हुआ धर्म अपने रक्षक की रक्षा करता है। सामान्य जीवन में भी यदि कोई किसी व्यक्ति का वध कर देता है तो मृतक के पक्ष के लोग उसका वध करने के लिए पागल हो उठते हैं और कई बार परस्पर प्रतिशोध लेने का ये सिलसिला कई पीढ़ियों तक चलता रहता है। यदि हम किसी व्यक्ति की सहायता करते हैं या किसी के जीवन की रक्षा करते हैं तो वो भी हमारी सहायता करने अथवा हमारे जीवन की रक्षा करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। धर्म की भूमिका भी बिलकुल ऐसी ही होती है। धर्म की रक्षा करने अथवा एक बार स्वयं में धर्म स्थापित करने के उपरांत धर्म सदैव हमारी रक्षा करता रहता है। इसी प्रकार से यदि हम सुरक्षा के नियमों का पालन करते हैं तो वे नियम हर हाल में हमारी सुरक्षा करने में सक्षम होते हैं लेकिन यदि हम सुरक्षा के नियमों को तोड़ते हैं तो हमारा जीवन संकट में पड़ जाता है।

जानबूझ कर गलती न करें

कई बार हम देखते हैं कि किसी नदी अथवा झील के किनारे बोर्ड लगा होता है कि यहां नहाना अथवा पानी में जाना मना है। यदि हम इस नियम का पालन करते हैं तो ये नियम हमारी रक्षा करता है, लेकिन यदि हम इस नियम को तोड़कर पानी में चले जाते हैं तो बहुत संभव है कि हम डूब जाएं। धर्म की भी बिलकुल ऐसी ही स्थिति होती है। यदि हम धर्म का पालन करते हैं तो धर्म हमारी हर प्रकार से रक्षा करता है, लेकिन यदि हमसे धर्म का पालन करने में चूक हो जाती है तो वही धर्म हमारे पतन अथवा विनाश का कारण बन जाता है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि मरे हुए धर्म से क्या तात्पर्य है और रक्षित किया हुआ धर्म कैसे हमारी रक्षा करता है? इन प्रश्नों के उत्तर देना सरल है यदि हम धर्म को समझ लें। धर्म क्या है? धर्म की अनेकानेक व्याख्याएं व परिभाषाएँ मलती हैं। धर्म स्वभाव को भी कहते हैं। इस दृष्टि से हमारा व्यवहार भी धर्म ही हुआ। लेकिन हर प्रकार का व्यवहार धर्म कैसे हो सकता है? वास्तव में हमारा अच्छा व्यवहार व हमारी अच्छी आदतें ही वास्तविक धर्म है। धर्म की एक अत्यंत प्रचलित परिभाषा मिलती है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम।।

- स्वयं में अच्छी आदतें विकसित करना ही धर्म है, देश व काल के अनुसार इन आदतों में अंतर भी हो सकता है लेकिन जो अच्छी आदतें नहीं हैं जिनसे हमारा व्यवहार दूषित या विकृत होता है उन्हें धर्म में सम्मिलित नहीं किया जा सकता, धर्म केवल सद्गुणों का समुच्चय ही हो सकता है।
- हम धर्म के एक लक्षण अस्तेय अथवा चोरी न करने की बात करते हैं, यदि हम अपने आचरण में दृढ़ता पूर्वक इस लक्षण को विकसित नहीं करेंगे तो स्वाभाविक है कि हममें चोरी की आदत विकसित हो जाएगी, चोरी की आदत हमारा पूरी तरह से विनाश भी कर सकती है।

सीताराम गुप्ता,
पीतमपुरा, दिल्ली

अर्थात धैर्य, क्षमा, दम (संयम), चोरी न करना, शुचिता (स्वच्छता), इंद्रिय-संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध (क्रोध न करना) ये दस गुण ही धर्म के महत्वपूर्ण लक्षण माने गए हैं। कुछ अन्य परिभाषाओं में धर्म के इन लक्षणों के अतिरिक्त अन्यान्य लक्षणों की चर्चा भी की गई है। कहा जाता है कि जिसे धारण किया जाए वही धर्म है। यदि व्यक्ति ने इन विभिन्न लक्षणों को धारण किया है तभी वह धार्मिक है अन्यथा नहीं। कहने का तात्पर्य यही है कि स्वयं में अच्छी आदतें विकसित करना ही धर्म है। देश व काल के अनुसार इन आदतों में अंतर भी हो सकता है लेकिन जो अच्छी आदतें नहीं हैं जिनसे हमारा व्यवहार दूषित या विकृत होता है उन्हें धर्म में सम्मिलित नहीं किया जा सकता। धर्म केवल सद्गुणों का समुच्चय ही हो सकता है। यदि हमारे किसी कार्य से, चाहे वो कितना भी अच्छा कार्य क्यों ना हो, दूसरों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है अथवा अन्य किसी भी प्रकार से दूसरों को पीड़ा पहुंचती है तो उसे धर्म की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इस दृष्टि से किसी का जी न दुखाना भी धर्म है। करुणावतार बुद्ध ने कहा है कि-

सर्वेषु भूतेषु दया हि धर्मः

अर्थात सभी जीवों के प्रति दयाभाव ही धर्म है। महाभारतकार ने भी यही कहा है-

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्

अर्थात दूसरों की भलाई पुण्य है और दूसरों को कष्ट पहुंचाना पाप है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी प्रकारांत से इसी बात को दोहराया है -

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई

अर्थात दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई अधर्म अथवा पाप नहीं। जो धर्म, धर्म के लक्षण अथवा क्रियाकलाप व्यक्ति में अच्छे गुणों का विकास नहीं करते वे धर्म नहीं हो सकते। व्यक्ति ही नहीं समाज के संदर्भ में भी ये उतना ही अनिवार्य है। जो समाज धर्म अथवा उदात्त जीवन मूल्यों की रक्षा करने में सक्षम होता है वही आगे बढ़ता है। कर्मकांड अथवा प्रतीक धर्म नहीं होते। ये तो मात्र हमें स्मरण कराने का माध्यम होते हैं कि हमें इनसे जुड़े उदात्त जीवन मूल्यों का पालन करना है। जब हम किसी की पूजा अथवा आराधना करते हैं तो धर्म यही है कि हम अपने आराध्य के गुणों को जीवन में उतारें। जब हम ऐसा नहीं करते तो धर्म पाखंड बनकर रह जाता है और ऐसा धर्म अथवा पाखंड हमारी रक्षा नहीं करता। सद्गुणों की रक्षा नहीं करेंगे अथवा उन्हें अपने व्यवहार में नहीं लाएंगे तो स्वाभाविक है कि हममें सद्गुणों के स्थान पर अवगुणों की भरमार हो जाएगी और वे अवगुण हमें नष्ट करने के लिए पर्याप्त होंगे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश कर देता है।

धर्म से संतुष्टि मिलती है

धर्म के किसी भी लक्षण को ले लीजिए। यदि हम उसकी रक्षा नहीं करेंगे अथवा उसे अपने व्यवहार में नहीं लाएंगे तो वो लक्षण नष्ट हो जाएगा और उसके स्थान पर जो उसका विपरीत लक्षण अथवा दुर्गुण होगा प्रकट होने लगेगा और हमारा विनाश कर डालेगा। हम किसी भी लक्षण अथवा सद्गुण की बात करें उसी पर ये नियम लागू होगा। हम धर्म के एक लक्षण अस्तेय अथवा चोरी न करने की बात

कई बार हम देखते हैं कि किसी नदी अथवा झील के किनारे बोर्ड लगा होता है कि यहां नहाना अथवा पानी में जाना मना है, किंतु यदि हम इस नियम का पालन करते हैं तो ये नियम हमारी रक्षा करता है, लेकिन यदि हम इस नियम को तोड़कर पानी में चले जाते हैं तो बहुत संभव है कि हम डूब जाएं।

करते हैं। यदि हम अपने आचरण में दृढ़ता पूर्वक इस लक्षण को विकसित नहीं करेंगे तो स्वाभाविक है कि हममें चोरी की आदत विकसित हो जाएगी। चोरी की आदत हमारा पूरी तरह से विनाश भी कर सकती है। चोरी करते-करते हम हत्यारे व डाकू भी बन सकते हैं और सजा के तौर पर हमारी जीवन लीला भी समाप्त हो सकती है। सद्गुणों अथवा धर्म का पालन करने में कुछ कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं, लेकिन इससे उसी अनुपात में हमें संतुष्टि भी मिलती है। लेकिन धर्म का पालन न करने पर हम सदैव असंतुष्ट व तनावयुक्त रहेंगे जो हमारे स्वास्थ्य के लिए भी घातक होगा। इस प्रकार से धर्म का पालन न करने से हमारा जीवन भी संकट में पड़ जाता है और धर्म का पालन करने से हम पूर्णतः सुरक्षित हो जाते हैं। धर्म की आवश्यकता हमें इस शरीर के लिए ही होती है क्योंकि हमारा शरीर ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। कहा गया है कि-

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम।

अर्थात शरीर के अभाव में किसी प्रकार के धर्म की आवश्यकता ही नहीं अतः इस शरीर को स्वस्थ बनाए रखना भी हमारा धर्म ही है। शरीर की रक्षा के लिए भी कुछ नियम होते हैं जिन्हें शरीर-धर्म कहा जा सकता है। इसके लिए एक निर्दिष्ट स्वास्थ्यचर्या का पालन अपेक्षित है। हमें चाहिए कि हम उचित दिनचर्या व ऋतुचर्या का पालन करें। खाद्याखाद्य का विशेष रूप से ध्यान रखें। क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी अपने अनुकूल सुख की प्राप्ति और अपने प्रतिकूल दुःख की निवृत्ति चाहता है। मानव की इस परिस्थिति को अवगत कर त्रिकालज्ञ और परहित में रत ऋषिमुनियों ने वेद, पुराण, स्मृति और समस्त निबंधग्रंथों को आत्मसात कर मानव के कल्याण के प्राप्ति तथा दुःख की निवृत्ति के लिए अनेक उपाय कहे हैं। उन्हीं उपायों में से व्रत और उपवास श्रेष्ठ तथा सुगम उपाय हैं। व्रतों के विधान करने वाले ग्रंथों में व्रत के अनेक अंगों का वर्णन देखने में आता है। उन अंगों का विवेचन करने पर दिखाई पड़ता है कि उपवास भी व्रत का एक प्रमुख अंग है। इसलिए अनेक स्थलों पर यह कहा गया है कि व्रत और उपवास में परस्पर अंगांगि भाव संबंध है। अनेक व्रतों के आचरणकाल में उपवास करने का विधान देखा जाता है। इस प्रकार से शरीर-धर्म के लिए अपेक्षित नियमों का पालन करके भी हम स्वयं की समग्र सुरक्षा की ओर ही अग्रसर हो सकेंगे।

खामोश नायक की जीवंत किवदंती

जांबाज फाइटर पाइलट से लोकप्रिय पर्यावरणविद बनने के जीवनीय सफर के दौरान नलनीधर जयाल काबिल नौकरशाह, साहसी पर्वतारोही, कुशल फोटोग्राफर, चर्चित लेखक, बेहतर प्रशिक्षक, अग्रणी सामाजिक कार्यकर्ता, जिज्ञासू अध्येता और दूरदर्शी चिंतक रहे।

अरुण कुकसाल
चामी, पौड़ी गढ़वाल

नलनीधर जयाल आज किन्नौर की खूबसूरत वादियों में एक 'जिंदा कहानी' के तौर पर लोगों के दिलों, वहां के बाग-बगीचों, खेत-खलिहानों, स्कूलों, लोगों के शानदार रोजगारों और प्रकृति के अनेकों रंग-रूपों में रचे-बसे हैं। वह किन्नौर में एक 'जीवंत किवदंती' हैं। किसी भी इंसान के जीवन में सफलता का इससे सुंदर और क्या मुकाम हो सकता है, कि वह अपने कामों और नेक-नियत की बदौलत लोगों के दिल-दिमाग में एक जीवंत किवदंती ही बन जाए। जांबाज फाइटर पाइलट से लोकप्रिय पर्यावरणविद बनने के जीवनीय सफर के दौरान नलनीधर जयाल काबिल नौकरशाह, साहसी पर्वतारोही, कुशल फोटोग्राफर, चर्चित लेखक, बेहतर प्रशिक्षक, अग्रणी सामाजिक कार्यकर्ता, जिज्ञासू अध्येता और दूरदर्शी चिंतक रहे। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के और भी आयाम थे। परंतु यह भी सच है कि उनका व्यक्तित्व पद, प्रतिष्ठा और पुरस्कारों के माया-जाल के बोझ से हमेशा विरक्त रहा। तभी तो एक संतुष्ट आदमी की नम्रता उनमें हर समय निखरी रहती थी। वे हमारे आस-पास के समाज का एक ऐसा हीरा थे, जिसके बारे में ज्यादा लोगों को जानकारी नहीं है। इस कारण वे सामाजिक चर्चाओं में भी नहीं रहे। वास्तव में वो 'काम खामोश रहता है, कमियां बोलती हैं,' का पर्याय थे। नलनीधर जयाल का जन्म 11 जनवरी 1927 को अल्मोड़ा में हुआ था। उनके पिता चंद्रधर जुयाल तब अल्मोड़ा के डिप्टी कलेक्टर थे। उत्तराखंडी समाज में चर्चित रहे टिहरी रियासत के दीवान चक्रधर जुयाल उनके पिता के बडे भाई थे। उनका पैतृक गांव झांझर, पौड़ी (गढ़वाल) है। मात्र 11 महीने की उम्र में एक दुर्घटना में मां की मृत्यु होने पर दीदी ने उनका लालन-पालन किया। प्रारंभिक शिक्षा दून स्कूल से लेने के बाद इलाहबाद विश्वविद्यालय से स्नातक किया। वे दून स्कूल के प्रथम बैच के छात्र थे। उनके बड़े भाई विदुधर जयाल उत्तराखंड से चयनित पहले आईएएस थे। उनकी बहन प्रो. शाकम्बरी जयाल इतिहासविद थी संयोग से राजकीय महाविद्यालय, रानीखेत में 1977 से 80 तक मेरे अध्ययन के दौरान वे प्रधानाचार्या रही थी।

फाइटर पायलट, युद्ध के विरुद्ध

नलनीधर जयाल 1948 में भारतीय एअर फोर्स में पायलट चयनित हुए। फाइटर पायलट होते हुए भी वे युद्ध के विरुद्ध थे। यही कारण है कि एअर चीफ मार्शल के एडीसी रहते हुए 1956 में उन्होंने एअर फोर्स की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इसी वर्ष इंडियन फ्रंटियर एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में चयन होने पर वे नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (नेफा अब अरुणाचल प्रदेश) के ट्यूटिंग स्थान पर पॉलिटिकल अधिकारी नियुक्त हुए। 1960 में इंडियन फ्रंटियर एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज का भारतीय प्रशासनिक सेवा में विलय होने पर वे किन्नौर जनपद (हिमाचल प्रदेश) के 1967 तक डिप्टी कमिश्नर रहे। उसके बाद केंद्र सरकार में कृषि, वन, स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा और नियोजन विभाग में विभिन्न पदों पर उल्लेखनीय योगदान देते हुए 1985 में राजकीय सेवा से निवृत्त हुए। 1996 तक उन्होंने इंटेक (इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरिटेज) की प्राकृतिक धरोहर शाखा के महानिदेशक के पद पर कार्य किया। 1995 में उन्होंने हिमालयी हितों के संरक्षण और विकास के उद्देश्य से 'हिमालय ट्रस्ट' का गठन किया। देहरादून में रहते हुए वे 'हिमालय ट्रस्ट' के माध्यम से सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहे। बचपन में ही मां के प्यार से वंचित नलनीधर जयाल को समाज के अधिसंख्यक लोगों की गरीबी बेचैन करती थी। उन्हें जब भी मौका मिलता वे सामाजिक सेवा में जुट जाते। 1942 के अकाल पड़ने पर बंगाल के पीड़ितों की मदद में वे काफी समय तक सक्रिय रहे। दिल-दिमाग में आए सुविचारों को धरातल पर करके दिखाना उनके जुनून में रहा है। वे नैसर्गिक सौंदर्य के रहस्यों को जानने को लालायित रहते थे। दून स्कूल में पढ़ते हुए प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी डॉ. सलीम अली का सानिध्य और मार्गदर्शन उन्हें मिला। डॉ. सलीम के 'बर्ड वाचिंग' ज्ञान के माध्यम से पहाडों को जानने-समझने के लिए पर्वतारोहण की तरफ उनकी अभिरुचि बढ़ी। बाद में देश के कई महत्वपूर्ण पर्वतारोहण अभियानों में वे शामिल रहे हैं। एअर फोर्स में पाइलट रहते हुए 1953 में ऐवरेस्ट अभियान के दौरान 'एरियल फोटोग्राफी और सिने फिल्म' टीम के सदस्य के रूप में उन्हें याद किया जाता रहा है।

11 महीने की उम्र में एक दुर्घटना में मां की मृत्यु होने पर दीदी ने नलनीधर जयाल का लालन-पालन किया, प्रारंभिक शिक्षा दून स्कूल से लेने के बाद इलाहबाद विश्वविद्यालय से स्नातक किया, वे दून स्कूल के प्रथम बैच के छात्र थे, उनके बड़े भाई विदुधर जयाल उत्तराखंड से चयनित पहले आईएएस थे।

मानव विज्ञानी डॉ. वेरियर का सानिध्य

एअर फोर्स से इस्तीफ देने के बाद पर्वतों के प्रति अगाध प्रेम ने नलनी को फ्रंटियर सेवा के प्रति आकृष्ट किया। फ्रंटियर सेवा के दौरान विख्यात मानव विज्ञानी डॉ. वेरियर एल्विन ने तो उनकी जीवन दिशा को ही परिवर्तित और परिष्कृत कर दिया। डॉ. वेरियर के मार्गदर्शन में बचपन से ही गरीबों की सेवा करने के भाव ने वयस्क जीवन में आकार लेना शुरू कर दिया। डॉ. एल्विन ने महसूस कराया कि हर व्यक्ति की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है। जिसे समझते हुए ही अभावों से उपजे अवसादों को कम करके उसमें निहित प्रतिभा को जगाया जा सकता है। वास्तव में डॉ. एल्विन ने नलनी को सिखाया कि लोगों की मानवीय गरिमा को बनाए रखते हुए, उनकी कैसे मदद की जा सकती है। नेफा के ट्यूटिंग स्थान पर पॉलिटिकल अधिकारी के रूप में जयाल ने बहुत कम समय में वहां के स्थानीय लोगों के मन-मस्तिष्क में अपनेपन की जगह बना ली थी। सर्वप्रथम उन्होंने वहां की 'आदि' भाषा सीखना शुरू किया, उनका सम्मान बनाए रखते हुए उनसे घुले-मिल, साथ ही उस इलाके में मौजूद सांप, बिच्छू, जोंक और अन्य मुश्किलों से दोस्ती कर ली। इस कठिन कार्य को हंसी-खुशी करते हुए संपन्न परिवार के युवा नलनी, सैनिक अधिकारी, पर्वतारोही और प्रशासक को संवेदनशील समाजसेवी, पर्यावरण प्रेमी, नीति-नियंता और चिंतनशील बनाने में नींव का काम किया। इसी दौरान डॉ. वेरियर ऐल्विन के मार्गदर्शन में नेफा आदिवासियों पर शोध कार्य करने वाली युवा मित्र अमीना आसिफ अली (हैदराबाद के निजाम की पोती) और नलनीधर जयाल विवाह-सूत्र में बंध गए। डॉ. वेरियर ऐल्विन ने इस शादी में पिता और पादरी दोनों भूमिका बखूबी निभाई।

किन्नौर के गांवों को खुशहाल बनाया

डिप्टी कमिश्नर की हैसियत से नलनी का किन्नौर आना एक नए स्वर्णिम जीवन सफर की शुरुआत थी। जयाल के कार्यभार ग्रहण करने के 2 माह बाद ही देशभर में अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों की पहचान के लिए बनाया गया 'ढेबर कमीशन' का किन्नौर क्षेत्र में दौरा था। जयाल ने दिन-रात एक करके किन्नौर क्षेत्र और उसके मूल निवासियों की विशिष्टता, जीवन-चर्या, रीति-रिवाज, परंपरा, धार्मिक विश्वास, आर्थिकी, शिक्षा आदि की गहन रिर्पाट तैयार की। 'ढेबर कमीशन' के सामने रिपोर्ट का प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण करके संपूर्ण किन्नौर क्षेत्र को अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के दायरे में लाने में सफल हुए। इसके आधार पर किन्नौर क्षेत्र में बाहरी व्यक्ति द्वारा भूमि की खरीद पर प्रतिबंध लगा। जिसका फायदा किन्नौरी लोग आज भी ले रहे हैं। जयाल ने किन्नौर जिले में 'सिंगल लाइन एडमिनिस्ट्रेशन' नियम का सूत्रपात किया। जिससे प्रशासनिक कार्यो को अधिक सुविधाजनक और दायित्वशीलता से किया जाने लगा। किन्नौर जिले के सभी 77 गांवों में नलनी गए और वहां रात्रि को विश्राम किया। गांव के लोगों से चर्चा करके उनके अनुभवों और सुझावों को लिपिबद्ध किया। ग्रामीणों की मौजूदी में ही हर गांव का दीर्घ कालिक मास्टर प्लान बनाया। सरकारी योजनाओं के लिए पात्र लाभार्थियों को चयन करके उन्हें सरकारी मदद प्रदान की। फल और सब्जियों को नई तकनीकी से पैदा करने का प्रशिक्षण दिया। गांव में जाकर हल लगाना अन्य कृषि कार्य करना, स्कूलों में पढ़ाना, लोगों के दु:ख-दर्द और खुशियों में शामिल होना, गांव में बिखरी गंदगी को साफ करके लोगों को स्वास्थ्य और उद्यमीय जीवन जीने के लिए प्रेरित करना जयाल के सामान्य व्यवहार में था। जयाल ने किन्नौर जिले के हर गांव में 'किसान फेडरेशन' बनाकर उनके स्थानीय उत्पादों मुख्यत: बादाम, अंगूर, सेब और चिलगौजा की बिक्री को दिल्ली के बाजार से सीधा जोड़ा। वे रोजाना इसका मूल्याकंन करते और जरूरी मदद के लिए हर वक्त तैयार रहते। निश्चित रूप में किन्नौर जिले में संपन्नता और खुशहाली की शुरुआत 1960 में होने लगी थी। जयाल के इन प्रयासों से देश में किन्नौर आज सर्वाधिक आयकर देने वाले जिलों में शामिल है।

फल-सब्जियों को नई तकनीकी से पैदा करने की ट्रेनिंग देना, गांव में जाकर हल लगाना, कृषि कार्य करना, स्कूलों में पढ़ाना, लोगों के दु:ख-दर्द व खुशी में शामिल होना, गांव की गंदगी साफ करके लोगों को स्वास्थ्य और उद्यमीय जीवन जीने के लिए प्रेरित करना नलनीधर जयाल के सामान्य व्यवहार में था।

सच में 60 के दशक में जयाल किन्नौर क्षेत्र के सर्वागींण विकास की एक खूबसूरत लकीर खींच आए थे। उनके बाद के अफसरों के लिए अपने दायित्वों को क्रियान्वित करने में जयाल के प्रयास महत्वपूर्ण साबित हुए। देश-दुनिया के चर्चित और मशहूर लेखकों की खोज-परख किताबों में जयाल के 'किन्नौर विकास मॉडल' का उल्लेख मिलता है। जयाल के करीब 30 साल बाद किन्नौर के जिलाधिकारी रहे दीपक सानन एवं धानू स्वादि ने नलनीधर जयाल के अभिनव प्रयासों पर 'एक्सप्लोरिंग किन्नौर एंड स्पीति दन द ट्रांस हिमालया' किताब लिखी है, लेकिन दुर्भाग्य है कि देश के अन्य राज्यों में 'किन्नौर का विकास मॉडल' प्रभावी रूप में नहीं अपनाया जा सका। 1967 के बाद नलनीधर जयाल केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में कार्यरत रहे। इस दौरान केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय को स्थापित करने, देश की पर्यावरण नीति बनाने, 'स्वतंत्र पर्यावरणीय प्रभाव आंकलन' नीति को शुरू करने, नंदादेवी नेशनल पार्क और फूलों की घाटी को विश्व धरोहर में शामिल करने, हिमालयी जंगलों में मोनोकल्चर के स्थान पर मिश्रित वन की अवधारणा विकसित करने, ग्रेट निकोबार आइलैंड को बायोस्फेयर बनवाने, केरल की सांइलैंट वैली के अस्तित्व को बनाए रखने आदि अनेकों महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी प्रभावशाली भूमिका रही थी। 1985 में राजकीय सेवा से निवृत्त होने के बाद नलनीधर जयाल ने 1996 तक इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरिटेज की प्राकृतिक धरोहर शाखा में बतौर महानिदेशक कार्य किया। इंटैक के माध्यम से उन्होंने टिहरी बांध के विरोध की कानूनी लड़ाई सुप्रीम कोर्ट तक लड़ी। हेंवलघाटी, टिहरी को हरा-भरा करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावा उन्होंने हिमालयी उद्यमिता, साहित्य, परंपरागत ज्ञान, प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण के उपाय, सामुदायिक रेडियो को प्रोत्साहन देने का कार्य किया। राज्य में 1991 की भूकंप की विनाशलीला पर मरहम लगाने दौड़े चले आने वालों में वो भी शामिल थे। आम लोगों से मिलकर जमीनी सच्चाई को सिस्टम तक पहुंचाने के उनके हिस्से में कई किस्से हैं। 1995 में उन्होंने हिमालयी हितों के संरक्षण और विकास के उद्देश्य से 'हिमालय ट्रस्ट' का गठन किया। 'हिमालय ट्रस्ट के माध्यम से वे वर्तमान में देहरादून में रहते हुए हिमालयी निवासियों के मौलिक ज्ञान को सहेजने, हरित हिमालय, पर्वतीय जन-जीवन को अधिक उद्यमी एवं खुशहाल बनाने के लिए उपयोगी जानकारी वाली अनेकों पुस्तकों को तैयार करने और उसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने में मार्गदर्शी भूमिका निभा रहे थे। यह प्रसन्नता की बात है कि दून पुस्तकालय एवं शोध केंद्र, देहरादून के संयोजन में 'नलनी धर जयाल ए मैनी स्प्लेंडोरेड लाइफ' पुस्तक का प्रकाशन किया है। इस किताब का संपादन विद्वान सुरजित दास, इंदिरा रमेश और कुसुम रावत ने किया है। नलनीधर जयाल के आलेखों के अलावा इसमें उनसे जुड़े मित्रों सुरजित दास, डॉ. सतीश चंद्रन नायर, डॉ. वंदना शिवा, डॉ. मार्गरिटा हिसे, इंदिरा रमेश, डॉ. शेखर सिंह, गोपीकृष्ण वारियर, विमला बहुगुणा, सुंदरलाल बहुगुणा, कुसुम रावत, धूमसिंह नेगी, विजय जड़धारी, सदन मिश्रा ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। लेकिन किताब के मर्म को रैको तेरासावा, हिरोमी निम्मी, जोगेश्वर सिंह, दीपक सनान और लखुपति जैसे साथी जो नलनीधर जयाल की सफलता की कहानी के हिस्से और प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं से ही बखूबी समझा जा सकता है। देश के 3 प्रधानमंत्रियों के साथ सराहनीय कार्य करने वाले और पर्यावरण एवं आर्थिक विकास के मुद्दों पर 20 से अधिक पुस्तकों के लेखक नलनीधर जयाल जीवनभर एक ऐसे सामाजसेवी रहे हैं जिन्होंने महत्वाकांक्षा के स्थान पर जीवन में करुणा, क्षमा और नम्रता को आत्मसात किया है। अपने बारे में नलनीधर जयाल उल्लेख करते हैं कि 'सफल अभिनेता वही है जो अपने हिस्से का बढ़िया अभिनय करके बिना शिकायत के वापस पर्दे के पीछे चला जाए।

समीक्षा

सिख इतिहास की खोज

सिखों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की ललक कोलकाता के एक युवा सिख व्यवसायी सरदार जगमोहन सिंह गिल को पैदा हुई, उन्होंने वर्षों तक यात्राएं कर पता किया कि लोग अभी भी बाकायदा सिख धर्म के अनुसार आचरण करते हैं और कई तो पांच ककारों के साथ अपना जीवन यापन भी कर रहे हैं।

रावेल पुष्प
बोस रोड, कोलकाता

भारतीय सिख समाज के प्रथम गुरु नानक देव जी ने अपने जीवनकाल में कई यात्राएं कीं और लोगों को कई भ्रमों, कुरीतियों से दूर किया तथा एक ओंकार यानी एक ईश्वर को जानने और मानने की दिशा में प्रवृत किया। वे इन यात्राओं के दौरान आम लोगों के साथ तो मिले ही, कई सिद्ध पुरुषों व साधु-सन्यासियों के साथ वचन-विलास भी किए। उनकी इन यात्राओं को चार भागों में बांटा गया है, जिन्हें उदासी कहा गया। इनमें पहली उदासी 1497 से 1508 तक पूरब की, दूसरी उदासी 1510 से 1515 तक दक्षिण की, तीसरी उदासी 1516 से 1518 तक उत्तर की तथा 1518 से 1522 तक पश्चिम की मानी जाती है। उनकी पूरब की उदासी में बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश तथा आसाम की यात्राएं शामिल हैं। इन यात्राओं के दौरान उनके कई शिष्य बने जो भले ही दसवें गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा पंथ में न भी आए हों, पर वो अभी भी हैं और नानक पंथी कहलाते हैं। इसके बाद परवर्ती गुरुओं ने भी इस इलाके की संगत से अपना संपर्क बनाए रखा। लेकिन जो महत्वपूर्ण संबंध गहरे हुए वे सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर द्वारा इन अंचलों की यात्राएं करने से। उन्होंने न सिर्फ यात्राएं कीं बल्कि असम और बंगाल की यात्रा के पूर्व अपनी गर्भवती पत्नी माता गुजरी तथा साले कृपाल चंद को पटना के जमींदार सालस राय जौहरी की मुख्य हवेली में छोड़ा, जो पहले से ही गुरु घर का भक्त था। वहीं उन्हें पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई, जो फिर दसवें गुरु गोविंद सिंह कहलाए। जिन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की। इसके अलावा भी गुरु तेग बहादुर बिहार के कई स्थानों पर गए, जहां उनके बहुत बड़ी संख्या में शिष्य बने।

जगमोहन सिंह गिल में ललक पैदा हुई

उन ज्ञात, अज्ञात तथा अल्प ज्ञात ऐसे स्थानों तथा वहां के सिखों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की ललक कोलकाता के एक युवा सिख व्यवसायी सरदार जगमोहन सिंह गिल को पैदा हुई और उसने लगातार वर्षों तक वहां की यात्राएं कीं। वहां पता चला कि वे लोग अभी भी बाकायदा सिख धर्म के अनुसार आचरण करते हैं और कई तो पांच ककारों के साथ अपना जीवन यापन भी कर रहे हैं। कई स्थानों पर गुरु ग्रंथ साहिब की पुरानी हस्तलिखित पोथियां तथा गुरुओं द्वारा जारी हुक्मनामे (सिख गुरुओं के शाही आदेश) भी मौजूद मिले। उनकी इन खोजपूर्ण यात्राओं और फिर उन स्थानों पर रहने वाले बुजुर्गों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर उन्हें सिख इतिहास की पुस्तकों तथा विद्वानों से विचार-विमर्श कर एक निष्कर्ष पर पहुंचना और फिर उन्हें लिपिबद्ध करना। उन आलेखों को पत्र पत्रिकाओं तथा शोध पत्रिकाओं में स्थान दिलाना। उनकी सिख इतिहास के गुमनाम पहलुओं की खोज तथा समर्पण के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अमृतसर ने उन्हें पूर्वी भारत सिख मिशन का सचिव नियुक्त किया। वो कोलकाता की पंजाबी साहित्य सभा के भी सचिव हैं। उनकी हाल ही में पूर्वी भारत में सिख जड़ों की खोज करती उनके खोजपूर्ण आलेखों के साथ अंग्रेजी में लिखी पुस्तक प्रकाशित हुई है, जिसका नाम है-'पूर्वी भारत में सिख जड़ों की खोज' जिनकी चर्चा में ये सतरें लिखी जा रही हैं उस सज्जन का नाम है 'सरदार जगमोहन सिंह गिल।'

आज की तारीख में न सिर्फ बंगाल, बिहार बल्कि देश के अधिकतर गुरुद्वारों के ग्रंथी (पुजारी), पाठी (गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करने वाले), रागी (गुरुद्वारों में भजन-कीर्तन करने वाले), लांगरी (लंगर की सेवा करने वाले) या फिर सेवादार बिहारी मूल के सिख ही हैं।

अग्रहरि सिख

इस पुस्तक को बंगाल के पहले गैर सरकारी विश्वविद्यालय जेआईएस यूनिवर्सिटी की सद्य स्थापित गुरु नानक देव चेयर द्वारा तथा अमृतसर की प्रतिष्ठित मुद्रक प्रकाशक संस्था सिंह ब्रदर्स द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक के अनुसार शताब्दियों से बिहार, झारखंड तथा वाराणसी के आसपास अग्रहरि सिखों का निवास स्थान रहा है। उन्हीं अग्रहरि सिखों का एक गुरुद्वारा कोलकाता के कॉटन स्ट्रीट में भी है, जो छोटा सिख संगत के नाम से जाना जाता है। सभी अग्रहरि पूरी तरह से सिख मर्यादा के साथ रहते हैं। अग्रहरि कई तरह के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और अब तो नौकरी पेशे में भी हैं। आज की तारीख में न सिर्फ बंगाल, बिहार बल्कि देश के अधिकतर गुरुद्वारों के ग्रंथी (पुजारी), पाठी (गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करने वाले), रागी (गुरुद्वारों में भजन-कीर्तन करने वाले), लांगरी (लंगर की सेवा करने वाले) या फिर सेवादार बिहारी मूल के सिख ही हैं। अब अगर हम बात आसाम की करें तो वहां लगभग 11 हजार सिखों की आबादी है और उसमें से करीब चार हजार आसामी सिख हैं। उन्होंने इस पुस्तक में उदासी डेरों का भी जिक्र किया है। वहीं हिंदी के सुपरिचित कवि उपाध्याय सिंह हरिऔध को नानकपंथी बताया है। गौरतलब है कि उदासी संप्रदाय बाबा श्रीचंद द्वारा स्थापित किया गया था, जो गुरु नानक देव जी के ही सुपुत्र थे। उसी उदासी संप्रदाय से ताल्लुक रखने वाले संन्यासी तोतापुरी जी थे, जिनसे दीक्षा प्राप्त करके ही गदाधर चट्टोपाध्याय रामकृष्ण परमहंस बने थे।

सिख धर्म की मूल भावना को बचाकर रखा

जगमोहन सिंह गिल ने अपनी विभिन्न स्थानों की यात्राओं तथा लोगों से मिलकर ये महसूस किया है कि भले ही ऐसे लोग सिखों के मूल केंद्रों से डेढ़-दो सौ साल से दूर रहे हों, लेकिन फिर भी उन्होंने सिख धर्म की मूल भावनाओं, सिद्धांतों को बचाकर रखा है। गिल का दावा है कि गुरु गोबिंद सिंह का जन्मस्थान न केवल क्षेत्र में सिखों के लिए एक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक स्थान के रूप में कार्य करता है, बल्कि पंजाब के बाहर सिख धर्म की निरंतरता के लिए एक जीवित प्रमाण भी है। वह भारत के इस हिस्से में सिख गुरुओं की यात्राओं का वर्णन करते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे उनकी यात्राओं ने इन क्षेत्रों में सिख धर्म की स्थाई उपस्थिति के लिए आधार तैयार किया। इसके अलावा हुक्मनामा और वार (सिख इतिहास के गाथागीत) के कई संदर्भ उनके तर्क में एक समृद्ध दस्तावेजी परत जोड़ते हैं, जो सुझाव देते हैं कि पूर्वी सिख और सिख धर्म के दिल के बीच संबंध लिखित और साथ ही मौखिक संचार के माध्यम से भी बनाए रखा गया है। पूर्वी भारत में ऐतिहासिक गुरुद्वारे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में कैसे काम करते हैं, इस पुस्तक की चर्चा में पटना साहिब की भूमिका को और बढ़ाया गया है। जीर्ण-शीर्ण गुरुद्वारों के जीर्णोद्धार और नए गुरुद्वारों के निर्माण के लिए गिल का आह्वान इन समुदायों के लिए बुनियादी ढांचे के समर्थन की तत्काल आवश्यकता की ओर इशारा करता है।

महत्वपूर्ण चित्रों का समावेश

जगमोहन सिंह गिल ने अपनी खोजपूर्ण पुस्तक के माध्यम से बड़े सिख संस्थानों से अपील भी की है कि जिन अल्पज्ञात इलाकों में ये भाई हैं, उनकी खोज-खबर ली जानी चाहिए तथा उनकी ओर सहयोग का हाथ बढ़ाने और उनकी दशा-दिशा बदलने में भी सार्थक भूमिका अदा करनी चाहिए। वे स्वयं उन अल्पज्ञात स्थानों पर सिख परिवारों के बच्चों के लिए गुरमीत कैंप भी लगाते हैं। उन्होंने इन इलाकों में सिखों और नानक पंथियों से बातचीत में ये पाया कि चोपड़ा, कपूर, सहगल, मेहरा, मल्होत्रा, बेदी, भल्ला जैसे टाईटल वाले मूल रूप से खत्री हैं। इसी तरह की अनेकों अनजानी और रोचक जानकारियों से ये पुस्तक भरी पड़ी है। उन्होंने इस पुस्तक में कुछ महत्वपूर्ण चित्रों का भी समावेश किया है। मसलन-सासाराम में चाचा फग्गूमल का गुरुद्वारा, टकसाल भवन, अररिया के गुरुद्वारे, लक्ष्मीपुर में सुरक्षित गुरुओं के हुक्मनामे तथा कुछ बुजुर्गों के चित्र वगैरह शामिल हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन से सरदार जगमोहन सिंह गिल के नाम पर एक सिख

सिख मिशन पूर्वी भारत के मानद प्रभारी और महासचिव के रूप में गिल ने इस क्षेत्र में सिख धर्म को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनका विद्वत्तापूर्ण कार्य गहरी स्थानीय जड़ों वाले सिखों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, उनकी भाषा, परंपराओं और दैनिक प्रथाओं की खोज की है।

इतिहासकार होने की शानदार मुहर तो लग ही गई है। ये पुस्तक भावी शोधकर्ताओं के लिए निस्संदेह एक मील का पत्थर साबित होगी। इसी तरह उनके व्यावहारिक शोध की और पुस्तकें तो आएंगी ही, जो सिख इतिहास को समृद्ध करने में अपनी भूमिका सुनिश्चित करेंगी। हमारी असीम शुभकामनाएं।

सिख मिशन

कोलकाता में जन्मे व्यवसायी जगमोहन सिंह गिल अपना अधिकांश समय सामाजिक इतिहास, विशेषकर पूर्वी भारत में सिख समुदाय पर शोध करने में लगाते हैं। सिख मिशन पूर्वी भारत के मानद प्रभारी और महासचिव के रूप में उन्होंने इस क्षेत्र में सिख धर्म को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका विद्वत्तापूर्ण कार्य गहरी स्थानीय जड़ों वाले सिखों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, उनकी भाषा, परंपराओं और दैनिक प्रथाओं की खोज पर केंद्रित है। गिल व्यापक क्षेत्रीय कार्य करते हैं, दूर-दराज के गांवों में रहते हैं और सटीक और सूक्ष्म अंतर्दृष्टि इकट्ठा करने के लिए बुजुर्गों के साथ जुड़ते हैं। ऐतिहासिक ग्रंथों के साथ अनुभवजन्य डेटा को मिश्रित करने वाले उनके शोध को अकादमिक हलकों में व्यापक रूप से मान्यता मिली है। ●

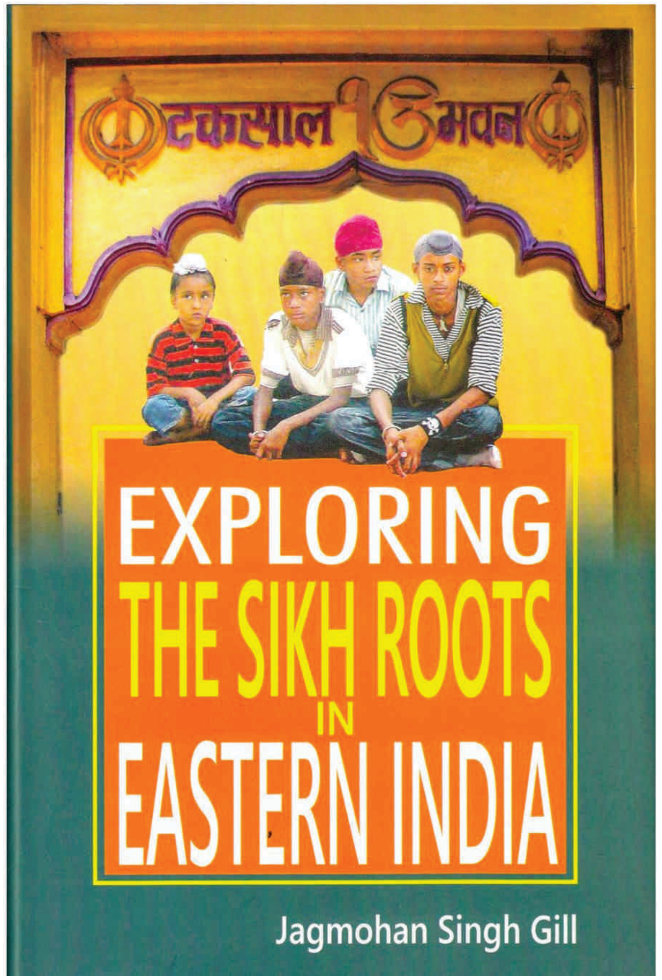

प्रसंगवश

गजब के वो मित्र दुकानदार

दुकानदार का ग्राहक से कलमे की तरह पहला वाक्य होता है...'आपके लिए यह इतने में है, बाजार में इसका रेट 300 है, पर आप जान-पहचान के हैं, सो, आपके लिए न तीन सौ, न पौने तीन सौ सिर्फ ढाई सौ में है' भले ही ग्राहक दूसरी दुनिया का रहने वाला हो और आज पहली बार दुकानदार ने उसे देखा हो।

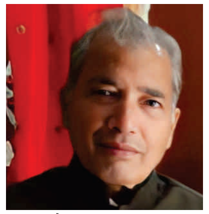

ओमप्रकाश मंजुल
पूरनपुर पीलीभीत

यूं तो इस लेख का शुभारंभ मैं एक अति मनभावन और मौजूं कुंडली से करना चाहता था, पर कुंडली से शुरू इस आशंका से नहीं कर रहा हूं, क्योंकि फिर मित्र लेख का अग्रभाग नहीं पढ़ेंगे। सो कुंडली को सर्वांत में दे रहा हूं, ताकि पाठकों को कुंडली तक पहुंचने के लिए पूर्वोल्लिखित संपूर्ण सामग्री पढ़नी पढ़े। यदि कोई मित्र होशियारी दिखाने की कोशिशवश सीधे कुंडली पर पहुंच गए, तो वे डेढ़ गुना घाटे में रहेंगे, क्योंकि बिना उसके पूर्व का भाग पढ़े, न तो वो कुंडली को भलीभांति समझ सकेंगे और न उसकी रसानुभूति ही कर सकेंगे। अब हुआ यह कि परसों मैं अपने एक मित्र दुकानदार की दुकान से गुड़वाली गजक लाया था। उसके यहां कई प्रकार की गुणकारी गजक थीं। उनमें से एक-दो-तीन मॉडल, जो मैंने पसंद किए थे, उनकी जगह उसने एक चौथे डिब्बे का ढक्कन खोल कर उसके पीसों की झलक दिखाई और यह समझ लें जबरदस्ती डिब्बा पकड़ाते हुए कहा, 'मंजुल जी! आप यह डिब्बा लीजिए। यह बहुत खस्ता है।' मैंने दूसरे दिन यानी कल जब डिब्बे में गजक के ऊपर चढ़ी पन्नी को काटकर एक पीस निकालना चाहा, तो काफी जोर लगाने के बाद भी पीस नहीं निकला। असल में ऊपर से चिंगनों (कटाई की लकीरों) को देखकर लग रहा था कि सब पीस अलग-अलग कटे हुए हैं। पर उनमें एक भी पीस अलग नहीं था, क्योंकि कोई भी पीस नीचे जड़ तक नहीं कटा और बटा था। सारी की सारी गजक इतनी चिकटा थी कि एक भी पीस चाकू से काटने पर भी अलग नहीं हो रहा था। आजकल दुकानदार मित्र की उसी गजब की खस्ता गजक को बंटनी से तोड़-फोड़ कर खा रहा हूं।

मेरे अनुभवों के लाभांवित हों

वैसे तो मुझे दुकानदारों की कुछ विशिष्ट और विचित्र विशेषताएं पहले से भी ज्ञात हैं, पर इस एपीसोड के बाद मैंने उनकी वचनावली के कुछ अमर व यूनिवर्सल बोलों और उनकी व्यवहारावली के कुछ वरेण्य व अनुसरेण्य मोडों को एकमुश्त कर लिया है और मित्रों की सेवार्थ मैं अपने इसी अनुभव को उन तक पहुंचाना चाहता हूं, ताकि मेरे अनुभव से वे भी यत्किंचित लाभांवित हो सकें। नीचे देखें-

दुकानदार का ग्राहक से कलमे की तरह पहला वाक्य होता है...'आपके लिए यह इतने में है। बाजार में इसका रेट 300 है, पर आप जान-पहचान के हैं। सो, आपके लिए न तीन सौ, न पौने तीन सौ सिर्फ ढाई सौ में है।' भले ही ग्राहक दूसरी दुनिया का रहने वाला हो और आज पहली बार दुकानदार ने उसे देखा हो।

दुकानदार ग्राहक को यह अवश्य अंगरेजी में बताएगा कि उसकी चीज उस फलानी-ढिकानी फर्म, कंपनी या फैक्ट्री का प्रोडक्ट है। भले ही खरीदार हिंदी भी ढंग से न समझ पाता हो और प्रोडक्ट के नाम पर घूरे का गोबर ही क्यों न हो।

'आपको इतने में यह हमारे यहां ही मिलेगी और कहीं नहीं, पूरे बाजार में ट्राई कर लें।'

'इतने में बस इसी वक्त है। लौट कर आओगे, तो इतने में नहीं मिलेगी।' भले ही लौट कर आने पर वह उससे भी कहीं अधिक सस्ते में क्यों न दे दे।

'बोनी का वक्त है, इसलिए इतने में दे रहे हैं।' भले ही भारत में शाम के चार बज रहे हों।

'500 में तो यह हमें पड़ी है, तो आपको 450 में कैसे दे दें। कल ही बरेली से मंगाई है।' भले ही सौदाबाजी करके वह 400 में ही उस चीज को बेंच दे।

कई बार कुछ चालाक ग्राहक खुद भी फंस जाता हैं वो कहता है और अच्छा दिखाओं और अच्छा दिखाओ अब दुकानदार तंग होकर सबसे घटिया माल दिखाता है और कीमत सबसे ज्यादा बताता है, बस यहीं ग्राहक लुट जाता है।

परसों में अपने एक मित्र दुकानदार की दुकान से गुड़वाली गजक लाया था, उसके यहां कई प्रकार की गुणकारी गजक थीं, उनमें से एक-दो-तीन मॉडल, जो मैंने पसंद किए थे, उनकी जगह उसने एक चौथे डिब्बे का ढक्कन खोल कर उसके पीसों की झलक दिखाई और यह समझ लें जबरदस्ती डिब्बा पकड़ाते हुए कहा, 'मंजुल जी! आप यह डिब्बा लीजिए।

'जो चीज दुकानदार अपने हाथ से उठा कर आपको बार-बार आग्रह पूर्वक भिड़ाना चाहे, उसकी वह कितनी भी प्रशंसा करे, उसे कदापि न खरीदें।

'कई बार कुछ चालाक ग्राहक खुद भी फंस जाता हैं वो कहता है और अच्छा दिखाओं और अच्छा दिखाओ अब दुकानदार तंग होकर सबसे घटिया माल दिखाता है और कीमत सबसे ज्यादा बताता है, बस यहीं ग्राहक लुट जाता है।'

'संभव हो, तो पैकेटेड की जगह लूज में खुली चीज खरीदें, भले ही ये गजक हो, फल हों, ड्राई फ्रूट्स हों, कपड़े के कट-पीस या कुछ भी हो।

किस पर यकीन करें

हम उस समय उसी पूरनपुर के किसी कालेज में इंटर के सहपाठी थे, जिसमें मैंने 20 वर्ष बाद मकान बनवाना शुरू किया था। उस समय मैं रोज लगभग 20 मील दूर से मकान बनवाने पूरनपुर आया करता था। एक दिन शाम को छुट्टी के समय मिस्त्री-मजदूरों का पैमेंट करने के लिए खुले रुपये नहीं थे। सो मित्र की कपड़े की दुकान जो आते-जाते रास्ते में ही पड़ती थी, तक मैं मिस्त्री-मजदूरों को भी यह कहकर घसीट कर लाया कि वहां पैमेंट कर दूंगा। मित्र को मैंने नोट दिखाते हुए कहा, 'शर्मा! यार नोट तोड़ दो। इतने रुपये इन लोगों को देने हैं।' उसने उतने रुपये मुझे देकर काम चला दिया। नोट बड़ा था सो बोला, 'बाकी रुपये कल ले लेना, इस समय नहीं हैं...।'

मैंने कहा, 'कोई बात नहीं, मैं ये रुपये कल लौटा दूंगा...।' वह बोला, 'नोट मुझे दो...तुम्हारे बाकी रुपये तुम्हें मैं कल दे दूंगा।' मैंने उसे नोट दे दिया। मैं यह सोच कर उसको देखता ही रह गया कि यह शर्मा बीस वर्ष पूर्व का तो मेरा सहपाठी और मित्र है ही। पिछले बीस दिनों से रोज मैं इसकी दुकान के सामने से भी इसको नमन-नमस्ते करते हुए 2 बार गुजरता आ रहा हूं। पर यहां शर्मा का नाम नहीं लूंगा, दिवंगत का वैसे भी नाम नहीं लेना चाहिए। उसका लड़का बुरा मानेगा अलग से।

ऐसे ही उसी दौर का हमारा एक सहपाठी, गुप्ता जिसके पास अब 20 वर्ष बाद एक सीमेंट की एजेंसी थी, से जुड़ा कड़ुआ प्रसंग है। मैंने सारा सीमेंट इससे ही खरीदना तय किया था। काफी खरीदा भी। उस समय उस मार्के के सीमेंट की कीमत हम दोनों के बीच 52 रुपये कट्ठा तय हुई थी। उस समय सीमेंट की कीमतें एक-एक, दो-दो रुपये कट्ठा बढ़ा करतीं थीं। मैंने उससे तय किया था, कि यदि आगे सीमेंट की कीमत एक रुपया ही बढ़ती है, तब भी आपको 52 रुपये के ही रेट से सीमेंट देना पड़ेगा...। हां एक रुपये से अधिक कीमत बढ़ती है, तो हम भी बढ़ी हुई कीमत देंगे। कुछ दिनों बाद संयोग से सीमेंट की कीमत एक ही रुपया बढ़ी और गुप्ता तत्काल अपनी जुबान से पलट गया। अब इसका सीमेंट तो लेना ही नहीं था, तब से मेरी इससे बोल-चाल भी बंद है। शुरू-शुरू में यह मुझसे बोलने के लिए बहुत लपलपाया, पर मैंने इसे आजतक लिफ्ट नहीं दी। बोला तो आदमी से जाता है। अभी यह जिंदा है, पर उल्लेख इसके नाम का भी नहीं करूंगा, भले ही यह आदमी नहीं है।

मेरे कुछ चेले-चपाटे भी दुकानदार हैं। मेरे पास उनसे जुड़े भी इसी प्रकार के विभिन्न व विचित्र अनुभव हैं। कहां तक लिखूं? हालांकि एक-दो लपेटों-चपेटों पर पूर्व में कुछ लिख भी चुका हूं। फिर, इन बनिओं के लपेट-व्यवहार में एक मैं ही नहीं, आधी से अधिक दुनिया लिपटी हुई है। दुनिया को इन बनियों से रोज ही सौ से लेकर लाखों चीजें खरीदनी पड़ती हैं। अंत में कुंडली शिरोमणि, कविराय गिरधर की कुंडली मित्रों के मनोरंजन और मनोमंथन के लिए प्रस्तुत है ...।

बनिया अपने बाप को, ठगत न लावै बार।
निसिबासर जननी ठगे, जहां लियो अवतार।।
जहां लियो अवतार, मास दस उदरै राखै।
गुरु सन् करे विवाद, आप पंडित ह्वै भाखै।।
कह गिरधर कविराय, बेंच हरदी और धनिया।
मित्र जानि ठगिलेय, जहांलगि पावै बनिया।।

विशेष नोट-यहां बनिया या बनिये से आशय, वैश्य या वणिक जाति से न होकर, वाणिज्य, विपणन, बिक्री का काम करने वाले दुकानदारों से है।

उत्तरांचल दीप
पत्रिका

उत्तराखंड की तेजी से बढ़ती मैगजीन
चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने, नैनीताल रोड हल्द्वानी
देहरादून कार्यालय:-11 लिटन रोड देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता फार्म

प्रबंधक
उत्तरांचल दीप
हल्द्वानी (नैनीताल)

मान्यवर,
मैं उत्तरांचल दीप पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता लेना चाहता हूं। पत्रिका का वार्षिक शुल्क रुपये 450 नकद, बैंक ड्राफ्ट,चेक संख्या.......................................भेज रहा हूं। मुझे पत्रिका भिजवाने की व्यवस्था कराने का कष्ट करें। मेरा पता इस प्रकार है। चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट उत्तरांचल दीप के नाम से स्वीकार होगा।

सदस्य का नामः-

पिता अथवा पति का नामः-

डाक का पताः-

तहसीलः-

जिलाः-

मोबाइल नंबरः-

ई-मेलः-

यदि आपको लेखन में रुचि है तो आप लेख अथवा स्टोरी लिखकर उत्तरांचल दीप पत्रिका के संपादक को भेज सकते हैं। संपदकीय टीम द्वारा आपकी स्टोरी का चयन करने पर आपके लेख को उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। याद रखें कि स्टोरी अथवा लेख आपका मूल होना चाहिए। अच्छी स्टोरी व लेख को उत्तरांचल दीप पत्रिका द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

संपादक

पहाड़ों में स्टोन फ्रूट्स का भविष्य

सेब के लिए जहां बड़ी मात्रा में कीट व्याधि नाशक रसायनों का छिड़काव और उर्वरकों का इस्तेमाल करना जरूरी है, वहीं स्टोन फ्रूट्स के बागीचे में इनकी कम जरूरत रहती है, इस तरह इन फलों के उत्पादन की लागत सेब की तुलना में काफी कम हो जाती है और मुनाफा बढ़ जाता है।

उत्तराखंड राज्य का अधिकांश भाग भौगोलिक रूप से शीतोष्ण नहीं है, उत्तराखंड राज्य 28 से 31 डिग्री उत्तरीय अक्षांश पर है, जबकि हिमाचल प्रदेश 30 से 33 डिग्री उत्तरी अक्षांश पर है हिमाचल प्रदेश में जितनी ठंड 1500 मीटर की ऊंचाई पर पड़ती है उत्तराखंड में उतनी ही ठंड 2000 मीटर की ऊंचाई पर पड़ती है। अब जलवायु परिवर्तन एवं अन्य कारणों से पहाड़ियों में उतनी ठंड नहीं मिल पाती है जितनी सेब के वृक्षों के लिए आवश्यक है। उत्तराखंड सरकार द्वारा सेब के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है जिसके अंतर्गत राज्य में एप्पल मिशन योजना चलाई जा रही है। योजना में लगे अधिकतर बाग जो 2000 मीटर से कम की ऊंचाई पर तथा दक्षिण ढ़लान पर हैं उनमें कैंकर, रूट रोट, रूट वोरर, ऊली एफिड माइट आदि कीट व्याधियों के कारण नष्ट होने का खतरा अधिक होता हैं। कुछ स्थानों पर सेब के बाग अच्छे परिणाम भी दे रहे हैं। सेब उत्पादन के लिए राज्य के अधिक ऊंचाई वाले उत्तरी भाग जो 30 डिग्री उत्तरीय अक्षांश से ऊपर हैं तथा हिमाचल प्रदेश के समीप हैं। इनमें उत्तरकाशी व टिहरी जिले में थत्यूड़ जौनपुर क्षेत्र एवं देहरादून में चकराता व त्यूणी वाला क्षेत्र सेब उत्पादन के लिए अनुकूल है। इन क्षेत्रों में फल उत्पादक अच्छा सेब उत्पादन कर रहे हैं। नैनीताल जिले के रामगढ़ व अन्य क्षेत्रों में भी जहां सेब के लिए अनुकूल जलवायु है सेब के नए बाग विकसित हो रहे हैं। उत्तराखंड में सेब उत्पादन के लिए 2000 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्र जो हिमालय के नजदीक है तथा जहां आसपास जंगल हैं सबसे बेहतर होते हैं। क्योंकि यहां अनुकूल माइक्रोकल्यमेट मिलता है। ऐसे क्षेत्रों के ढाल का चयन उत्तर पश्चिम दिशा में करना चाहिए। दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम ढलान पर सेब का बाग लगाने से परहेज करना चाहिए। जहां पर पहले से ही सेब के बाग लगे हैं उन स्थानों पर नए सेब के बाग उगाने में सफलता कम ही मिलती है। ऐसे स्थानों पर सेब के स्थान पर अखरोट व नाशपाती के फल पौधों का रोपण कर सकते हैं। नए ग्रामीण सेब के बाग विशेषज्ञों व सफल फल उत्पादकों, जो सेब की बागवानी कर रहें हैं से विचार-विमर्श के बाद ही पौध लगाएं। क्योंकि बिना विशेषज्ञों की राय के लगाए गए बागों से नए फल उत्पादकों का धन व मेहनत बेकार जा सकती है। साथ ही बाद में पछताना भी पड़ सकता है।

डा.राजेंद्र कुकसाल
उद्यान विशेषज्ञ

स्टोन फ्रूट्स

उत्तराखंड पर्यटन व तीर्थाटन का अग्रणी राज्य है। तीर्थ यात्रियों व पर्यटकों को मई से जुलाई तक ताजे फल मिलें व स्थानीय रोजगार भी बढ़े साथ ही पलायन भी रुके, इसके लिए आवश्यक है कि हम स्टोन फ्रूट्स की तरफ कदम बढ़ाएं। स्टोन फ्रूट्स सेब से पहले यानी मई से जुलाई के बीच तैयार हो जाते हैं। सेब की तुलना में स्टोन फ्रूट्स के बागीचे की देखरेख करना भी आसान है। सेब के लिए जहां बड़ी मात्रा में कीट व्याधि नाशक रसायनों का छिड़काव और उर्वरकों का इस्तेमाल करना जरूरी है, वहीं स्टोन फ्रूट्स के बागीचे में इनकी कम जरूरत रहती है। इस तरह इन फलों के उत्पादन की लागत सेब की तुलना में काफी कम हो जाती है, यानी मुनाफा बढ़ जाता है। वैसे भी सेब के पुराने बगीचों में फिर से सेब की पौध का पनपना मुश्किल ही होता है। लिहाजा सेब के पुराने बगीचों में स्टोन फ्रूट्स के पौधों को रोपकर नए बाग विकसित किए जा सकते हैं। फल उत्पादकों को ध्यान देना चाहिए कि वो स्थान विशेष की ऊंचाई व पहाड़ी की ढाल व बाजार की मांग के अनुसार फल पौधों की किस्मों का चयन करें।

खुबानी में लोहा और तांबा प्रचुर मात्रा में होता है। यानी खुबानी हीमोग्लोबिन के निर्माण में मदद करती हैं, यानी एनीमिया के रोगियों के लिए यह बेहतर साहित हो सकती है, क्योंकि शरीर में लोहे की कमी को ही एनीमिया रोग नाम दिया गया है।

आड़ू की किस्में

घाटी वाले क्षेत्रों के लिए-शान-ए-पंजाब, सहारनपुर प्रभात फ्लोरिडासन प्रभात, सनरेड व सरवती किस्में काफी उपयुक्त रहती हैं। जिससे अप्रैल के अंतिम सप्ताह से मई-जून तक फल मिलते रहेंगे। मध्यम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में रेड जून, पैरा डीलेक्स एवं अषाढ़ी किस्मों के आड़ू का उत्पादन अच्छा होता है। रेड जून किस्म के फल मई के अंत तक बाजार में आ जाते हैं और इसकी मांग भी अधिक रहती है। पैरा डीलेक्स किस्म पिछेती किस्म है इसके फल आकार में रेड जून से बड़े होते हैं अषाढ़ी किस्म में भी अच्छा उत्पादन होता है। अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में अलेक्जेंडर, अर्ली एलबर्टा एवं जुलाई एलवर्टा किस्म अच्छा उत्पादन देती है। फल उत्पादक इस तरह आड़ू से बेहतर आय प्राप्त कर सकते हैं।

खुबानी की किस्में

मध्य ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए खुबानी की न्यूकेस्टल, कैशा, अर्ली सिप्ले आदि प्रमुख उन्नत किस्में है। अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए अर्ली सिप्ले, सफेदा, चारमग्ज, सकरपारा आदि प्रमुख किस्में उगाई जा सकती हैं। खुबानी की अगेती किस्मों में अर्ली सिप्ले, न्यूलार्जअर्ली, चारमग्ज, चौबटिया मधु, चौबटिया केसरी आदि किस्में प्रमुख है। पिछेती किस्मों में टर्की, मोरपार्क, कैशा, रॉयल, सेंट अम्ब्रोज आदि प्रजातियों को उगाया जा सकता है। रेड बुलेरो तथा रुबिल खुबानी की नई किस्में हैं। प्लम की किस्मों में ब्लैक अंम्बर, मेथले, ग्रीन गेज, फ्रायर हिरोमी रेड प्लम, क्रिमसन ग्लो, फोर्च्यून, औगेटो, गोल्डन प्लम, रेड ब्यूट, मैरीपोजा, स्तले पर्पल, ब्लैक स्पलिंडर, सैन्टा रोजा आदि प्रमुख प्रजातियां हैं। जिन्हें फल उत्पादक कम लागत में उगाकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

प्लम की प्रजातियां

प्लम की नई किस्में ब्लेक एंबर, फार्चून और फ्रायर जैसे किस्मों की शेल्फ लाइफ ज्यादा है, रेड ब्यूट प्लम की शेल्फ लाइफ करीब 5 दिन की रहती है, इतने समय में आसानी से इसको मार्केट तक पहुंचाया जा सकता है। ब्लैक एंबर प्लम की शेल्फ लाइफ 20 दिन से ज्यादा हैं, कोल्ड स्टोर में इन किस्मों के प्लम को लंबे समय तक रखा जा सकता है। ऐसे में दूर दराज के इलाकों से भी नई किस्म के प्लम को आसानी से मार्केट में पहुंचाया जा सकता है। ब्लैक अंबर से 15 दिन बाद फ्रायर किस्म का प्लम तैयार होता है। यह काले रंग का बड़ा प्लम होता है। यह किस्में तीन साल के बाद फलों के सैंपल देने लगती हैं। अलग-अलग प्लम की किस्मों का रोपण कर फल उत्पादक लगातार तीन से चार माह में समय-समय पर इनसे उपज ले सकते हैं। उद्यान विशेषज्ञ कुंदन सिंह पंवार द्वारा 20 जनवरी 2024 को मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में बजट पूर्व परामर्श कार्यक्रम में प्रतिभाग किया था। उन्होंने सरकार को सुझाव दिया था कि तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों को मई से जुलाई तक ताजे फल मिले व स्थानीय रोजगार भी बढ़े पलायन भी रुके तो आवश्यक है कि एप्पल मिशन की तर्ज पर आड़ू, प्लम, खुबानी बादाम मिशन भी उत्तराखंड में संचालित किया जाए जिससे फल उत्पादकों को कम लागत में अधिक पैदावार मिल सके।

मोटापा कम करता है प्लम

फल सेहत के लिए कितने फायदेमंद होते हैं ये तो सभी जानते हैं, लेकिन कुछ फल ऐसे हैं जिनका सेवन करने से शरीर को कई समस्याओं से बचाने में मदद मिल सकती है। प्लम यानी आलूबुखारा पौष्टिक गुणों से भरपूर फल है। प्लम गर्मियों में आने वाला मौसमी फल है। इसमें शरीर के लिए जरूरी पोषक तत्व जैसे मिनरल्स और विटामिन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। यह डायट्री फाइबर से भरपूर होता है, जिसमें सार्बिटॉल और आईसेटिन प्रमुख हैं। प्लम खाने से मोटापा कम किया जा सकता है। प्लम में कैलोरी की मात्रा बहुत कम पाई जाती है। अगर आपको वजन कम करना हैं तो अपनी डाइट में प्लम को शामिल करें। दिमाग को हेल्दी रखने और तनाव से बचने के लिए प्लम का नियमित सेवन किया जा सकता है। इसमें मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट्स त्वचा के साथ दिमाग को भी स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। इंटरनेट और मोबाइल के जमाने में आंखों से जुड़ी समस्याएं काफी देखने को मिल रही हैं। प्लम में चूंकि विटामिन-के और बी 6 प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। ये विटामिंस आंखों और त्वचा के लिए अच्छे माने जाते हैं। प्लम को डाइट में शामिल कर आंखों की रोशनी को बढ़ाया भी जा सकता है। प्लम में आयरन, पोटेशियम, विटामिन जैसे पौषक तत्व पाए जाते हैं जो इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मददगार होते हैं। मजबूत इम्यूनिटी शरीर को कई तरह की समस्याओं से बचाने में मददगार साबित हुई है यह कोरोना काल में देखने को मिला है।

जहां पर पहले से ही सेब के बाग लगे हों उन स्थानों पर नए सेब के बाग उगाने में सफलता कम मिलती है, ऐसे स्थानों पर सेब के स्थान पर अखरोट व नाशपाती के पौधों का रोपण करें, नए ग्रामीण सेब के बाग विशेषज्ञों व फल उत्पादकों से सलाह लेकर ही लगाएं।

खुबानी के फायदे

खुबानी के स्वास्थ्य लाभ में अपच, कब्ज, कान का दर्द, बुखार, त्वचा रोग, कैंसर और एनीमिया (रक्त में आयरन की कमी) के इलाज में बेहतरीन साबित होती है। खुबानी दिल की सेहत को बेहतर बनाने और तनाव वाली मांसपेशियों और घावों के इलाज में भी मदद करती है। यह त्वचा की देखभाल के लिए भी फायदेमंद है, यही कारण है कि इसे विभिन्न सौंदर्य प्रसाधनों में जोड़ा जाता है। इसके अलावा, खुबानी में पित्त-सांद्रव के स्तर को कम करने, दृष्टि की गिरावट को रोकने, वजन घटाने में सहायता, श्वासन की स्थिति का इलाज करने, हड्डियों की शक्ति बढ़ाने और शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने की क्षमता होती है। खुबानी में लोहा और तांबा प्रचुर मात्रा में होता है। यानी खुबानी हीमोग्लोबिन के निर्माण में मदद करती हैं। यानी एनीमिया के रोगियों के लिए यह बेहतर साहित हो सकती है, क्योंकि शरीर में लोहे की कमी को ही एनीमिया रोग नाम दिया गया है। एनीमिया के रोगी में कमजोरी, थकान, आलस्य, पाचन समस्याएं और सामान्य चयापचय संबंधी विकार होते हैं। खुबानी में मौजूद ये दोनों खनिज पदार्थ चयापचय को बढ़ावा देने और शरीर को ठीक से काम करने के लिए एक बेहतरीन फल साबित हो सकता है।

राज कपूर के अनसुने किस्से

पहली फिल्म 'आग' में राज कपूर ने ही नरगिस को साइन किया था, पहली मुलाकात में वे नरगिस को पसंद करने लगे थे, दूसरी हिट फिल्म 'बरसात' में भी उन्होंने नरगिस को हीरोइन चुना, इन फिल्मों में एक साथ काम करने के दौरान दोनों रिलेशनशिप में आ गए।

14 दिसंबर 2024 को महान अभिनेता, निर्देशक और निर्माता राज कपूर की जन्म शताब्दी मनाई गई है। उन्होंने 40 साल के अपने शानदार फिल्मी करियर के दौरान 'आवारा', 'बरसात', 'श्री 420', 'संगम' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी कई यादगार फिल्में बनाईं। वर्ष 1988 में उनका निधन हो गया था। राज कपूर बॉलीवुड की शान थे, लेकिन उनके जीवन में कई उतार चढ़ाव आए, पर उन्होंने हार नहीं मानी। एक दौर था जब राज कपूर की फिल्में नहीं चल रही थीं। फ्लॉप फिल्में परेशानी बन सकती हैं ये राज कपूर को पता था। किंतु उन्होंने पीछे हटने के बजाये एक कदम आगे बढ़कर 1948 में खुद का प्रोडक्शन हाउस 'आरके फिल्म्स' शुरू कर दिया। पहली फिल्म 'आग' बनानी शुरू की, खूब पैसे खर्च किए। इतने कि फिल्म पूरी होने तक यूनिट के चाय-नाश्ते के लिए नौकर से उधार लेने की नौबत आ गई। लेकिन इस फिल्म ने राज कपूर को नए डायरेक्टर के तौर पर स्थापित किया। इस फिल्म से हिंदी सिनेमा में राज कपूर और नरगिस की पॉपुलर जोड़ी भी बनी। ये अकेला किस्सा नहीं है। राज कपूर ने जब फिल्म 'आवारा' बनाई, तो उसे दुनिया भर में पहचान मिली। लेकिन 1970 में रिलीज हुई फिल्म 'मेरा नाम जोकर' ने उन्हें फिर सड़क पर ला दिया। लोगों के पैसे चुकाने के लिए उन्हें पत्नी के गहने गिरवी रखने पड़े। वे डिप्रेशन में चले गए। राज कपूर ने हार नहीं मानी, 1973 में उन्होंने फिल्म 'बॉबी' बनाई जो हिट रही और इंडस्ट्री में उनका कमबैक हो गया। 'बॉबी' से उन्होंने बॉलीवुड को ऋषि कपूर नाम का एक नया हीरो भी दिया। राज कपूर ने महज 24 वर्ष की उम्र में प्रोडक्शन हाउस 'आरके फिल्म्स' की शुरुआत करके उन्होंने फिल्मों को डायरेक्ट करना शुरू कर दिया और उन्हीं में एक्टिंग करने लगे। वे अपने दौर के सबसे यंग डायरेक्टर्स में से एक थे।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

नरगिस से रिलेशनशिप

अपनी पहली फिल्म 'आग' में राज कपूर ने ही नरगिस को साइन किया था। पहली मुलाकात में वे नरगिस को पसंद करने लगे थे। दूसरी हिट फिल्म 'बरसात' में भी उन्होंने नरगिस को हीरोइन चुना। इन फिल्मों में एक साथ काम करने के दौरान दोनों रिलेशनशिप में आ गए। नरगिस आरके प्रोडक्शन हाउस का अहम हिस्सा बन गईं। उन्होंने प्रोडक्शन हाउस की कई फिल्मों में खूब पैसा लगाया। राज कपूर ने खुद कहा था 'आरके के हर सेट में नरगिस की मेहनत और लगन छिपी हुई है।' नरगिस को भी एहसास हो गया था कि राज उनसे शादी नहीं कर पाएंगे, क्योंकि वो पहले से शादीशुदा थे और अपनी पहली पत्नी को नहीं छोड़ना चाहते थे। राज कपूर दूसरी शादी कर सकें, इसकी अनुमति के लिए नरगिस ने तत्कालीन गृह मंत्री मोरारजी देसाई से कॉन्ट्रैक्ट किया था। वे कानून बदलवाना चाहती थीं, लेकिन मोरारजी देसाई ने मना कर दिया। उसी वक्त नरगिस को फिल्म 'मदर इंडिया' का ऑफर मिला लिहाजा दोनों के खूबसूरत रिश्ते का अंत हो गया। 11 मार्च 1958 को नरगिस ने सुनील दत्त से शादी कर ली, लेकिन राज कपूर उन्हें भुला नहीं सके।

राज चाहते थे कि 'बॉबी' में प्राण साहब काम करें, लेकिन उनके पास फीस के पैसे नहीं थे, ये बात उन्होंने प्राण साहब को बताई तो प्राण ने कहा कि वे बिना पैसे के काम करने करेंगें, लेकिन राज कपूर ने कहा कि बिना फीस के वे किसी को फिल्म में कास्ट नहीं करेंगे।

जब कैंसर की वजह से नरगिस की मौत हुई, तो राज उनकी अंतिम यात्रा में शामिल भी हुए। वहां मौजूद लोगों का मानना था कि उन्होंने अपना दुख छिपाने के लिए काले चश्मे का सहारा लिया था। 1952 में राज कपूर ने फिल्म 'आवारा' बनाई जिसने दुनिया में हिंदी सिनेमा का नक्शा बदल दिया। कहते हैं कि कहानी जानने के बाद राज कपूर के पिता पृथ्वीराज कपूर इस फिल्म में काम करने के लिए राजी हो गए थे। हालांकि जब उन्हें पता चला कि इसका हीरो और डायरेक्टर उनका बेटा है तो उन्होंने अपने कदम पीछे खींच लिए। इस फिल्म में स्वतंत्रता के बाद देश में बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के बारे में बात की गई थी। लोगों ने इसे बहुत पसंद किया। इस फिल्म ने सोवियत संघ से जुड़े देशों में भारतीय फिल्मों के लिए रास्ता खोल दिया। तुर्की में इस फिल्म का 8 बार रीमेक बना। 2012 में जब टाइम मैगजीन ने दुनिया की 100 महान फिल्मों की फेहरिस्त बनाई तो उसमें एक नाम 'आवारा' का भी था। जब इस फिल्म का मॉस्को के बड़े हॉल में प्रीमियर हुआ, तब बड़ी तादाद में फैंस राज कपूर और नरगिस को देखने पहुंचे थे। लोगों ने राज कपूर से दो शब्द कहने के लिए गुजारिश की, तब उन्होंने रूसी भाषा में कहा 'कॉमरेड्स और दोस्तों, मैं आप लोगों से बहुत प्यार करता हूं और आप भी करते हैं, अलविदा।' रूसी जनता के इस प्यार के बदले और उनके सम्मान में राज कपूर ने फिल्म 'श्री 420' में एक गाना रखा जिसके बोल थे 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी।' 'आवारा' के बाद विदेशों में राज कपूर पॉपुलर हो गए। 1960 के आस-पास की बात है, जब वे 'मेरा नाम जोकर' बनाने की तैयारी कर रहे थे। इस फिल्म में वो रूसी सर्कस को रखना चाहते थे। इस सिलसिले में उन्हें लंदन से मॉस्को जाना था, लेकिन वहां का वीजा नहीं था। फिर भी उन्हें रूस जाने की परमिशन मिल गई थी। मॉस्को पहुंचकर वे एयरपोर्ट के बाहर टैक्सी का इंतजार करने लगे। तभी वहां मौजूद लोगों ने उन्हें पहचान लिया। उनकी टैक्सी आई और वे उसमें बैठ गए। अचानक उन्होंने देखा कि टैक्सी आगे नहीं बढ़ रही है बल्कि ऊपर की तरफ जा रही है। लोगों ने टैक्सी को अपने कंधों पर उठा लिया था।

प्राण की राज कपूर से नाराजगी

फिल्म 'मेरा नाम जोकर' की कहानी राज कपूर के पास बहुत पहले से थी। वे इस पर फिल्म बनाने से डर रहे थे। फिल्म बनाएं या नहीं, ये तय करने के लिए उन्होंने घर आने वाले लोगों को यह कहानी सुनानी शुरू कर दी और फीडबैक लेने लगे। ज्यादातर लोगों का रिस्पॉन्स पॉजिटिव रहा। 4 घंटे और 2 इंटरवल वाली इस फिल्म को बनाना आसान काम नहीं था। भव्यता को बरकरार रखने के लिए राज कपूर ने पूरी जमा-पूंजी लगा दी, लेकिन फिल्म फ्लॉप हो गई और कपूर परिवार सड़क पर आ गया। फिल्म 'मेरा नाम जोकर' फ्लॉप होने के बाद, जिन्होंने राज कपूर के साथ काम किया था वे अपने पैसे मांगने लगे। मजबूर होकर राज कपूर को आरके स्टूडियो, घर, बीवी के गहने गिरवी रखने पड़े। वे डिप्रेशन में भी चले गए। फिर उन्होंने फिल्म 'बॉबी' बनाई जो हिट रही और उनकी वापसी हुई। इस फिल्म में ऋषि कपूर को कास्ट करते हुए उन्होंने पूछा था-क्या तुम एक फ्लॉप फिल्म एक्टर और खूब काम लेने वाले डायरेक्टर के साथ काम करना चाहते हो? राज चाहते थे कि 'बॉबी' में प्राण साहब काम करें, लेकिन उनके पास फीस देने तक के पैसे नहीं थे। यह बात उन्होंने प्राण साहब को बताई तो प्राण साहब ने कहा कि वे बिना पैसे लिए इसमें काम करने के लिए तैयार हैं, लेकिन राज कपूर ने मना कर दिया। उनका कहना था कि बिना फीस के वे किसी को फिल्म में कास्ट नहीं करेंगे। तब उनकी मजबूरी समझ कर प्राण एक रुपया फीस लेकर इसमें काम करने के लिए राजी हो गए थे। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही। प्राण को एक लाख रुपये का चेक दिया गया। उन्हें ये बात बिल्कुल पसंद नहीं आई, उन्हें लगा कि वह इससे ज्यादा फीस डिजर्व करते थे और उनके साथ ठगी हुई है। इस घटना के बाद उन्होंने ताउम्र राज कपूर के साथ काम नहीं करने का फैसला किया।

हर क्रू मेंबर को बहुत तवज्जो देते थे

राज कपूर लोगों के किरदार और उनके विचार से बहुत प्रभावित होते थे। उन्होंने कई फिल्में इसी तरह बनाईं। जैसे कि एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू और राज कपूर की मुलाकात हुई। नेहरू ने चिंता जाहिर कि बच्चों के लिए कोई फिल्म नहीं बनती है। अगर ऐसी फिल्म बनेगी तो वे कुछ समय शूटिंग सेट पर मौजूद रहेंगे। इसके बाद ही राज कपूर ने फिल्म 'अब दिल्ली दूर नहीं' बनाई। इसी तरह उन्होंने लता मंगेशकर से प्रभावित होकर कल्ट क्लासिक फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' बनाई थी। वे चाहते थे कि लताजी की सुंदर आवाज को थीम बनाकर एक फिल्म बनाई जाए। फिल्म में राज ने मेन कैरेक्टर में एक ऐसी लड़की को रखा जिसकी आवाज तो खूबसूरत थी, लेकिन सूरत अच्छी नहीं थी। ये लड़की एक खूबसूरत लड़के को जाल में फंसाती है। 'सत्यम शिवम सुंदरम' फिल्म की यही कहानी है। राज कपूर की एक खासियत थी, जो उन्हें बाकी फिल्ममेकर से अलग बनाती थी। वे सेट पर मौजूद हर क्रू मेंबर को बहुत तवज्जो देते थे। हर शख्स का नाम उन्हें याद रहता था। एक बार वे फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' की शूटिंग कर रहे थे। तभी वहां मौजूद स्पॉटबॉय लक्ष्मण ने कहा, 'इस शॉट को क्रेन की मदद से कैप्चर करना चाहिए।' यह बात उसने दबी आवाज में कही थी, लेकिन राज कपूर ने यह सुन लिया। लक्ष्मण का सुझाव उन्हें पसंद आया और उस शॉट को उन्होंने क्रेन की मदद से शूट किया। इतना ही नहीं, वे सेट पर हमेशा सभी क्रू मेंबर्स के साथ बैठकर खाना खाते थे। उनके लिए अलग से कोई स्पेशल खाना नहीं बनता था। फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' में राज कपूर के सबसे छोटे बेटे राजीव लीड रोल में थे। इस फिल्म से उन्होंने मंदाकिनी को लॉन्च किया था। 1985 की यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपर हिट रही थी।

लताजी की सुंदर आवाज को थीम बनाकर राज ने 'सत्यम शिवम सुंदरम' फिल्म बनाई, फिल्म में मेन कैरेक्टर में एक ऐसी लड़की को रखा जिसकी आवाज तो सुरीली थी, लेकिन सूरत अच्छी नहीं थी, ये लड़की एक खूबसूरत लड़के को जाल में फंसाती है, फिल्म की यही कहानी भी है।

राज कपूर को खाने का बहुत शौक था। बढ़ती उम्र के साथ उनका वजन भी बढ़ गया था। 1980 के आस-पास की बात है, जब चीन के साथ भारत के रिश्ते अच्छे नहीं थे, लेकिन फिर भी चीन ने भारत से अनुरोध किया कि वे राज कपूर को मेहमान के तौर पर उनके देश भेजें। इस मुद्दे पर जब विदेश मंत्रालय ने राज कपूर से बात की, तो वे खुशी से झूम उठे, क्योंकि उन्हें चाइनीज खाना बहुत पसंद था। उन्होंने यह बात पत्नी कृष्णा को बताई कि उन्हें भी साथ चलना है। हालांकि, कुछ दिन बाद वे थोड़े उदास हो गए। जब पत्नी ने उनसे उदासी की वजह पूछी तो उन्होंने कहा, 'मैं अब चीन नहीं जाना चाहता। वहां के लोगों ने 50 के दशक के राज कपूर को देखा होगा जो यंग और सुंदर लड़का था। अभी मैं बूढ़ा हो गया हूं, वजन भी बढ़ गया है। मैं अपना यह रूप दिखाकर वहां के लोगों का दिल नहीं तोड़ना चाहता हूं।' यही वजह रही कि वे कभी चीन नहीं गए।

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष:-

इस माह परिवार में मंगल कार्य का आयोजन होगा, बुद्धि में नवीनता का उदय होगा। कठोर परिश्रम से सफलता मिलेगी, लाभदायी अवसर की प्राप्ति होगी, नौकरी में नए पदाधिकार का लाभ होगा, बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता होगी। रिश्तेदारों का आवागमन होगा, भूमि भवन का योग बनेगा। जीवन साथी से अनबन हो सकती है। यात्रा के योग बन रहे हैं, जिससे खर्च बढ़ेगा। यात्रा में सामान की सुरक्षा करे और सावधानी बरतें। उपाय: हर रोज गाय को हरा चारा खिलाएं कार्य सिद्ध होंगे।

वृषभ:-

इस माह मानसिक चिंता दूर होगी, कोर्ट से संबंधित विवादों का निस्तारण होगा। रुका धन प्राप्त होने का योग है। स्वभाव में विनम्रता लाना अनिवार्य है, व्यापारिक स्थिति संतोषजनक रहेगी, प्रबल विरोधियों का शमन होगा, आलस्य, लापरवाही का त्याग करें। लोकापवाद की विशेष आशंका है, बहुमूल्य पदार्थों की खरीद बिक्री न करें नुकसान होगा। नौकरी में नए पदाधिकार का लाभ होगा, बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता होगी। उपाय: शनि मंदिर में तेल की दीप जलाएं कार्यसिद्ध होंगे।

मिथुन:-

इस माह मान सम्मान की प्राप्ति, रोग मुक्त होंगे, इस राशि के जातकों पर लक्ष्मी जी की विशेष कृपा होगी, शत्रु पराजित होगा, साझेदारी टूटने का योग बन रहा है, पित्तजनित पीड़ा हो सकती है, किसी पुराने साथी का वियोग होगा, चोर व अग्निभय हो सकता है, मादक द्रव्यों के सेवन से स्वास्थ्य खराब होगा, बकाये धन की प्राप्ति होगी। व्यापारिक स्थिति उत्तम रहेगी, निवेश करने के लिए यह माह अनुकूल है किंतु सावधानी जरूरी है। उपाय: दुर्गा सप्तसती का नियमित पाठ करें कार्यसिद्ध होंगे।

कर्क:-

इस माह भाग्योदय का मार्ग प्रशस्त होगा, महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे, पुराने मित्रों से मदद मिलेगी, न्यायालय संबंधी विवादों का निस्तारण होने से मन प्रसन्न रहेगा। ऋण लेने की सोच रहे हैं तो सफलता मिलेगी। धन के लेन-देन में सावधानी बरतें। सर्वत्र मान-सम्मान में वृद्धि होगी, उदर विकार की संभावना है, पड़ोसियों से अनबन हो सकती है, व्यापारिक स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी पेशा लोगों के लिए स्थान परिवर्तन का योग है। उपाय: मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें। कार्यसिद्ध होंगे।

सिंह:-

इस माह सामाजिक कार्यों में बाधा आएगी, लेकिन इन्हें मित्रों के सहयोग से दूर कर लेंगे। आय से ज्यादा व्यय होगा, परिवार के सदस्य की बीमारी पर खर्च होगा। जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है, इसलिए वादविवाद से बचने की कोशिश करें। शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा, संकट का समाधान होगा, यात्रा से लाभ मिलेगा। वाहन आदि चलाते समय सावधानी बरतें चोट लग सकती है। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। उपाय: शनिवार को शनिचालीसा का पाठ करें कार्यसिद्ध होंगे।

कन्या:-

इस माह कार्य क्षेत्र में आपके कुशल व्यवहार से लाभ होगा, माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता सताएगी। इस माह आय से अधिक व्यय रहेगा, नौकरी पेशा वर्ग के लिए पदोन्नति के योग हैं। मनवाच्छित मनोकामना पूर्ण होगी, जीवनसाथी की सहमति से विशेष लाभ होगा, उदर विकार व नेत्र विकार से शरीर को कष्ट हो सकता है। शत्रुओं से सामना करना पड़ सकता है। संकटों का समाधान होगा, किसी रिश्तेदार के आने से मन प्रसन्न होगा। उपाय: शिव मंदिर में जलाभिषेक करें, कार्यसिद्ध होंगे।

तुला:-

इस माह कारोबार में तरक्की के अवसर मिलेंगे। दोस्तों और ससुराल पक्ष के साथ रिश्ते प्रगाढ़ होंगे। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा, भाइयों से मेल मिलाप होगा, शत्रुओं का नाश होगा, जीवनसाथी के सुख में वृद्धि होगी, रक्त विकार व नेत्र रोग से शरीर को कष्ट होगा, यात्रा से लाभ होगा। मान सम्मान में वृद्धि होगी। यह माह कारोबार में निवेश के लिहाज से अनुकूल है। पिता के स्वास्थ्य के प्रति चिंता बनी रह सकती है। उपाय: गुरुवार को गौशाला में हरे चारे का दान करें, कार्यसिद्ध होंगे।

वृश्चिक:-

इस माह कारोबार में उन्नति का योग है, सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ मिलेगा, निवेश करने के लिए अनुकूल समय है। लेकिन फिजूल खर्च से बचने की कोशिश करें। धार्मिक यात्रा का प्लान बनाएंगे। सामाजिक मान सम्मान में वृद्धि होगी। घर में किसी नए मेहमान के आने से मन प्रसन्न रहेगा। स्त्री एवं संतान का सुख उत्तम रहेगा। शत्रु आपके खिलाफ कोई साजिश रच सकते हैं इसलिए विरोधियों से सावधान रहने की जरूरत है। उपाय: सोमवार को शिवालय में अभिषेक करें, कार्य सिद्ध होंगे।

धनु:-

इस मास व्यापारिक अवरोध दूर होंगे, रचनात्मक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, आर्थिक संतुलन पूर्ववत बना रहेगा, पड़ोसियों से वाद विवाद का भय है, शत्रु आपके स्वाभिमान को आघात पहुंचाने की कोशिश करेंगे। शारीरिक दुर्बलता दूर होगी, अपयश और कलंक से मुक्ति मिलेगी। संकटों का समाधान होगा, किसी रिश्तेदार के आने से मन प्रसन्न होगा। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। सगे संबंधियों का सहयोग मिलेगा। उपाय: शुक्रवार को मां काली के मंदिर में प्रसाद चढ़ाए, कार्यसिद्ध होंगे।

मकर:-

इस माह घर परिवार में किसी आनंद उत्सव का सुख प्राप्त होगा, चिरवांछित कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वजनों से चला आ रहा क्लेश दूर होगा, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, द्रव्य लाभ होगा, इष्ट मित्रों से मुलाकात हो सकती है, आरोग्य एवं आनंद की प्राप्ति होगी। शत्रुओं की तरफ से हानि की संभावना है। जीवनसाथी के सहयोग से धार्मिक आयोजन करेंगे। छात्र वर्ग को परीक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने का संयोग बन रहा है। उपाय: रविवार को दुर्गा सप्तसती का पाठ करें, कार्यसिद्ध होंगे।

कुंभ:-

इस माह मित्र बंधुओं से सहयोग से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापार की स्थिति में सुधार होगा, धर्म कर्म में रूचि बढ़ेगी, अथिति सत्कार, मनोरंजन और पार्टी आदि पर खर्च बढ़ेगा, अग्नि और चर भय बनेगा, यात्रा इस महीने में न करें। जीवनसाथी के साथ तालमेल बनाने की कोशिश करें। सगे संबंधियों का सहयोग मिलेगा।वाहन चलाते समय सावधानी बरतना आवश्यक है, दुर्घटना का खतरा है। उपाय: मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें, कार्यसिद्ध होंगे।

मीन:-

इस माह में कारोबार में वृद्धि होगी, आय बढ़ने के साथ खर्च भी बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, धन लाभ के साथ खर्च भी अधिक बना रहेगा, शत्रुओं की तरफ से हानि की सम्भावना है। शारीरिक दुर्बलता दूर होगी, आरोग्य एवं आनंद की प्राप्ति होगी। अपयश और कलंक से मुक्ति मिलेगी। संकटों का समाधान होगा, किसी रिश्तेदार के आने से मन प्रसन्न होगा। नौकरीपेशा वर्ग के लिए स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। उपाय: इस माह घर में सुंदरकांड का पाठ करें, कार्यसिद्ध होंगे।